जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 49 संख्याः 328 प्रभात कोटा, मंगलवार 10 सितम्बर, 2024 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

टाटा ने एयर इंडिया का घाटा 60 प्रतिशत कम किया

टाटा सन्स की 2023-24 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, एयर इंडिया के सालाना टर्न ओवर में 23.69 प्रतिशत की वृद्धि हुई है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। टाटा सन्स की 2023-24 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार एयर इण्डिया ने अपना घाटा 60 प्रतिशत कम कर लिया है। वित्तीय वर्ष 23 में यह घाटा 11,387.96 करोड़ था जो वित्तीय वर्ष 24 में घटकर 4,444.10 करोड़ रह गया है। एयरलाइन का टर्न ओवर पिछले वर्ष के, 31,377 करोड़ के टर्न ओवर की तुलना में 23.69 प्रतिशत बढ़कर 38,812 करोड़ हो गया।

रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि टाटा सन्स, एयर एशिया इण्डिया (ए.आई. एक्स.) के एयर इण्डिया एक्सप्रेस में विलय के माध्यम से अपने एविएशन ऑपरेशन्स का विस्तार कर रहा है। इसके साथ ही विस्तारा की एयर इण्डिया के साथ विलय की प्रक्रिया भी जारी है।

इसके अतिरिक्त, एयर इण्डिया ने 51,365 रूपए का अपना अब तक का सबसे अधिक कन्सॉलिडेटेड एनुअल ऑपरेटिंग रैवेन्यु (समेकित वार्षिक परिचालन राजस्व) दर्ज किया है, जो वित्त वर्ष 23 की तुलना में 24.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। यह वृद्धि 1,059 मिलियन उपलब्ध सीट किलोमीटर की क्षमता में हुई 21 प्रतिशत की वृद्धि से प्रेरित है।

- वर्ष 2022 में टाटा ग्रुप ने भारी घाटे के कारण बंद होने के कगार पर पहुंच चुकी एयर इंडिया को खरीदा था तब से एयर इंडिया की डिमांड निरंतर बढ़ रही है। वित्तीय वर्ष 2023 में एयर इंडिया का घाटा 11,387.96 करोड़ रूपए था जो इस वर्ष घट कर 4,444.10 करोड़ रूपए रह गया है।
- ज्ञातव्य है कि एयर इंडिया की स्थापना 1932 में जहांगीर रतन टाटा ने की थी, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह सार्वजनिक लिमिटेड कम्पनी बन गई और इसका नाम एयर इंडिया कर दिया गया था।
- पर निजी विमान कम्पनियों के आने के बाद प्रतिस्पर्धा में एयर इंडिया पिछड़ गई और भारी घाटे में आ गई, फिर टाटा ने अपनी इस कम्पनी को पुनः अपने अधिकार में ले लिया।
- टाटा समूह ने एयर इंडिया के विस्तार की योजना बनाई है। टाटा एयर इंडिया एशिया और एयर इंडिया एक्सप्रैस के विलय की तैयारी में है, साथ ही विस्तारा के एयर इंडिया के विलय की भी प्रक्रिया जारी है।

पत्नी की हत्या के अभियुक्त पति को आजीवन कारावास

जयपुर, 9 सितंबर। अतिरिक्त सत्र न्यायालय 1 महानगर द्वितीय ने चरित्र पर शक के चलते अपनी पत्नी की हत्या करने वाले अभियुक्त पति रतन हामरम को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर सात हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है।

अभियोजन पक्ष की ओर से अपर लोक अभियोजक साजिया खान ने अदालत को बताया कि इस संबंध में मुशरफ हुसैन ने भांकरोटा थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि वह गोकुल वाटिका, वैशाली एस्टेट में लिपाई के काम का सुपरवाइजर है। साइट पर परिवार सहित रहकर काम करने वाला मजदूर रतन 28 अप्रैल, 2021 को उसके पास आया और पत्नी सोनिया के बेहोश होने की बात कही। जब वह कुछ मजदूरों के साथ रतन के कमरे में गया तो वहां फर्श पर सोनिया पड़ी थी। जब उन्होंने कंबल हटाकर देखा तो सोनिया के सिर से खून निकल रहा था और उसकी मौत हो चुकी थी। मुशरफ हुसैन की रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने उसके पति रतन को गिरफ्तार कर अदालत में आरोप पत्र पेश किया। सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से बताया गया कि रतन अपनी पत्नी सोनिया के चरित्र पर शक

- पति अपनी पत्नी के चरित्र पर शक करता था और दोनों में आये दिन झगड़ा होता था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'डॉक्टर हड़ताल की मन:स्थिति छोड़कर दुर्गा पूजा के उत्सव में शामिल हों'

ममता बनर्जी की इस अपील ने जले पर नमक छिड़कने का काम किया

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने, जख्मों पर नमक छिड़कने का काम करते हुए, राज्य की जनता से कहा कि वह महिला पोस्ट-ग्रेजुएट डॉक्टर के रेप एवं मर्डर को लेकर चल रहे जन-आंदोलन को खत्म करे तथा "उत्सव मनाने" की मन:स्थिति में लौट आए।

एक शिक्षक ने इस पर कहा कि मुख्यमंत्री इतनी अधिक अलग-थलग तथा अकेली पड़ गई हैं कि वे प्रलाप की स्थिति में पहुँच गई हैं। पोस्ट-ग्रेजुएट मेडिकल छात्रा की हत्या को लेकर आन्दोलन दिन-पर-दिन फैल रहा है तथा निन्दा एवं दोषारोपण और तेज होते जा रहे हैं।

तृणमूल कांग्रेस के अन्दर के कुछ लोग भी विरोध कर रहे हैं। पूर्व आई.ए.एस. तथा इस समय तृणमूल के राज्यसभा सांसद जवाहर सरकार खुले में सामने आ गए हैं तथा उन्होंने पार्टी से इस्तीफा देने का अपना इरादा जता दिया है। इस जूनियर डॉक्टर की मृत्यु को लेकर लोगों की व्यापक शोक-संवेदना के संदर्भ में, ममता के शब्द बड़े अशिष्ट और अभद्र प्रतीत हो रहे हैं। ममता की अपील के जवाब में डॉक्टर कह रहे हैं कि इस साल कोई उत्सव नहीं मनाया जायेगा।

बनर्जी की अपील के ठीक विपरीत, लोगों ने उनकी सलाह को मानने से इनकार कर दिया है तथा उन्होंने मृत छात्रा के प्रति न्याय की माँग तेज कर दी है। बंगाल के सबसे बड़े धार्मिक उत्सव एवं समारोह "दुर्गा पूजा" से पहले, लोग इस साल उक्त पूजा से दूर रहने तथा उस अभागी लड़की की मृत्यु का शोक मनाने की चर्चाएं कर रहे हैं।

पूरे राज्य में स्थानीय नेतृत्व को बदलने की माँगें उठ रही हैं। बड़ी संख्या में लोग सर्वोच्च न्यायालय के उन आदेशों की निन्दा कर रहे हैं, जिनमें जूनियर डॉक्टरों के अधिकार सीमित कर दिए गए हैं।

मृत लड़की की माँ ने शिकायत की है कि ममता बनर्जी इस भयंकर एवं दारुण घटना की पूरी तरह उपेक्षा कर रही हैं। उन्होंने पहले कहा था कि लाश की जानकारी मिल जाने के तुरन्त बाद, उनके परिवार को पैसा देने का प्रस्ताव दिया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तृणमूल कांग्रेस के सांसद व पूर्व आई.ए.एस. अफसर जवाहर सिरकार ने पार्टी से इस्तीफा देने की घोषणा की।
- आंदोलित जूनियर डॉक्टरों ने इस बार दुर्गा पूजा नहीं मनाने का निर्णय लिया।
- बंगाल सिनेमा आर्टिस्ट, एक्टरों ने बंगाल सरकार द्वारा प्रदत्त पुरुस्कार लौटाने का सिलसिला शुरू किया।
- सरकार ने अपनी ओर से प्रचारित किया कि डॉक्टरों की हड़ताल से 23 मरीजों की मौत हुई है। डॉक्टरों ने इसे मनगढ़ंत व झूठा आंकड़ा बताया।

देश के सबसे पुराने "क्लब" पर ताले लगाये सरकार ने

मद्रास रेस क्लब, को 1777 में अंग्रेजों ने स्थापित किया था

-लक्ष्मण वेंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितंबर। देश के सबसे पुराने हॉर्स रेसिंग क्लब्ज में से एक, मद्रास रेस क्लब को तमिलनाडू सरकार ने सोमवार को सील कर दिया। सन् 1777 में अंग्रेज़ों के द्वारा चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) के गिंडी में स्थापित इस क्लब ने 730 करोड़ रूपए के बकाया किराए का भुगतान नहीं किया है।

सोमवार को सुबह कलैक्टर के निर्देश पर राजस्व अधिकारी, भारी पुलिस दल के साथ क्लब परिसर में पहुंचे, इस भूमि का कब्जा लेने के लिए।

मद्रास रेस क्लब के अधिकारियों और वकीलों ने जोर देकर कहा कि सरकार इस "गैर प्रजातंत्रीय तरीके" से क्लब की संपत्ति को नहीं ले सकती, विशेष रूप से जबकि, बकाया किराए को लेकर अदालत में एक रिट याचिका लंबित है तथा इस मामले में यथास्थिति का आदेश लागू है।

राजस्व विभाग ने 6 सितंबर को क्लब की लीज़ को समाप्त करने का एक आदेश जारी किया था तथा चेन्नई कलेक्टर को तुरंत क्लब की जमीन का कब्जा लेने का आदेश दिया था।

मद्रास रेस क्लब (एम.आर.सी.) का कहना है कि अधिकारी अचानक संपत्ति पर कब्जा नहीं कर सकते, जहाँ कई घोड़े रहते हैं और जिन्हें नियमित रूप से भोजन देना होता है।

सोमवार को तमिलनाडू सरकार ने गिंडी, चेन्नई, में 148 एकड़ भूमि की मद्रास रेस क्लब की लीज़ को समाप्त कर दिया और भूमि का कब्जा ले लिया।

सन् 1946 में यह भूमि मद्रास रेस क्लब को, घुड़दौड़, खेलकूद तथा मनोरंजन की अन्य गतिविधियों के लिए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- मद्रास रेस क्लब को तमिलनाडू सरकार ने, 148 एकड़ जमीन लीज़ पर दी थी, रेस कोर्स स्थापित करने के लिये, पर, अब कालान्तर में मद्रास रेस क्लब ने लीज़ मनी के वार्षिक किराये के तहत 730 करोड़ रूपए जमा नहीं कराए।
- कई नोटिस देने के बाद अब तमिलनाडू सरकार के राजस्व विभाग ने "लीज़" कैन्सिल करने का आदेश पारित कर दिया।
- रेस क्लब ग्राउण्ड्स में लगभग 500 घोड़े बंधे हुए हैं, जिनके खाने-पीने की कोई व्यवस्था नहीं है।

मेयर मुनेश गुर्जर का चालान दो सप्ताह में पेश होगा

जयपुर, 9 सितंबर। राजस्थान हाईकोर्ट में सोमवार को राज्य सरकार ने हैरिटेज नगर निगम की मेयर मुनेश गुर्जर के खिलाफ भ्रष्टाचार से जुड़े मामले में अभियोजन स्वीकृति जारी करने की जानकारी पेश की। वहीं अदालत ने राज्य सरकार को मौखिक रूप से चालान पेश करने के लिए मामले की सुनवाई दो सप्ताह के लिए टाल दी है। जस्टिस नरेन्द्र सिंह की एकलपीठ ने यह आदेश सुधांशु सिंह की आपराधिक याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान अदालती आदेश की पालना में स्वायत्त शासन विभाग के निदेशक वीडियो कॉन्फ्रैंसिंग के जरिए अदालत में पेश हुए। इस दौरान राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता जी.एस. गिल ने अदालत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- राज्य सरकार द्वारा मेयर के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति की जानकारी मिलने पर हाई कोर्ट ने मौखिक रूप से चालान पेश करने को कहा।

हरियाणा में कांग्रेस और आप की चुनावी तालमेल वार्ता विफल

आप ने सभी 90 सीटों पर चुनाव लड़ने की घोषणा की

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। अगले माह होने वाले हरियाणा विधानसभा चुनावों के लिए कांग्रेस-आप गठबन्धन होने की संभावना लगभग समाप्त हो गई है क्योंकि आप की राज्य इकाई के अध्यक्ष सुशील गुप्ता ने, अपनी पार्टी की महत्वाकांक्षाओं को बयान करते हुए कहा कि उनकी पार्टी अपने दम पर 90 सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

इससे कुछ मिनट पहले ही, आप ने अपनी पार्टी के 20 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर दी थी, जिनमें 11 नाम उन सीटों के लिए भी थे, जिनके लिए कांग्रेस उम्मीदवारों के नामों की घोषणा कर चुकी है। गुप्ता ने कहा, "दूसरी सूची "जल्दी ही जारी" कर दी जाएगी।

उन्होंने मीडिया को बताया, "आप ने निर्णय ले लिया है, हमने आगे बढ़कर 20 सीटों के लिए उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है तथा अगली सूची भी जल्दी आ रही है। हम सभी 90 सीटों पर नतीजों को लेकर आश्वस्त हैं।"

गुप्ता ने पत्रकारों से कहा, "हमने (गठबंधन के लिए) प्रतीक्षा की क्योंकि कांग्रेस संगठन प्रत्येक सीट पर मजबूत है तथा वह मजबूत संगठन चाहता था कि हम चुनाव लड़ें। हमने धैर्य रखा लेकिन उसके बाद हमने अपनी सूची जारी कर दी। हम केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही इंडिया गठबंधन के पार्टनर थे।"

आप पिछने सप्ताह तक "प्रतीक्षा करो और देखो" की स्थिति में किन्तु फिर कांग्रेस के साथ वार्ता में गतिरोध आ गया।

दोनों पार्टियाँ पुन: गठबंधन बनाने के लिए "सिद्धान्तत:" सहमत हो चुकी थीं, जिसने लोकसभा चुनावों में भाजपा को हरियाणा की सभी 10 लोकसभा सीटें जीतने से रोक दिया था।

लेकिन सीट-शेयरिंग करना मुश्किल साबित हुआ; आप 10 सीटें चाहती थी लेकिन कांग्रेस सात सीटों के लिये ही सहमत थी। कांग्रेस ने कहा दिया था कि आप लोकसभा चुनाव में उसे दी गई कुरुक्षेत्र सीट हार गई थी। शेष 9 सीटों पर कांग्रेस लड़ी थी, जिनमें से उसने 5 सीटें जीती थीं।

सूत्रों का कहना है कि इस चुनाव के लिए, आम आदमी पार्टी कांग्रेस नेता तथा पूर्व मुख्यमंत्री भुपिन्दर सिंह के गृह-क्षेत्र की उन सीटों को चाह रही थी, जिन्हें हुड्डा अपने वफादारों को देना चाह रहे थे।

हुड्डा ने पिछले महीने मीडिया से कहा था कि आम चुनाव के बाद, आप नेताओं से उनकी कोई बातचीत नहीं हुई है तथा राज्य में गठबन्धन का होना मुश्किल नहीं है तथा यहाँ "लड़ाई भाजपा और कांग्रेस के बीच है।"

उसके बाद आप नेता राघव चड्ढ़ा ने दोनों पार्टियों से "गठबन्धन के लिए इच्छा एवं आशा" की बात कही थी, लेकिन उन्होंने चेताया भी था कि "अगर बराबरी की स्थिति नहीं है" तो हो सकता है कि समझौता न हो पाए।

सूत्रों ने कहा कि सम्भावित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- आम आदमी पार्टी ने 20 प्रत्याशियों की लिस्ट जारी कर चुनावी तालमेल की वार्ता टूटने की पुष्टि कर दी। इस लिस्ट में उन सीटों पर भी प्रत्याशी घोषित किए गए हैं, जहां कांग्रेस अपने प्रत्याशी घोषित कर चुकी थी।
- दोनों पार्टियों के बीच सीटों के बंटवारे पर बात नहीं बन पाई, आम आदमी पार्टी 90 सीटों में से 10 सीटें मांग रही थी और कांग्रेस सिर्फ 7 देना चाहती थी।
- आप ने स्पष्ट कर दिया कि कांग्रेस के साथ गठबंधन सिर्फ राष्ट्रीय स्तर पर ही था।

कैंसर की दवाओं पर जी.एस.टी. अब 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत किया

नयी दिल्ली, 9 सितंबर (वार्ता) गुड्स एण्ड सर्विसेज़ (जी.एस.टी) परिषद ने कैंसर की दवाओं पर जीएसटी दरों को 12 प्रतिशत से कम कर पांच प्रतिशत करने के साथ ही कई अन्य उत्पादों और सेवाओं पर भी जीएसटी दरों को पुनरीक्षित करने का निर्णय लिया है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में सोमवार को यहां हुयी परिषद की 54वीं बैठक में ये निर्णय लिये गये।

बैठक के बाद श्रीमती सीतारमण ने संवाददाताओं से कहा कि कैंसर की दवाओं पर जीएसटी दरों को भी कम किया जा रहा है। कैंसर के इलाज की लागत को और कम करने के लिए इसे 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत किया जा रहा है।

जीएसटी परिषद ने कैंसर की दवाओं ट्रैस्टुजुमैब डेरक्सटेकन, ओसिमर्टिनिब और डुरवालुमैब पर जीएसटी दरों को 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करने की सिफारिश की है।

'लोकसभा चुनाव के बाद, अब भारत में कोई भी भाजपा से नहीं डरता'

तीन दिन की अमेरिका यात्रा पर गये राहुल गांधी ने डैलस में युनिवर्सिटी के विद्यार्थियों व भारतीय मूल के अमेरिकावासियों से यह बात कही

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर भारत का एक ही संस्करण थोपने के लिए निशाना साधते हुए अमेरिका में कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद से सिस्टम और लोगों में से भाजपा की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार का डर चला गया है।

डलास में भारतीय मूल के लोगों को संबोधित करते हुए राहुल ने कहा कि इसके अलावा एक बात जो ज्यादा खूबसूरत है वो यह कि लोगों के भीतर से कितनी जल्दी डर चला गया। "चुनाव नतीजे आने के मिनटो में ही भाजपा और प्रधानमंत्री का डर भी काफुर हो गया।

राहुल ने कहा कि यह भारत की जनता की महान उपलब्धि है। जनता ने लोकतंत्र व संविधान पर हमले को सिरे से खारिज कर दिया।

उन्होंने आर.एस.एस. पर आरोप लगाते हुए कहा कि, आर.एस.एस. सोचती है कि भारत एक ही विचार है और हम मानते हैं कि भारत कई विचारों का संगम है, जैसे अमेरिका है। हमे लगता है कि हरेक को सपने देखने की आज़ादी मिलनी चाहिए भले ही वो किसी भी जाति, धर्म या भाषा का हो।

राहुल ने कहा कि मैने यहां जो भी कहा वो एक- एक शब्द संविधान में निहित है। आधुनिक भारत की नींव इसी दस्तावेज में है।

गांधी इस समय तीन दिन की यात्रा पर अमेरिका में हैं। टैक्सस में उनका स्वागत इंडियन ओवरसीज़ कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा व

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- राहुल गांधी ने आर.एस.एस. के बारे में यह भी कहा कि संघ की एक परिकल्पना है, भारत के बारे में और वे मानते हैं कि वह परिकल्पना ही पूरे देश पर लागू होती है, पर, हम लोग मानते हैं कि इतने बड़े भारत में कई "कल्चर" पनपते हैं और हर "कल्चर" की अलग-अलग परिकल्पना है भारत के बारे में
- हम लोग मानते हैं कि सभी परिकल्पनाओं को पनपने का, फलने-फूलने का पूरा मौका मिलना चाहिये और यह भी संघ और हमारे बीच सोच की लड़ाई है।
- राहुल ने यह भी कहा कि अमेरिका में, पश्चिमी देशों में व भारत में बेरोज़गारी महान समस्या है, पर, विश्व में कई देश हैं, जहाँ बेरोज़गारी की कोई समस्या नहीं है, जैसे चीन, जापान व ताईवान।
- भाजपा ने राहुल की इन टिप्पणियों के बारे में कहा कि विदेश जाकर भारत विरोधी बातें करना राहुल की पुरानी आदत है और जब से कांग्रेस ने चीन की कम्युनिस्ट पार्टी से एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किया है, राहुल चीन के समर्थन में जमकर बात करते हैं।

नाहरगढ़ से लापता युवक का मामला: हाई कोर्ट ने स्टेटस रिपोर्ट मांगी

जयपुर, 9 सितंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने नाहरगढ़ की पहाड़ियों से लापता हुए युवक राहुल पाराशर की बरामदगी को लेकर राज्य सरकार से 20 सितंबर तक स्टेटस रिपोर्ट पेश करने को कहा है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में डीजीपी, गृह सचिव, मानव तस्करी निरोधक यूनिट के ए.डी.जी. सहित अन्य पुलिस अधिकारियों से जवाब मांगा है। जस्टिस इंद्रजीत सिंह और जस्टिस भुवन गोयल की खंडपीठ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- लापता युवक के पिता की याचिका पर न्यायालय ने डी.जी. पी., गृह सचिव, मानव तस्करी यूनिट में ए.डी.जी. से 26 सितम्बर तक जवाब मांगा।

विचार बिन्दु

घर का मोह कायरता का दूसरा नाम है। –अज्ञात

सेबी अध्यक्ष माधवी पुरी बुच का मामला आखिर है क्या?

गत कुछ दिनों से सेबी की अध्यक्ष माधवी पूरी बुच का नाम खूब चर्चा में है। इंडियन नेशनल कांग्रेस ने कुछ दिनों पूर्व एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करके सेबी (Stock Exchange Board of India) की अध्यक्ष माधवी पुरी बुच पर गंभीर आरोप लगाए। यह प्रेस वार्ता कांग्रेस की ओर से पवन खेड़ा द्वारा संबोधित की गई थी। इसके बाद दो-तीन और प्रेस वार्ताएं इस विषय पर की गई हैं।

इससे पहले कि हम माधवी पर लगे आरोपों के बारे में चर्चा करें, इनके बारे में कुछ जानकारी पाठकों को देना उपयुक्त होगा।

माधवी पुरी बुच की शिक्षा मुंबई के फोर्ट कान्वेंट स्कूल दिल्ली के जीसस एंड मेरी कॉन्वेंट और स्टीफेंस कॉलेज में हुई, जहां से इन्होंने गणित में स्नातक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके बाद उन्होंने आईआईएम अहमदाबाद से एमबीए की डिग्री प्राप्त की। यह कहा जा सकता है कि माधवी एक उच्च प्रतिभाशाली महिला हैं। इन्होंने 2007 से 2017 तक आई.सी.आई.सी.आई. में नौकरी की। इसके बाद जुलाई, 2017 से मार्च 2022 तक सेबी की निदेशक एवं मार्च 22 से वे सेबी के अध्यक्ष पद पर कार्य कर रही हैं।

कांग्रेस ने आरोप लगाया था कि आई सी आई सी आई की नौकरी छोड़कर, सेबी की पूर्ण कालिक निदेशक बनने के बाद भी इन्होंने वहां से लगभग 17 करोड़ रुपए वेतन के रूप में प्राप्त किए जो इनको सेबी से प्राप्त वेतन से कहीं अधिक है। आरोपों के संबंध में माधवी पुरी बुच द्वारा तो अब तक कुछ नहीं कहा गया है किंतु आईसी आई सी आई ने एक स्पष्टीकरण का प्रेस नोट जारी किया कि माधवी पुरी बुच को आईसीसी द्वारा किसी प्रकार का वेतन 2017 के बाद नहीं दिया गया। उन्हें केवल सेवानिवृत्ति लाभ के रूप में ई सोप (Employees" Stock Ownership Plan) दिए गए। इसके अंतर्गत आईसीआईसीआई के शेयर प्राप्त हुए जब-जब इनको बेचा गया तो उनसे प्राप्त राशि इनके टैक्स रिटर्न में दिखाई गई, जिसे कांग्रेस ने वेतन बता दिया था।

सेबी, स्टॉक एक्सचेंज के नियामक का कार्य करता है। वहां पूर्णकालिक निदेशक बनने के बाद भी उन्होंने आईसीआईसीआई के शेयर अपने पास रखे और उनकी घोषणा तक भी नहीं की। यह एक घोर अनियमितता थी। यदि उनके द्वारा ऐसा किया जाता, तो उनका सेबी में बने रहना संभव नहीं था। यह आश्चर्य की बात है कि इस विषय में अभी तक सरकार या सेबी के निदेशक मंडल में से भी किसी ने कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी है।

सामान्यतया, कोई ऐसी संस्था में कोई काम कर रहा होता है, जिसे किसी कंपनी का कोई प्रकरण निर्धारित करने का अधिकार होता है, तो उस व्यक्ति का कंपनी में किसी प्रकार का कोई हित नहीं हो सकता। यदि ऐसा होता है, तो यह 'कनफ्लिक्ट ऑफ इंटरेस्ट' या हितों के टकराव की श्रेणी में आता है। माधवी पुरी बुच के लिए यह स्पष्ट रूप से 'कनफ्लिक्ट ऑफ इंटरेस्ट' का मामला था। इसके बारे में कोई सूचना उनके द्वारा सरकार को नहीं दी गई थी।

भारत सरकार के पूर्व वित्त सचिव सुभाष गर्ग, जो कि 2017 में सेबी के निदेशक मंडल में थे, ने एक टी वी साक्षात्कार में बताया कि माधवी बुच द्वारा इस संबंध में किसी प्रकार की कोई जानकारी सेबी में पद ग्रहण करते समय सरकार या निदेशक मंडल को नहीं दी गई। यदि यह जानकारी उस समय प्राप्त होती, तो वह इस पद को ग्रहण नहीं कर पातीं, न इस पर बने रह सकती थीं।

हिंडेनबर्ग रिपोर्ट में यह भी आरोप लगाया गया है कि माधवी पुरी का अडानी की एक ऐसी कंपनी में निवेश था, जिसकी जांच सुप्रीम कोर्ट के आदेशों पर सेबी द्वारा की जा रही थी। सेबी द्वारा उस कंपनी की जांच की जा रही थी जिसमें उसकी अध्यक्ष माधवी पुरी बुच का हित निहित था।

इस बारे में सेबी के निदेशक मंडल या इसके किसी भी सदस्य के द्वारा कोई स्पष्टीकरण अथवा प्रेस नोट जारी नहीं किया जाना, आश्चर्यजनक है। कुछ वर्ष पूर्व जब आईसीआईसीआई की पूर्व अध्यक्ष चंदा कोचर के विरुद्ध कुछ आरोप लगे तो वे अपने पद से अलग हुई और वहां के निदेशक मंडल ने उन पर एक जांच कमेटी नियुक्त की, जिसने आरोपों को सही माना। परिणामस्वरूप, उन्हें न केवल अपना पद छोड़ना पड़ा बल्कि उनके ऊपर आपराधिक प्रकरण भी दर्ज हुआ।

आई सी आई सी आई द्वारा जारी प्रेस नोट के अनुसार यह मान भी लिया जाए कि माधवी पुरी बुच ने कोई वेतन आई सी आई सी आई की नौकरी छोड़ने के बाद नहीं लिया, तब भी यह सत्य है कि उन्होंने वहां के शेयर अपने पास रखे। सेबी की अध्यक्ष के नाते उनके पास यह विशेष अधिकार था कि उनके पास किसी भी कंपनी के शेयर के संबंध में अप्रकाशित जानकारी हो सकती थी। यह वैसा ही हुआ जैसे किसी न्यायाधीश के पास कोई मुकदमा चल रहा हो और उसका हित किसी एक पक्ष से जुड़ा हुआ हो तो उससे न्याय की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

होना तो यह चाहिए था कि आरोप लगते ही सेबी के निदेशक मंडल द्वारा तत्काल एक जांच समिति गठित कर दी जाती और जो भी आरोप उन पर लगे हैं, उनके बारे में विस्तृत जांच की जानी चाहिए थी। ऐसा न किए जाने से यह धारणा पुष्ट होती है कि सरकार एवं सेबी के निदेशक मंडल और स्वयं माधवी पुरी बुच के पास छुपाने के लिए बहुत कुछ है।

किसी निजी कंपनी से सरकारी संस्था में कार्यभार संभालने के पहले संबंधित व्यक्ति को अपने सारे शेयर बेच देने चाहिए थे, अथवा उसके संबंध में पूरी जानकारी नई संस्था के साथ-साथ सरकार को भी देनी चाहिए थी। पाठकों के लिए जानना दिलचस्प होगा कि आई सी आई सी आई के शेयर उसके सेवा निवृत्त कर्मचारियों /अधिकारियों द्वारा सेवा निवृत्ति के पांच वर्ष बाद तक भुनाए जा सकते थे। माधवी पुरी बुच ने आठ वर्ष तक इन्हें अपने पास रखा और बाद में इन्हें बेचा और बहुत लाभ कमाया।

सामान्यतया, छोटे से 'कनफ्लिक्ट ऑफ इंटरेस्ट' या हितों के टकराव के प्रकरण में भी अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई हो जाती है। यहां स्वयं सेबी अध्यक्ष उस कंपनी के शेयर अपने पास रखी हुई थी, जिसके प्रकरण पर निर्णय करने का अधिकार उनके पास था।

होना तो यह चाहिए था कि आरोप लगते ही सेबी के निदेशक मंडल द्वारा तत्काल एक जांच समिति गठित कर दी जाती और जो भी आरोप उन पर लगे हैं, उनके बारे में विस्तृत जांच की जानी चाहिए थी। ऐसा न किए जाने से यह धारणा पुष्ट होती है कि सरकार एवं सेबी के निदेशक मंडल और स्वयं माधवी पुरी बुच के पास छुपाने के लिए बहुत कुछ है।

सेबी एक नियामक संस्था है। सेबी ने कई बार यह कहा कि किसी भी कंपनी के द्वारा गलत काम किए जाने पर उसका अध्यक्ष ही जिम्मेदार नहीं होता बल्कि उसके निदेशक मंडल की भी जिम्मेदारी बनती है। इस दृष्टि से देखा जाए तो सेबी के निदेशक एवं अध्यक्ष पद पर माधवी पुरी बुच के बने रहने और उनके द्वारा आई सी आई सी आई के शेयर अपने पास बनाए रखने की जानकारी सामने आने के बावजूद उनके विरुद्ध कोई जांच नहीं करना, मिली भगत का ही उदाहरण कहा जाएगा।

यह उल्लेखनीय है कि माधवी बुच, निजी कंपनी से सीधे सरकार की नियामक संस्था सेबी में नियुक्त हुई थी। उनकी नियुक्ति करने वाली समिति में केवल दो ही सदस्य थे– प्रधानमंत्री और गृहमंत्री। क्या उन लोगों के ध्यान में यह नहीं लाया गया कि माधवी बुच की संपत्ति क्या है एवं कहां-कहां उनके शेयर हैं? ऐसा नहीं है कि पूर्व में निजी क्षेत्र कंपनियों के विशेषज्ञों को सरकारी संस्थानों में नहीं लगाया गया हो, किंतु इस प्रकार के अनैतिक कार्य करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध जांच न करने के मामले सामने नहीं आए हैं।

यह नियम भी अभी तक नहीं बनाया गया है कि किसी भी निजी कंपनी को छोड़ने वाला व्यक्ति अधिकतम तीन माह से अधिक, उस कंपनी के शेयर अपने पास नहीं रख सकता। निजी कंपनी का व्यक्ति जब सरकार में सेबी जैसी संस्थान में आता है तो वह निजी कंपनियों के शेयर को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। माधवी पुरी के मामले में तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है कि उन्हें उपलब्ध विशेष जानकारी के कारण ही, उनके द्वारा रखे गए शेयर का भाव बहुत बढ़ गया जिसका लाभ उन्हें मिला।

इस प्रकार के नियमों में कोई बदलाव शायद इसलिए नहीं किया गया कि कई आईएएस अधिकारियों के पास भी कई प्रकार के शेयर होते हैं और वे नियामक संस्थाओं में लग जाते हैं। यदि ऐसा नियम बना दिया जाता तो वे ऐसा नहीं कर पाते। उनके स्वार्थ वश ही निर्देशों को सही नहीं किया गया है। इस प्रकार की अपारदर्शी व्यवस्था जनता के साथ में धोखा ही कहा जाएगा, क्योंकि कुल मिलाकर एक साधारण निवेदक को इससे नुकसान पहुंचने की संभावना बनी रहती है।

माधवी पुरी बुच पर व्होकार्ट कंपनी को अपना मकान बहुत अधिक किराए पर देने का आरोप भी है। जो मकान 7 लाख रुपए में 2018-19 में किराए पर दिया था, वह 2023-24 में बढ़कर 45 लाख हो गया।

इस पूरे प्रकरण में सरकार की चुप्पी भी समझ से परे है। इनकी नियुक्ति प्रधानमंत्री और गृहमंत्री द्वारा की गई थी। उनकी चुप्पी से ऐसा लगता है कि माधवी पुरी बुच को अभयदान मिला है। इसी कारण उन्होंने अब तक त्यागपत्र नहीं दिया है।

अब इस मामले का संज्ञान, संसद की जन लेखा समिति ने लिया है। उल्लेखनीय है कि जन लेखा समिति के अध्यक्ष, कांग्रेस के नेता के सी वेणु गोपाल हैं और अन्य सदस्य, विभिन्न दलों के हैं। इस समिति को अधिकार है कि वह सेबी की अध्यक्ष माधवी पुरी बुच को बुलाकर उनके बयान ले सके। यदि थोड़ी बहुत भी नैतिकता सेबी अध्यक्ष में बची है तो उन्हें तत्काल अपने पद से त्यागपत्र देना चाहिए और अपने आप को जांच के लिए प्रस्तुत करना चाहिए। जनता की गाढ़ी पसीने की कमाई और निवेशकों के द्वारा किए गए निवेश की राशि का इस प्रकार से दुरुपयोग होना ईमानदार एवं शुचिता वाली सरकार के लिए ठीक नहीं है। आई ए एस लाबी भी संभवतया इस बारे में विशेष कुछ नहीं कर रही है क्योंकि वे स्वयं भी इससे प्रभावित होते हैं।

केवल यह कह देना कि सारे काम कानून और नियमों के अनुसार हुए हैं, माधवी पुरी बुच एवं सरकार को निर्दोष सिद्ध नहीं करते। यह सामान्य जानकारी है कि अधिकांश भ्रष्टाचार के कारनामे, कानून और नियमों का तकनीकी रूप से पालन करते हुए ही किए जाते हैं। कई बार ऐसा होता है कि कानूनी रूप से एवं तकनीक रूप से सही होते हुए भी, गंभीर भ्रष्टाचार किसी स्थिति में हुआ हो। बड़े महत्वपूर्ण पदों पर बैठे व्यक्तियों से आदर्श नैतिक आचरण की अपेक्षा की जाती है।

अब तो जन लेखा समिति की जांच से ही वस्तुस्थिति सामने आ पाएगी। तब तक माधवी पुरी बुच सरकार के अभयदान से सेबी की अध्यक्ष बनी रहेंगी, ऐसा लगता है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का चिनार बुक पुस्तक महोत्सव

कश्मीरी युवाओं की सोच से जुड़ा पुस्तक पर्व

डॉ. अरुणा व्यास

कश्मीर के युवा रचनात्मक आयामों से जुड़ने को तेजी से उत्सुक हुए हैं। उनकी सोच बदलने, उनमें राष्ट्र प्रेम की दृष्टि जगाने की दृष्टि से नेशनल बुक ट्रस्ट ने इधर महत्वपूर्ण पहल की है। इसके तहत शेर-ए-कश्मीर अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर (एसकेआईसीसी) में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने 9 दिन का चिनार बुक पुस्तक महोत्सव आयोजित किया।

हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी, डोगरी, और अंग्रेजी आदि भाषाओं के प्रकाशकों का यह अनूठा मेला था। ऐसा जिसमें लेखकों, कवियों, और कलाकारों की भी महती भागीदारी रही। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निदेशक कर्नल युवराज मलिक की सुनियोजित सोच से आयोजित यह देशभर का अनूठा पुस्तक पर्व था। कर्नल युवराज कश्मीर पदस्थापित रहे हैं। साहित्य और संस्कृति से भी उनका निकट का नाता है। वह स्वयं लिखते हैं, इसलिए कश्मीर के युवाओं को पुस्तक संस्कृति से जोड़ने और इस बहाने देश से अलग-थलग पड़ी कश्मीर घाटी में सकारात्मक परिवर्तन की दृष्टि से चिनार पुस्तक पर्वोत्सव बहुत महत्वपूर्ण रहा।

यह पुस्तक महोत्सव ठहरे पानी को चलायमान करते, उसे जीवंत करने का एक तरह से प्रयास था। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने एक पहल इससे यह भी की कि इसके जरिए वहां के युवाओं को एक दिशा दी। जो हाथ स्थानीय पुलिस, मिलट्री को पत्थर मारने के लिए उठते थे, उनके हाथों में पुस्तक देने की दृष्टि से, उनकी सोच को बदलने की दृष्टि से और युवाओं को यह अहसास कराने के लिहाज से भी कि यदि उन्हें अपनेपन का अहसास कराया जाए तो उनकी सोच को बदला जा सकता है। उनमें अपने देश भारत के प्रति प्यार जगाया जा सकता है।

नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक युवराज मलिक की पहल पर इसके तहत ही वहां बहुत सी गतिविधियां इस उद्देश्य से रखी गयी। मसलन भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद की ओर से कश्मीर के इतिहास और वहां की संस्कृति में समाए देश के गौरव से जुड़े महत्वपूर्ण घटनाक्रम की महत्वपूर्ण शब्द-छायाचित्र-प्रदर्शनी का वहां आयोजन किया गया। प्रतिदिन हजारों युवाओं ने इसे देखा-समझा। संप्रभुता और समान नागरिक संहिता के साथ अनेकता में एकता की भारतीय संस्कृति से जुड़े भारतीय संविधान के आलोक में भी एक प्रदर्शनी आयाजित हुई। इसमें संविधान निर्माण में महिलाओं की भूमिका को केन्द्र में रखा गया। इसी तरह अंतरिक्ष में भारत की उपलब्धियां और राष्ट्र गौरव से जुड़ी सोच को युवाओं से वहां साझा किया गया। पुस्तक-संस्कृति के बहाने चिनार पुस्तक महोत्सव में अलग-थलग पड़े कश्मीर और वहां के युवाओं को पुस्तकों से, भारतीय संस्कृति के सरोकारों से जोड़ने की सूझ रही है। पुस्तक महोत्सव डल झील के ठीक किनारे आयोजित हुआ। चिनार बुक फेस्टिवल पहला राष्ट्रीय पुस्तक महोत्सव था जिसमें किताबों के बीच पाठक साहित्य, कला और संस्कृति से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों से भी जुड़े। महोत्सव में प्रतिदिन सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक बच्चों के लिए सुलेख, कहानी सुनाना, कैरिकेचर, रंगाई प्रतियोगिता, कला कार्यशाला, नारा लेखन प्रतियोगिता, कठपुतली शिल्प, वैदिक गणित और कई अन्य रचनात्मक लेखन कार्यशालाएं आयोजित हुई। इसके बाद प्रतिदिन 2 बजे से शाम 4 बजे तक युवाओं के लिए करियर ओरिएंटेड वर्कशॉप, कला, साहित्य और संस्कृति पर बड़े साहित्यकारों से संवाद कार्यसक्रम हुए और विभिन्न सांस्कृतियां प्रस्तुतियां भी बड़ा आकर्षण रही। इसका गहरा असर भी युवाओं हुआ। एक उत्सवधर्मिता का माहौल वहां बना। इसीलिए महोत्सव के आरंभ में ही इन आकर्षणों के चलते एक लाख के करीब बच्चों ने बाकायदा मेले के लिए पंजीकरण कराया। नौ दिवसीय आयोजन में प्रतिदिन युवाओं ने साहित्य और भारतीय संस्कृति से जुड़े ख्यात विख्यात साहित्यकारों से प्रत्यक्ष संवाद किया। भारतीय संस्कृति और सनातन भारतीय दृष्टि को जाना-समझा। नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक बताया, कश्मीर पुस्तक पर्व उर्दू साहित्य का भी अब तक का सबसे बड़ा पुस्तक महोत्सव साबित हुआ। प्रतिदिन हजारों की संख्या में युवाओं की भागीदारी उत्साह जगाने वाली थी। चिनार पुस्तक महोत्सव में 200 से ज्यादा प्रकाशकों ने भाग लिया। जम्मू-कश्मीर के युवा लेखकों के सम्मान के साथ उनके लेखकीय सरोकारों को भी निरंतर उत्साहित किया गया।

पुसतक महोत्सव में कश्मीरी सूफीवाद, भाषा, इतिहास और संस्कृति जैसे विषयों पर चर्चाएं काफी उत्साहजनक रही तो कविता सत्रों में भी युवाओं की बड़ी भागीदारी रही। कश्मीरी बाल साहित्यकार अख्तर हुसैन से जब बच्चों ने कश्मीरी जुबां में कहानियाँ सुनी तो उन्होंने भी बहुत कुछ अनुभव साझा किए। हुर्रियत अध्यक्ष मीरवाइज उमर फारूक, घाटी में युवा आंदोलन से जुड़े बहुत से कार्यकर्ताओं ने इसमें शिरकत कर पुस्तक संस्कृति के लिए की गयी पहल को सराहा। साहित्य और सांस्कृतिक विरासत के साथ कश्मीर में हुई यह हलचल महती पहल रही। आजादी के बाद कश्मीर में पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने का यह पहला ऐसा कार्यक्रम कहा जा सकता है जिसने युवाओं को का नई दिशा देने का कार्य किया है।

–डॉ. अरुणा व्यास,
लेखिका स्वतंत्र पत्रकार
एवं लेखक हैं

चारभुजा बड़ा मंदिर के भंडार से निकले 89,297 रुपए व 1 ग्राम सोना

भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा का प्रमुख बड़ा मंदिर श्री माहेश्वरी समाज श्री चारभुजा जी मंदिर ट्रस्ट के आज सोमवार को खोले गए भंडार से 89297 रुपए नगद एवं 1 ग्राम सोना प्राप्त हुआ

ट्रस्ट के अध्यक्ष उदयलाल समदानी ने बताया कि मंदिर के आज खोले गए दान पत्र से 89297 नगद एवं 1 ग्राम सोना निकला है।

ट्रस्ट मीडिया प्रभारी महावीर समदानी ने जानकारी देते हुए बताया कि भंडार की गिनती के समय ट्रस्ट के अध्यक्ष उदयलाल समदानी मंत्री छीतरमल डाड, कोषाध्यक्ष सुनील सोनी, संरक्षक रामेश्वर तोषनीवाल ,चंद्रसिह तोषनीवाल ,बद्रीलाल डाड, रमेश जागेटिया, प्रमोद डाड आदि ने गिनती की दान पात्र से निकले हुए नगद एवं सोने की इंद्राज ट्रस्ट के रजिस्टर में एंट्री कर जमा किए गए।

पाली जिले का सरदार समंद बांध 45 वर्ष बाद ओवरफ्लो

पाली, (नि.सं.)। पश्चिम राजस्थान वह पाली जिले का दूसरा बड़ा बांध सरदार समंद बांध करीब 45 वर्ष बाद ओवरफ्लो हुआ, जिससे इसके कमांड क्षेत्र के किसानों के चेहरे खिल गए। 1979 के बाद पहली बार बाध में पूरा भर जाने के बाद ओवरफ्लो हुआ।

इसके कमांड क्षेत्र में छोटे-मोटे एनिकट बन जाने के इस बांध में 17 18 फुट से ज्यादा पानी नहीं आता था। इस बार लगातार बारिश से बांध पूरा भर गया, जिसके कारण 10 गांव को अलर्ट कर दिया गया। इसका पानी सिंचाई के काम आता है। इस बांध का निर्माण जोधपुर रियासत के महाराजा सरदार सिंह ने बनाया था जिस कारण इसका नाम सरदार समंद पड़ा।1933 में जोधपुर महाराजा महाराज उम्मेद सिंह ने यहां पर कोठी बनाई थी जो कि वर्तमान में हेरिटेज होटल के रूप में काम कर रही ह। बांध ओवरफ्लो होने के कारण किसानों के चेहरे खिल गए हैं और उन्हें खेती के लिए पर्याप्त पानी मिलेगा। बंद और प्ले होने की सूचना पर कई अधिकारियों के साथ जिला कलेक्टर व एसपी भी पहुंचे। वही जवाई बांध 43 फीट पर हो चुका है, जिले के एक दर्जन बांध पूरे भर गए हैं।

बांध 43 फीट पर हो चुका है, जिले के एक दर्जन बांध पूरे भर गए हैं।

शहीद विजय कुमार का देह पंचतत्व में विलीन, सैनिक सम्मान से किया अंतिम संस्कार

तारानगर, (कासं)। तारानगर तहसील के गांव ढाणी आशा के 28 वर्षीय विजय कुमार धीनवाल का सोमवार दोपहर गांव में गमगीन माहौल में सैनिक सम्मान के साथ अंतिम संस्कार हुआ। इससे पहले सोमवार सुबह शहीद का पार्थिव तारानगर पहुंचा। जहां गांव के युवाओं ने तिरंगा यात्रा के साथ शहीद के पार्थिव देह को गांव तक लेकर पहुंचे। युवाओं ने "जब तक सूरज चांद रहेगा विजय भाई तेरा नाम रहेगा" के नारे गूंजायमान हो गये। शहीद के अंतिम दर्शन के लिए लोगों का हुजूम उमड पडा।

शहीद का पार्थिव देह उसके घर पहुंचा तो माहौल गमगीन हो गया। बूढ़ पिता की आंखे पथरा गयी थी वहीं शहीद वीरांगना पति के शहीद होने की सूचना मिलने के साथ बेसुध हो रही थी। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी लेफटीनेंट कर्नल दिलीप सिंह ने बताया कि 28 वर्षीय शहीद विजय कुमार धीनवाल भारतीय नेवी में थे। जो महाराष्ट्र के बेलगांव में कमांडो ट्रैनिंग कर रहे थे। सात सितम्बर की सुबह बेलगांव में ट्रेनिंग के दौरान उनकी नाव नदी में डूब गयी। जिससे वह वीरगति को प्राप्त हो गये। विशेष विमान से शहीद का शव का रविवार शाम दिल्ली लाया गया। जहां सड़क मार्ग से सोमवार सुबह शव तारानगर पहुंचा। जहां से गांव के युवाओं के द्वारा तिरंगा यात्रा निकालकर गांव के लाडले को अंतिम विदाई दी। उन्होंने बताया कि विजय कुमार की एक साल पहले शादी हुई थी। गांव ढाणी आशा में सैनिक सम्मान के साथ शहीद विजय कुमार का अंतिम संस्कार किया गया है। लोकसभा सासंद राहुल कस्वां, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़, प्रधान संजय कस्वां, एडीएम उत्तम सिंह, तहसीलदार इमरान खान, विकास अधिकारी अमरजीत सिंह बाबल, उप पुलिस अधिक्षक मिनाक्षी, महावीर पूनियाँ, राकेश जांगिड़, मुंशी खाँ तेली, थानाधिकारी गौरव खिडिया सहित प्रशासनिक अधिकारी व जन प्रतिनिधियों ने पुष्प चक्र अर्पित कर शहीद विजय सिंह को श्रद्धांजलि दी। गांव ढाणी आशा के शीशपाल धीनवाल ने बताया कि शहीद विजय कुमार धीनवाल को मुखाग्नी उसके 15 माह के बेटे लक्षित ने दी है।

पुष्पचक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि देते पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़।

- पैतृक गाँव ढाणी आशा में हुआ अंतिम संस्कार, शहीद के बेटे ने दी मुखाग्नि

राशिफल मंगलवार 10 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, अनुराधा नक्षत्र रात्रि 8:04 तक, विष्कुमभ योग रात्रि 12:31 तक, गर करण दिन 10:33 तक, चन्द्रमा वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से रात्रि 8:04 तक है। भद्रा रात्रि 11:12 से आरम्भ होगी। आज मुक्ता भरण सप्तमी, सन्तान और दुबड़ी सप्तशी, ललिता सप्तमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:19 से 10:51 तक, लाभ-अमृत 10:51 से 1:56 तक, शुभ 3:29 से 5:01 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:14, सूर्यास्त 6:34

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित होना पड़ सकता है।

धनु
परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित होना पड़ सकता है।

मकर
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा हो सकते हैं। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। स्वास्थ्य में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन योजना का क्रियान्वयन होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा है।

सार-समाचार

एलबीएस के विद्यार्थियों ने चार स्वर्ण, एक रजत एवं तीन कांस्य पदक जीते

कोटा, (निसं)। 68वीं जिलास्तरीय खेल प्रतियोगिता में एलबीएस के विद्यार्थियों द्वारा भिन्न-भिन्न खेल प्रतियोगिता मे भाग लिया था जिसमें अमीषी ने कराटे मे प्रथम स्थान स्वर्ण, प्रिया शर्मा ने कुश्ती मे प्रथम स्थान स्वर्ण, दिव्या कुश्ती अंडर 17 में स्वर्ण, आरूषी कक्कड़ ने ताईक्वांडो मे प्रथम स्थान स्वर्ण, मिर्जा बेग ने ताइक्वांडो मे रजत और श्रेया पारीक, श्रीजा पारीक एवं प्राची सिंह ने बैडमिंटन में कांस्य पदक प्राप्त किया। उनकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर विद्यालय के प्रधानाचार्य, शिक्षकगण, और छात्रों ने उन्हें हार्दिक बधाई दी है। विद्यालय के चेयरमैन श्री कुलदीप माथुर जी ने बताया कि यह उपलब्धि न केवल बच्चों की मेहनत और समर्पण का परिणाम है, बल्कि हमारे विद्यालय के खेल कार्यक्रम की गुणवत्ता और हमारे सभी छात्रों के समर्पण का भी प्रमाण है। उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देते हुए उनका मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर एलबीएस ग्रुप के एकेडमिक डायरेक्टर एस.के.माहेश्वरी, डॉक्टर शिल्पा माथुर, योगेंद्र माथुर, वर्षा माथुर, सुरेंद्र नागर आदि ने बधाई दी। इस सफलता से विद्यालय में हर्ष और उत्साह का माहौल है।

मगरमच्छ को रेस्क्यू किया

कोटा, (निसं)। चंबल नदी और इसके सहायक नदी, नालों व तालाब में बड़ी संख्या में मगरमच्छ पनप गए हैं। ऐसे में अब यह मगरमच्छ बारिश होने पर जब नदी नालों या तालाब में उफान आने या भोजन कि तलाश में नजदीक के सूखे स्थान पर चले जाते हैं। ऐसे में बीते चार दिन पहले 5 सितंबर सुबह को भी रेलवे की गोल्डन जुबली पिट लाईन पर एक 5 फीट लंबा करीब 35 किलो का मगरमच्छ पहुंच गया था जिसका रेस्क्यू फॉरेस्ट की टीम ने किया था और सोमवार सुबह फिर मगरमच्छ वहां पर देखा गया। ऐसे में वन विभाग के क्रोकोडाइल रेस्क्यू टीम के लीडर वीरेंद्र सिंह हाडा मौके पर पहुंचे। उन्होंने इस 5 फीट लंबे और करीब 35 किलो वजनी मगरमच्छ को पकड़ा और बांध दिया। इसके बाद वाहन की मदद से इसे देवली अरब रोड़ स्थित नगर वन में बने क्रोकोडाइल व्यू प्वाइंट पर छोड़ा गया है। इस साल भी अब तक एक दर्जन से ज्यादा क्रोकोडाईल का रेस्क्यू किया जा चुका है। वीरेंद्र सिंह हाडा का कहना है कि मगरमच्छ भोजन की तलाश में ही रेलवे लाईन पर पहुंचा था इसके पहले भी मगरमच्छ भोजन की तलाश में ही यहां पर नजदीक के नाले से आया था।

दो दिन पिपलौद-छजावा स्टेशनों के बीच रेलवे फाटक बंद रहेगा

कोटा, (निसं)। मंडल के पिपलौद-छजावा स्टेशनों के मध्य स्थित मानवयुक्त समपार फाटक संख्या 49 10 सितंबर एवं 11 सितंबर 2024 को मेन्टेनेन्स कार्य हेतु बन्द रहेगा। रेल पथ का मेन्टेनेन्स कार्य ट्रेन संचालन हेतु अति-आवश्यक है एवं यह समपार फाटक प्रातः 08.30 बजे से शाम 18.00 बजे तक दो दिन रोड ट्रैफिक के लिए बंद रहेगा। इस गेट का यातायात अटरू की तरफ आने वालों के लिए अंडरपास 54 से पास होगा एवं बारां की तरफ जाने वालों के लिए समपार फाटक सं 43 से पास होगा। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक रोहित मालवीय ने बताया कि आमजनमानस को होने वाली असुविधा के लिए खेद है लेकिन रेलपथ का अनुरक्षण कार्य किया जाना आवश्यक है।

हिसार-तिरुपति स्पेशल के तीन फेरे निरस्त

कोटा, (निसं)। दक्षिण मध्य रेल के विजयवाड़ा-काजीपेट-बल्लारशाह खंड में वारंगल, काजीपेट और हसनपर्थी रोड स्टेशनों के बीच चार रेल लाइनों के नॉन इंटरलॉकिंग कार्य के चलते मंडल के सवाई माधोपुर, कोटा एवं रामगंजमंडी होकर जाने वाली हिसार-तिरुपति-हिसार साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन दोनों दिशाओं में तीन-तीन फेरे निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 04717 हिसार-तिरुपति एक्सप्रेस अपने प्रारम्भिक स्टेशन से दिनांक 21.09.2024, 28.09.2024 एवं 05.10.2024 को निरस्त रहेगी एवं वापसी में गाड़ी संख्या 04718 तिरुपति-हिसार एक्सप्रेस अपने प्रारम्भिक स्टेशन से 23.09.2024, 30.10.2024 एवं 07.10.2024 को निरस्त रहेगी। यात्रियों से अनुरोध है कि ट्रेन की उचित स्थिति की जानकारी स्टेशन, एनटीईएस अथवा रेल मदद 139 पर प्राप्त कर यात्रा करें।

माँ भारती में गणेश चतुर्थी मनाई

कोटा, (निसं)। माँ भारती सी. सै, विद्यालय सीबीएससी स्वामी विवेकानंद नगर में गणेश चतुर्थी का पर्व धूमधाम के साथ मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वन्दना के साथ की गई। इसी के तहत विद्यार्थियों ने मनमोहक प्रस्तुति दी। साथ ही भगवान गणेश की पौराणिक कथा के बारे में बताया। इसी अवसर पर स्कूल डायरेक्टर उर्वशी विजय ने गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएं दी। अंत में स्कूल प्रिंसिपल मोनिका मलिक ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि हमें किसी भी कार्य की शुरुआत करने से पहले बुद्धि के देवता श्री गणेशजी को नमन करना चाहिए।

'फसल अतिवृष्टि से बर्बाद हो गई और सरकार कुम्भकर्णी निद्रा में सो रही है'

कोटा, (निसं)। भारतीय राष्ट्रीय किसान महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज दुबे ने कई गाँवों का दौरा कर अतिवृष्टि से बर्बाद सोयाबीन व धान आदी की फसलों का जायजा लिया व इस दौरान किसानो ने राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज दुबे को अतिवृष्टि से नष्ट हुई फसलों को दिखाते हुए अपनी पीड़ा बताई।

मनोज दुबे ने कहा की किसानो की फसल अतिवृष्टि से बर्बाद हो गई और राजस्थान की डबल इंजन की भाजपा सरकार कुम्भकर्णी निद्रा मे सो रही है। ये केवल किसानों की फसल का नुकसान नहीं, ये किसान की आस टूटना हैं। अतिवृष्टि ने किसानों के अरमानों पर पूरी तरह से पानी फेर दिया है। प्रथम दृष्टया फसलों का 70-80 प्रतिशत नुकसान हो चुका है। वहीं सोयाबीन, धान, मक्का, जैसी फसलें पूरी तरह नष्ट हो चुकी है। भारी बरसात से गरीब किसानो के कच्चे मकान क्षतिग्रस्त हो चुके हैं, जिसके चलते हजारों लोग बेघर होने को मजबूर हैं। मनोज दुबे ने कहा की कोटा संभाग में अतिवृष्टि और जलभराव की वजह से किसानों के खेतों में खड़ी खरीफ की फसलें पूरी तरह खराब हो गई हैं, जिससे किसानों को

कोटा में अतिवृष्टि से फसल बर्बादी का दावा किया जा रहा है।

भारी नुकसान हुआ है। सरकार को अतिवृष्टि से किसानों को हुए नुकसान के आकलन का तत्काल निर्देश देना चाहिए एवं विशेष गिरदावरी करवा कर प्रभावित किसानों को मुआवजा जल्द से जल्द देने की मांग की है। इस अवसर पर किसान नेता राकेश कुमावत, मुकेश मीणा, भगवान गौतम, ओमप्रकाश गौतम, प्रेम व्यास, सत्तार, भरत मीणा, मनोज गौतम, राजू मीणा, रोहित मीणा,नरेश मीणा, छोटू लाल नायक, पुष्प दयाल मेहरा, उमेश मीणा, गिर्राज मेहरा, मधुसूदन शर्मा, सुरेंद्र शर्मा, किशन मीणा, बाबूलाल मेहरा, मुकुट मेहरा, हरीश गोचर, डां.महेश पारीक, हरभजन सिंह, तुषार दुबे, कालूलाल नागर, रामपाल चौधरी, सहित कई किसान मौजूद थे।

'ज्ञान के माध्यम से समस्याओं का निवारण करें'

कोटा, (निसं)। छात्रों, बालकों व युवा पीढ़ी को अंधविश्वास व पाखंड के विरुद्ध सजग करने के लिए चलाए जा रहे चेतना सप्ताह के अंतर्गत आर्य समाज द्वारा आर्मी पब्लिक स्कूल में छात्र चेतना कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के महामंत्री एडवोकेट चंद्र मोहन कुशवाहा ने बताया कि अंधविश्वास निवारण चेतन सप्ताह के अंतर्गत सोमवार को आर्मी पब्लिक स्कूल मालाफाटक कोटा में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्रों को संबोधित करते हुए आर्य समाज के वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान सद्ज्ञान के माध्यम से करें ना की तंत्र-मंत्र और पाखंड से। उन्होंने कहा कि अज्ञान के कारण लोगों में धार्मिक अंधविश्वास, पाखंड, जादू, टोने-टोटके में पड़े रहते हैं। अंधविश्वास से बचने के लिए तर्क को अपना आधार बनाएं। जो तार्किक दृष्टि से सही लगे वही सत्य हैं।

जरूरतमंदों को पोषाहार वितरण के साथ गुरूओं का सम्मान

कोटा में सिंधी समाज ने गुरूओं का सम्मान किया।

कोटा, (निसं)। सिन्धी सभ्यता मण्डल द्वारा अशोका कॉलोनी स्थित नारीशाला में असहाय एवं जरूरतमंद परिवारों को एक माह की राशन सामग्री वितरण का वितरण किया गया। महासचिव प्रकाश वीर नाथानी, ने बताया 136 महिलाओं जरूरतमंदो को दैनिक जीवनयापन की आवश्यक सामग्री वितरित की गई, जो कि पिछले 64 वर्षो से लगातार नियमित रूप से प्रतिमाह असहाय परिवारों को राशन सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खूबंचदानी एवं पदाधिकारियों ने पूजा-अर्चना कर कार्यक्रम की शुरूआत की। उपाध्यक्ष पुरूषोत्तम छाबड़िया ने बताया सांसद कोष से रा.उ.मा.विद्यालय साजीदेहड़ा के भवन का निर्माण कार्य होने के कारण विद्यालय में कक्षाऐ नहीं चल पाने के कारण अस्थाई रूप से कक्षाओं का संचालन नारीशाला में किया जा रहा है। नारीशाला में संचालित विद्यालय के अध्यापकों का सम्मान सिन्धी सभ्यता मण्डल द्वारा किया गया। पवन खूबचन्दानी ने बताया राष्ट्रपति पुरूस्कार से सम्मानित गणित विषय के शिक्षक चन्द्रप्रकाश खूबंचदानी का शॉल एवं साफा बांधकर सम्मानित किया गया। वृद्धाश्रम में रह रही महिलाओं को भी मिठाई देकर सम्मानित किया गया। कोषाध्यक्ष विजय ने भनानी, नन्दलाल राजानी, हरीश पंजवानी, धनराज अडवानी, रमेश वाधवानी, पीतू गेहिजा ने उपस्थित रहकर सहयोग किया।

यात्री यूटीएस एप पर टिकट बुकिंग सुविधा का ले रहे भरपूर लाभ

कोटा, (निसं)। अनारक्षित टिकट के लिए यात्रियों के समय की बचत और लाइन में लगने की झंझट से निजात दिलाने के यूटीएस ऑन मोबाइल एप की सुविधा उपलब्ध है। यात्रियों के बीच ऑनलाईन यूटीएस मोबाइल एप के द्वारा जनरल रेल टिकट लेना बेहद आसान एवं सरल प्रक्रिया होने के कारण इसका भरपूर लाभ यात्री ले रहे है। साथ ही यह यूटीएस ऑन मोबाइल एप यात्रियों के बीच अब लोकप्रिय हो गया है। यदि मंडल में यूटीएस मोबाईल एप बुकिंग आंकड़ों की बात करें तो इस सत्र पांच महीने में अगस्त माह में सर्वाधिक 1.17 लाख यात्रियों ने इस मोबाइल एप के माध्यम से कुल 35,383 टिकट बुक किए, जिससे रेलवे को रुपये 31 लाख रुपए का राजस्व प्राप्त मिला। जबकि यह आंकड़ा अप्रैल में 29,248 बुक टिकट पर 1.04 लाख यात्री, मई में 29,274 बुक टिकट पर 94,820 यात्री, जून में 29,178 बुक टिकट पर 1.02 लाख यात्री एवं जुलाई में 30,697 बुक टिकट पर 1.13 लाख यात्री सफ़र का है।

नाम परिवर्तन

मैंने अपना नाम घनश्याम लाल से बदलकर घनश्याम लाल खत्री रख लिया है। भविष्य में इसी नाम से जाना जावे। पता-3-C-20 महावीर नगर-III कोटा

वृक्षारोपण एवं शिक्षण सामग्री वितरण

कोटा, (निसं)। कुटुर इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलोजी संस्थान द्वारा साक्षारता दिवस के उपलक्ष में दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसके अंतर्गत प्रथम दिवस पर संस्था द्वारा विज्ञान नगर क्षेत्र के पार्क मैं संस्था की निदेशक पूजा राजवंशी व विद्यार्थियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया और कार्यक्रम के दूसरे दिन गोबरिया बावड़ी, सुभाष नगर एवं जगपुरा में सड़क किनारे आवासित बालक एवं बालिकाओं को संस्था द्वारा अल्पाहार एवं शिक्षण सामाग्री, टिफ़िन, बोटल एवं स्कूल बैग्स का वितरण किया गया और उनके माता पिता को उनकी शिक्षा का महत्व बताया स पूजा राजवंशी ने कहा कि विशेष दिवस पर इस प्रकार के आयोजन होने चाहिऐं जिससे शिक्षा के साथ पर्यावरण के प्रति भी आमजन को जागरूक किया जा सकें।

कोटा में कुतूर इंस्टीट्यूट के द्वारा शिक्षा सामग्री प्रदान की गई।

डॉ. गौड़ बेस्ट सोशल चेंजमेकर अवार्ड से राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित

कोटा, (निसं)। नेत्रदान के कार्य को छोटे-छोटे गांव कस्बों एवं सेवा इस कार्य को सम्मानीय व प्रेरणादायक तरीके से, जमीनी स्तर तक पहुंचाने पर, और आमजन को अपने अथक प्रयासों से नैत्रदान के कार्य में जोड़ने के लिये कोटा की सामाजिक संस्था शाइन इंडिया फाउंडेशन के संस्थापक डॉ कुलवंत गौड़ को दिल्ली के फाइव स्टार होटल में बेस्ट सोशल चेंजमेकर अवार्ड से सम्मानित किया गया।

डॉ कुलवंत गौड़ को यह अवार्ड, फिल्म स्त्री, पंचायत और गुल्लक की स्टार सुनीता राजवाड़, कमांडर रशीद जफर अंसारी, लेफ्टिनेंट कर्नल अजय कुमार सिंह और द क्रेजी टेल्स की सीईओ अमृता कर ने दिया था। पूरे भारत से 40 अवार्डी में से, डॉ कुलवंत गौड़, बेस्ट सोशल चेंजमेकर अवार्ड को पाने वाले एक अकेले व्यक्ति थे। निर्णायक मंडल ने कहा कि, दुख: भरे माहौल में जाकर परिवार के सदस्यों से नेत्रदान के बारे में चर्चा करना और नेत्रदान का हो जाना, यह कार्य इतना आसान नहीं है, परंतु डॉ गौड़ के नवाचार, प्रेरणादायक प्रयोग और समझाईश के तरीके से, यह काफी हद तक जनमानस तक नेत्रदान के कार्य को ले जाने में सहायक हुए हैं, उनकी उसी सेवा भावना के कारण इन्हें बेस्ट सोशल चेंजमेकर अवार्ड से नवाजा गया है।

कोटा के डॉ. कुलवंत गौड़ को सम्मानित किया गया।

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी कोटा विकास प्राधिकरण (केडीए)

क्रमांक LU2012/KOT/2024-25/100772 **लोक सूचना** दिनांक : 09/09/2024

श्री DEEPAK RAJWANSHI पुत्र श्री LT.SH.BRIJNANDAN RAJWANSHI जाति MAHAJAN निवासी 2-A-8 RANGARI ROAD TALWANDI KOTA ने इस कार्यालय में नीचे उल्लेखित भूमि का आवासीय प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभीधृति अधिकारी के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है अर्थात :-

क्र. सं.	ग्राम तहसील व जिले का नाम	खातेदार का नाम	खसरा सं	क्षेत्रफल (वर्ग मीटर)	क्षेत्रफल (हेक्ट.)
1.	सकतपुरा, लाडपुरा (कोटा)	RESONENT WEALTH CONSLTENCY PVT LTD. AUTHORIIZED OFFICE OCF-69-331 V.T. ROAD MANSAROVAR JAIPUR(RAJ.) NIDESAK GUNJA KUMARI JAIN D/O VARDHMAN JAIN CASTE MAHAJANRESI. SADAR BAZAR BIJOLIYA DISTT. BHILWARA (RAJ.) HISSA PURNA	59	3000	0.3
			702/70	22600	2.26
2.	सकतपुरा, लाडपुरा (कोटा)	RESONENT WEALTH CONSLTENCY PVT LTD. AUTHORIIZED OFFICE OCF-69-331V.T. ROAD MANSAROVAR JAIPUR(RAJ.) NIDESAK NAVNEET KAUR D/O JAGTAR SINGH CASTE-SIKH RESIDENCE GRAM MADHEKE TEHSIL NIHAL SINGH WALA JILA MOGA PUNJAB HISSA PURNA KHATEDAR	72	1300	0.13
			73	900	0.09
			74	500	0.05
			75	1100	0.11
			78	4000	0.4
3.	सकतपुरा, लाडपुरा (कोटा)	RESONENT WEALTH CONSLTENCY PVT LTD. HISSA PURNA LANDMARK PARADISE PARISAR 33 K.V.A. GSS KE SAMENE LANDMARK CITY KUNHADI KOTA KHATEDAR	719/58	400	0.04
4.	सकतपुरा, लाडपुरा (कोटा)	RESONENT WEALTH CONSLTENCY PVT LTD. C.I.N. NO. U01400RJ202012PT C037774 HISSA PURNA OFFICE LANDMARK PARADISE PARISAR 33 K.V.A. GSS KE SAMENE LANDMARK CITY KUNHADI KOTA KHATEDAR	731/61	16000	1.6
5.	सकतपुरा, लाडपुरा (कोटा)	RESONENT WEALTH CONSLTENCY PVT LTD. NIDESAK YOGESH SHARDA S/O KRISHAN DAS SHARDA HISSA 4/5 CASTE- HINDU HOUSE NO. 698, COLONY RAJENDRAPURA 2. RESONENT WEALTH CONSLTENCY PVT LTD. 1/5 LANDMARK PERADISE PARISAR 33 K.V.A. GSS KE SAMENE LANDMARK CITY KUNHADI	10	6400	1.6
			8	6300	0.63
6.	सकतपुरा, लाडपुरा (कोटा)	RESONENT WEALTH CONSLTENCY PVT LTD. NIDESAK YOGESH SHARDA S/O KRISHAN DAS SARDA HIS.17/30 2. RESONENT WEALTH CONSELTENCY PVT. LTD. HIS.13/30 LANDMARD PERADISE PARISER	9	400	0.04
7.	सकतपुरा, लाडपुरा (कोटा)	RESONENT WEALTH CONSLTENCY PVT LTD. HISSA PURNA LANDMARK PARADISE PARISAR 33 K.V.A. GSS KE SAMENE LANDMARK CITY KUNHADI KOTA KHATEDAR	27	1000	0.01
8.	सकतपुरा, लाडपुरा (कोटा)	RESONENT WEALTH CONSLTENCY PVT LTD. AUTHORIIZED OFFICE OCF-69-331 V.T. ROAD MANSAROVAR JAIPUR(RAJ.) HISSA PURNA	54	8600	0.86
9.	सकतपुरा, लाडपुरा (कोटा)	RESONENT WEALTH CONSLTENCY PVT LTD. AUTHORIIZED OFFICE OCF-69-331 V.T. ROAD MANSAROVAR JAIPUR(RAJ.) NIDESAK GUNJA KUMARI JAIN D/O VARDHMAN JAIN CASTE MAHAJAN RESI. SADAR BAZAR BIJOLIYA DISTT. BHILWARA (RAJ.) HISSA PURNA	57	10000	1.0
10.	सकतपुरा, लाडपुरा (कोटा)	RESONENT WEALTH CONSLTENCY PVT LTD. AUTHORIIZED OFFICE OCF-69-331 V.T. ROAD MANSAROVAR JAIPUR(RAJ.) JARYA NIDESAK CHARANJEET KAUR D/O JAGTAR SINGH CASTE- SIKH RESIDENCE GRAM MADHEKE TEHSIL NIHAL SINGH WALA JILA MOGA PUNJAB HISSA PURNA KHATEDAR	50	700	0.07
			51	12600	1.26
			52	300	0.03
			53	2700	0.27
			56	500	0.05
				कुल	9.93

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमी के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने की अभीधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर अपनी एसएसओ आईडी से लॉग इन कर 90-A For Development Authority (UDH) आइकन पर जाकर समर्थक दस्तावेजों को अपलोड कर अपना आक्षेप दर्ज कर सकते हैं। उपयुक्त समय नियम समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जाएगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निपटारा किया जाएगा।

प्राधिकृत अधिकारी कोटा विकास प्राधिकरण (केडीए)

कार्यालय नगर निगम, कोटा-दक्षिण, कोटा, राजस्थान

क्रमांकः-ननिको-द./उपायुक्त जोन द्वितीय/भ.नि.अनु./2024/9755 दिनांक: 9.9.24

स्वामित्व हस्तांतरण बाबत सार्वजनिक विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती सरला तिवारी पत्नी श्री सुबोध तिवारी निवासी आवास संख्या 1-ए-46 महावीर नगर तृतीय कोटा दक्षिण द्वारा आवेदन प्रस्तुत कर भूखंड संख्या 6-बी-37 महावीर नगर तृतीय कोटा क्षेत्रफल 252 वर्गमीटर का स्वामित्व स्वयं के नाम हस्तांतरण करने का आवेदन किया है। भूखंड संख्या 6-बी-37 महावीर नगर तृतीय कोटा क्षेत्रफल 252 वर्गमीटर का उक्त भूखंड का लीज डीड का निष्पादन दिनांक 29.03.2004 को राजस्थान आवासन बोर्ड कोटा द्वारा किया गया है एवं नियमितिकरण व अदेय प्रमाण पत्र के पत्र क्रमांक ले/सा./वसूली/6667 दिनांक 15.03.2000 से श्री सुबोध कुमार तिवारी पुत्र स्व. श्री प्रमोद चन्द को किया गया है। श्री सुबोध कुमार तिवारी पुत्र स्व. प्रमोद चन्द की मृत्यु दिनांक 04.06.2021 को हो जाने के उपरांत उनके जीवित विधिक वारिसान सुश्री सिद्धया तिवारी पुत्री स्व. श्री सुबोध कुमार तिवारी के द्वारा रजिस्टर्ड हकत्याग पत्र दिनांक 31.03.2024 से अपना हक अपनी माता श्रीमती सरला तिवारी पत्नी स्व. श्री सुबोध कुमार तिवारी के पक्ष में त्याग दिया है। उक्त भूखंड संख्या 6-बी-37 महावीर नगर तृतीय आवेदक द्वारा प्रस्तुत आवेदन अनुसार नगर निगम कोटा दक्षिण उक्त भूखंड के स्वामित्व नाम हस्तांतरण की कार्यवाही की जा रही है।

उक्त भूखंड का स्वामित्व नाम हस्तान्तरण करने में किसी व्यक्ति, संस्था या अन्य किसी को भी उक्त भूखंड से संबंध रखता है, को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 07 दिवस में अपनी आपत्ति लिखित में उपायुक्त द्वितीय कक्ष में प्रस्तुत करें। बाद मियाद आपत्ति मान्य नहीं होगी।

उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण (राज.)

क्रमांकः-ननिकोद/जोन-प्रथम/भ.नि.अनु./2024/9692 दिनांक: 9.9.24

स्वामित्व हस्तांतरण बाबत सार्वजनिक विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्री धनराज गुप्ता पुत्र स्व. श्री श्रीनाथ गुप्ता निवासी भूखंड संख्या बी-298 तलवण्डी कोटा (राज.) ने नगर निगम कोटा दक्षिण में आवेदन प्रस्तुत कर भूखंड संख्या बी-298 तलवण्डी कोटा क्षेत्रफल 3600 वर्गफुट का स्वामित्व स्वयं के नाम हस्तांतरण करने का निवेदन किया है। भूखंड संख्या बी-298 तलवण्डी कोटा क्षेत्रफल 3600 वर्गफुट का आवंटन कार्यालय नगर विकास न्यास कोटा द्वारा पत्र क्रमांक एफ (8688)आवंटन/न.वि.न्या./71-72 दिनांक 11.07.1974 से श्री श्रीनाथ गुप्ता पुत्र श्री मांगी लाल गुप्ता को किया गया। श्री श्रीनाथ गुप्ता का देहावसान दिनांक 18.01.2008 को हो जाने के उपरांत श्री श्रीनाथ गुप्ता के विधिक वारिसान श्रीमती कमला देवी पत्नी स्व. श्री श्रीनाथ गुप्ता, श्रीमती मधु बाला झालानी पुत्री स्व. श्री श्रीनाथ गुप्ता पत्नी श्री राजेश झालानी एवं श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता पुत्र स्व. श्री श्रीनाथ गुप्ता ने जर्ये रजिस्टर्ड हक त्याग पत्र दिनांक 10.07.2024 से उक्त भूखंड में से स्वयं का हक श्री धनराज गुप्ता पुत्र स्व. श्री श्रीनाथ गुप्ता के पक्ष में त्याग दिया है। आवेदक द्वारा प्रस्तुत आवेदन अनुसार नगर निगम कोटा दक्षिण में उक्त भूखंड के स्वामित्व नाम हस्तान्तरण की कार्यवाही की जा रही है। उक्त भूखंड का स्वामित्व नाम हस्तांतरण करने में किसी व्यक्ति, संस्था या अन्य किसी को भी उक्त भूखंड से संबंध रखता है, को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस में अपनी आपत्ति लिखित में उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण कार्यालय में प्रस्तुत करें। बाद मियाद आपत्ति मान्य नहीं होगी।

उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण (राज.)

क्रमांकः-ननिकोद/जोन-प्रथम/भ.नि.अनु./2024/9760 दिनांक: 9.9.24

स्वामित्व हस्तांतरण बाबत सार्वजनिक विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती जतन झाबक पत्नी स्व. शान्ती लाल झाबक निवासी-39 वल्लभ नगर विस्तार कोटा (राज.) ने नगर निगम कोटा दक्षिण में आवेदन प्रस्तुत कर भूखंड संख्या-39 वल्लभ नगर विस्तार कोटा क्षेत्रफल 2400 वर्गफुट का आवंटन कार्यालय मण्डी कमेटी चम्बल सिंचाई परियोजना कोटा के क्रमांक 3989 दिनांक 25.11.1969 से श्री प्रभात त्यागी पुत्र श्री सत्यपाल त्यागी को किया गया। श्री प्रभात त्यागी पुत्र श्री सत्यपाल त्यागी ने श्री शान्ती लाल झाबक पुत्र श्री कंवर लाल को दिनांक 10.04.1992 से मुख्तारआम बनाया है। श्री शान्ती लाल झाबक पुत्र श्री कंवर लाल ने उक्त भूखंड एक वसीयतनामा दिनांक 17.12.2002 श्रीमती जतन झाबक के नाम वसीयत जारी की गई है। श्री शान्ती लाल झाबक की मृत्यु दिनांक 24.10.2002 को हो चुकी है। उनकी मृत्यु उपरांत उनके विधिक वारिसान श्रीमती जतन झाबक पत्नी स्व. शान्ती लाल झाबक है। श्रीमती जतन झाबक पत्नी स्व. शान्ती लाल झाबक के पक्ष में नाम हस्तांतरण की कार्यवाही की जानी है।

आवेदक द्वारा प्रस्तुत आवेदन अनुसार नगर निगम कोटा दक्षिण में उक्त भूखंड के स्वामित्व नाम हस्तान्तरण की कार्यवाही की जा रही है। उक्त भूखंड का स्वामित्व नाम हस्तांतरण करने में किसी व्यक्ति, संस्था या अन्य किसी को भी उक्त भूखंड से संबंध रखता है, को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस में अपनी आपत्ति लिखित में उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण कार्यालय में प्रस्तुत करें। बाद मियाद आपत्ति मान्य नहीं होगी।

उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण

रजत गृह निर्माण सहकारी समिति लि. बून्दी नैनवां रोड बून्दी (राज.)

क्र.सं. 2024/72 **आम सूचना** दिनांक-06.09.2024

यह आम सूचना इस आशय की प्रकाशित की जाती है कि रजत गृह निर्माण सहकारी समिति लिमिटेड बून्दी द्वारा श्रीमती शान्ति चारण पत्नी श्री एस.एस. चारण को आवासीय भूखंड संख्या 302 साईज 60'x40' का हस्तान्तरित किया गया। श्रीमती शान्ति चारण ने श्रीमती त्रिवेणी शर्मा पत्नी श्री श्याम बिहारी भारद्वाज के नाम दिनांक 24.06.2000 को विक्रय विलेख पंजीयन करा दिया गया था। लेकिन श्रीमती त्रिवेणी शर्मा ने तत्समय आवासीय भूखंड संख्या 302 को अपने नाम हस्तान्तिरित करवाने के लिए समिति कार्यालय में प्रार्थना पत्र पेश नहीं किया। श्रीमती त्रिवेणी शर्मा की मृत्यु दिनांक 11.09.2018 को व उनके पति श्री श्याम बिहारी भारद्वाज की मृत्यु दिनांक 01.04.2011 को हो जाने से उनके पुत्र श्री लोकेश बिहारी भारद्वाज ने रजिस्टर्ड हक परित्याग विलेख दिनांक 06.02.2024 के आधार पर आवासीय भूखंड संख्या 302 को अपने नाम करवाने के लिए दिनांक 29.06.2024 को प्रार्थना पत्र समिति कार्यालय में पेश किया है। इस बाबत यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति सूचना प्रकाशन की तिथि से अन्दर 15 योम समिति कार्यालय में लिखित में प्रस्तुत कर देवे बाद मियाद आपत्ति पर विचार नहीं किया जाकर आवेदन पत्र पर अग्रिम कार्यवाही की जावेगी।

(किरन कुमार नागर)
प्रशासक रजत गृह निर्माण सह. समिति लि. बून्दी

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण (राज.)

क्रमांकः-ननिकोद/जोन-प्रथम/भ.नि.अनु./2024/9754 दिनांक: 9.9.24

स्वामित्व हस्तांतरण बाबत सार्वजनिक विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्री जगदीश अग्रवाल पुत्र स्व. श्री बाबूलाल अग्रवाल निवासी-365 शोपिंग सेन्टर कोटा (राज.) ने नगर निगम कोटा दक्षिण में आवेदन प्रस्तुत कर भूखंड संख्या-365 शोपिंग सेन्टर कोटा क्षेत्रफल 1600 वर्गफुट का आवंटन कार्यालय मंडी कमेटी चम्बल सिंचाई परियोजना कोटा के क्रमांक 3961 दिनांक 25.11.1969 से श्री बी.एल. अग्रवाल पुत्र श्री मूलचन्द अग्रवाल को 99 वर्षीय पट्टेदारी पर बिक्री किया गया है। बी.एल. अग्रवाल पुत्र श्री मूलचन्द अग्रवाल की मृत्यु दिनांक 02.05.2008 को हो चुकी है। उनकी मृत्यु उपरांत उनके विधिक वारिसान श्री रमेश चन्द अग्रवाल पुत्र स्व. श्री बाबूलाल अग्रवाल ने अपना हिस्सा पंजीकृत हकत्याग पत्र दिनांक 08.12.2023 से अपना हक श्री जगदीश अग्रवाल पुत्र स्व. श्री बाबूलाल अग्रवाल के पक्ष में त्याग दिया है। श्री भगवान दास अग्रवाल पुत्र स्व. श्री बाबूलाल अग्रवाल ने अपना हिस्सा पंजीकृत हकत्याग पत्र दिनांक 07.05.2024 से अपना हक श्री जगदीश अग्रवाल पुत्र स्व. श्री बाबूलाल अग्रवाल के पक्ष में त्याग दिया है। श्रीमती कमला देवी पत्नी स्व. श्री बाबूलाल अग्रवाल ने अपने हिस्से की वसीयत पंजीकृत वसीयतनामा पत्र दिनांक 11.09.2012 से अपना हक श्री जगदीश अग्रवाल पुत्र स्व. श्री बाबूलाल अग्रवाल के पक्ष में की है। श्रीमती तारा अग्रवाल पुत्री स्व. श्री बाबूलाल अग्रवाल ने अपना हिस्सा पंजीकृत हकत्याग पत्र दिनांक 17.10.2013 से अपना हक श्री जगदीश अग्रवाल पुत्र स्व. श्री बाबूलाल अग्रवाल के पक्ष में त्याग दिया है। न्यायालय ADJ-1 द्वारा दीवानी वाद संख्या 166/2011 में पारित निर्णय दिनांक 09.05.2024 मकान संख्या 365 शोपिंग सेन्टर का एकमात्र स्वामी श्री जगदीश अग्रवाल को माना है। अतः न्यायालय निर्णय दिनांक 09.05.2024 एवं डिग्री दिनांक 09.05.2024 के आधार पर आवेदक श्री जगदीश अग्रवाल पुत्र स्व. श्री बाबूलाल अग्रवाल के पक्ष में नाम हस्तांतरण की कार्यवाही की जानी है।

आवेदक द्वारा प्रस्तुत आवेदन अनुसार नगर निगम कोटा दक्षिण में उक्त भूखंड के स्वामित्व नाम हस्तान्तरण की कार्यवाही की जा रही है। उक्त भूखंड का स्वामित्व नाम हस्तांतरण करने में किसी व्यक्ति, संस्था या अन्य किसी को भी उक्त भूखंड से संबंध रखता है, को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस में अपनी आपत्ति लिखित में उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण कार्यालय में प्रस्तुत करें। बाद मियाद आपत्ति मान्य नहीं होगी।

उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी नगरपरिषद क्षैत्र, झालावाड़ (आयुक्त न.परि. झालावाड़)

क्रमांक: भूमि रुपांतरण/2024/3428 **लोक सूचना** दिनांक: 9.9.24

आवेदक श्री घनश्याम पुत्र श्री श्रीलाल निवासी खानपुर हाइवे के पास पोस्ट बाघेर खेडली मीरा तह. खानपुर जिला झालावाड़ ने तहसील झालरापाटन जिला झालावाड़ ने इस कार्यालय में नीचे उल्लेखित कृषि भूमि का गैर-कृषिक फार्म हाउस प्रयोजनार्थ के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात-

जिले सहित तहसील का नाम	ग्राम का नाम	खसरा नं.	क्षेत्रफल
जिला झालावाड़ तहसील झालरापाटन	ग्राम मुण्डेरी तह. असनावर	647/291 649/292 651/295	0.6676 हेक्टेयर
		कुल किता 3	6676 वर्गमीटर

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त, प्रयोजनों के लिये भूमि के आवासीय उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निपटारा कर दिया जावेगा।

यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक.........को जारी की गयी।

प्राधिकृत अधिकारी नगर परिषद क्षैत्र झालावाड़ (आयुक्त नगरपरिषद झालावाड़)

राजस्थान आवासन मण्डल कोटा वृत्त कोटा

क्रमांक 3359 **जाहिर आम सूचना** दिनांक - 5.9.24

आवास संख्या 2-क्यू-11 महावीर नगर तृतीय कोटा का आवंटन मंडल द्वारा श्री बिरधी लाल सेन पुत्र श्री रामगोपाल सेन को किया गया था। इस आवास का नियमितिकरण श्री रमेश चन्द पुत्र श्री भँवर लाल के नाम दिनांक 24.02.2007 को किया गया। इस आवास का पंजीयन श्री रमेश चन्द पुत्र श्री भँवर लाल द्वारा दिनांक 05.12.2011 को अपने पक्ष में करवाया गया। मृत्यु प्रमाण पत्र के आधार पर श्री रमेश चन्द पुत्र श्री भँवर लाल की मृत्यु दिनांक 23.12.2015 को हो चुकी है। इनकी मृत्यु उपरांत इनके वारिसानों में श्रीमती दीप्ती सेन पुत्री स्व. श्री रमेश चन्द सेन पत्नी श्री लाल चन्द सेन, श्री अंजूला सेन पुत्री स्व. श्री रमेश चन्द सेन पत्नी श्री हरिशंकर सेन, श्रीमती किरण सेन पुत्री स्व. श्री रमेश चन्द सेन पत्नी श्री घनश्याम सेन, श्रीमती निशा सेन पुत्री स्व. श्री रमेश चन्द सेन पत्नी श्री उमेश कुमार सेन एवं मेहा सेन पुत्री स्व. श्री रमेश चन्द सेन द्वारा उक्त आवास में निहित अपने अविभाजित हिस्से का त्याग जरिये रिलीज डीड (हक त्याग पत्र) आलेखित कर दिनांक 20.06.2024 को श्रीमती रुकमणी देवी पत्नी स्व. श्री रमेश चन्द सेन के पक्ष में किया गया। श्रीमती रुकमणी देवी पत्नी स्व. श्री रमेश चन्द सेन द्वारा इस कार्यालय में प्रतिवेदन प्रस्तुत कर आवास संख्या 2-क्यू-11 महावीर नगर तृतीय कोटा को उक्त आवास का हस्तांतरण/प्रतिस्थापन आवेदन पत्र, क्षतिपूर्ति बन्धक पत्र, शपथ पत्र, घोषणा पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र रिलीज डीड (हक त्याग पत्र) के आधार पर करने हेतु आवेदन किया गया।

अतः उक्त आवास का हस्तांतरण/प्रतिस्थापन आवेदन पत्र, क्षतिपूर्ति बन्धक पत्र, शपथ पत्र, घोषणा पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र एवं रिलीज डीड (हक त्याग पत्र) के आधार पर श्रीमती रुकमणी देवी पत्नी स्व. श्री रमेश चन्द सेन के नाम करने में किसी भी पक्षकार/व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर इस कार्यालय को सूचित करें। अन्यथा यह मानते हुये कि उक्त आवास का हस्तांतरण/प्रतिस्थापन श्रीमती रुकमणी देवी पत्नी स्व. श्री रमेश चन्द सेन के नाम किये जाने में किसी भी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति नहीं है। उक्त आवास का हस्तांतरण/प्रतिस्थापन श्रीमती रुकमणी देवी पत्नी स्व. श्री रमेश चन्द सेन के नाम कर दिया जावेगा।

उप आवासन आयुक्त राजस्थान आवासन मण्डल, कोटा वृत्त कोटा

राजस्थान आवासन मण्डल कोटा वृत्त कोटा

क्रमांक 3403 **जाहिर आम सूचना** दिनांक - 9.9.24

व्यवसायिक भूखंड संख्या 18 सेक्टर-5 महावीर नगर तृतीय कोटा का आवंटन मंडल द्वारा श्री मदनलाल नागर पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण नागर को किया गया था। इस व्यवसायिक भूखंड का पंजीयन श्री मदनलाल नागर पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण नागर द्वारा दिनांक 25.08.2009 को अपने पक्ष में करवाया गया। पंजीयन उपरांत श्री मदनलाल नागर पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण नागर द्वारा उक्त व्यवसायिक भूखंड का बेचान जरिये विक्रय पत्र आलेखित कर दिनांक 25.08.2009 को श्रीमती कमला शर्मा पत्नी श्री कृष्ण गोपाल शर्मा को किया गया। श्रीमती कमला शर्मा पत्नी श्री कृष्ण गोपाल शर्मा का नाम दिनांक 03.04.2013 को विक्रय पत्र के आधार पर मंडल अभिलेख में दर्ज किया गया। तत्पश्चात श्रीमती कमला शर्मा पत्नी श्री कृष्ण गोपाल शर्मा द्वारा उक्त व्यवसायिक भूखंड का बेचान जरिये विक्रय पत्र आलेखित कर दिनांक 30.01.2024 को श्री नरेन्द्र कुमार लोधा पुत्र श्री नाथू लाल लोधा को किया गया। श्री नरेन्द्र कुमार लोधा पुत्र श्री नाथू लाल लोधा द्वारा इस कार्यालय में प्रतिवेदन प्रस्तुत कर व्यवसायिक भूखंड संख्या 18 सेक्टर-5 महावीर नगर तृतीय कोटा को विक्रय पत्र के आधार पर अपना नाम व्यवसायिक भूखंड के मंडल अभिलेख में दर्ज करने हेतु आवेदन किया गया है।

अतः उक्त व्यवसायिक भूखंड के मंडल अभिलेख में विक्रय पत्र के आधार पर श्री नरेन्द्र कुमार लोधा पुत्र श्री नाथू लाल लोधा का नाम दर्ज करने में किसी भी पक्षकार/व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर इस कार्यालय को सूचित करें। अन्यथा यह मानते हुये कि उक्त व्यवसायिक भूखंड के मंडल अभिलेख में विक्रय पत्र के आधार पर श्री नरेन्द्र कुमार लोधा पुत्र श्री नाथू लाल लोधा का नाम दर्ज किये जाने में किसी भी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति नहीं है। उक्त व्यवसायिक भूखंड के मंडल अभिलेख में विक्रय पत्र के आधार पर श्री नरेन्द्र कुमार लोधा पुत्र श्री नाथू लाल लोधा का नाम दर्ज कर दिया जावेगा।

उप आवासन आयुक्त राजस्थान आवासन मण्डल, कोटा वृत्त कोटा

रेगिस्तान में भारत और अमेरिकी सेना का युद्धाभ्यास शुरु

दुश्मन के ड्रोन अटैक से बचाव का सीखेंगे तरीका

बीकानेर। यहां महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में सोमवार को भारत और अमेरिका की सेना का संयुक्त युद्धाभ्यास शुरू हुआ। इसमें पहली बार अमेरिका के हाई मोबिलिटी आर्टिलरी रॉकेट सिस्टम का प्रदर्शन किया जा रहा है। इस आर्टिलरी की मारक क्षमता 310 किलोमीटर है। यूक्रेन वॉर के दौरान इसी सिस्टम से रूसी गोला-बारूद ढेर किए गए थे।

महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में यह अब तक का सबसे बड़ा युद्धाभ्यास है। इसमें भारत-अमेरिका के कुल 1200 सैनिक हिस्सा ले रहे हैं। आज सुबह करीब 10:30 बजे परेड समारोह के साथ युद्धाभ्यास का आगाज हुआ। दोनों देशों के झंडों को फहराया गया। युद्धाभ्यास में भारत की साउथ वेस्टर्न कमांड के 600 और अमेरिका के 600 जवान हिस्सा ले रहे हैं। दोनों देशों के जवान मिलकर 15 दिन तक दुश्मन को घेरकर मारने सहित कई रणनीतियों का अभ्यास करेंगे। इस दौरान एयरबोर्न और हेलीबोर्न ऑपरेशन को अंजाम दिया जाएगा। गांव में छिपे आतंकियों को खोजकर मारने के अलावा ड्रोन हमलों से बचाव का भी अभ्यास किया जाएगा।

महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में भारत और अमेरिका की सेना का संयुक्त युद्धाभ्यास शुरू होने के अवसर पर सेल्फी लेते सैनिक।

इस युद्धाभ्यास का उद्देश्य दोनों सेनाओं की आंतरिक क्षमता को बढ़ाना और जरूरत पड़ने पर एक साथ काम करने की संभावनाओं को मजबूत करना है। संयुक्त अभियान में कई सैन्य रणनीति और जॉइंट एक्सरसाइज शामिल हैं, जिसका उद्देश्य एक-दूसरे देश की विशेषताओं और क्षमताओं का आदान-प्रदान है। यह अभ्यास भारत और अमेरिका के बीच बढ़ ते रक्षा संबंधों को देखते हुए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। युद्धाभ्यास का मुख्य आकर्षण अमेरिकी सेना का हाई मोबिलिटी आर्टिलरी रॉकेट सिस्टम है। इस सिस्टम का उपयोग यूक्रेन में रूस के खिलाफ हो चुका है। इसे सी-130 विमान पर ले जाना आसान है। मात्र 20 सेकेंड में रॉकेट तैयार किए जा सकते हैं। 45 सेकेंड के भीतर सभी रॉकेट दागे जा सकते हैं। ये छह मल्टीपल-लॉन्च रॉकेट सिस्टम के

■ अमेरिकी रॉकेट सिस्टम है मुख्य आकर्षण

साथ एक ही पॉड में समाहित हैं।

इसकी मारक क्षमता करीब 310 किलोमीटर तक है। आर्मी टैक्टिकल मिसाइल के रूप में जाना जाता है। यूक्रेन में 2022 में युद्ध के दौरान इस सिस्टम को रूसी लक्ष्यों के खिलाफ बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया था।कई रूसी कमांड पोस्ट, गोला-बारूद भंडारण, सैनिकों और बख्तरबंद वाहनों के जमावड़े तथा पुलों को सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया था, जिनमें से कई अग्रिम पंक्तियों से बहुत दूर थे।

यह सिस्टम लंबी दूरी तक सटीक हमले करने में सक्षम है। अभ्यास के दौरान भारत अपनी नई पीढ़ ी की हथियार प्रणाली का प्रदर्शन भी करेगा। संयुक्त सैन्य अभियानों में अत्याधुनिक तकनीक को एकीकृत करने पर जोर दिया गया है। ऐसा 20वीं बार हो रहा है, जब दोनों देशों की सेना एक साथ मिलकर हथियारों को चलाने का अभ्यास कर रही हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के आदेश के बाद दोनों देशों ने साथ में अभ्यास शुरू किया था। एक बार भारत और एक बार अमेरिका में होने वाले इस युद्धाभ्यास में दोनों देशों के जवान हिस्सा लेते हैं।

महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में इससे पहले युद्धाभ्यास का 16वां संस्करण फरवरी 2021 में हुआ था। भारत जहां इस युद्धाभ्यास में स्वदेशी हथियारों का प्रदर्शन करेगा, वहीं अमेरिका अपने सर्वश्रेष्ठ हथियारों की शृंखला से रूबरू करवाएगा।

अभ्यास के दौरान अमेरिकी जवान गर्मी से परेशान दिखे। तीन-चार जवानों को परेड के बीच में से ही बाहर लेकर जाया गया। परेड स्थल के पास ही पेड़ की छांव में जवानों का इलाज किया गया। दोनों देशों के जवान अब रोज सुबह उठने से लेकर रात को सोने से पहले तक युद्धाभ्यास में ही रहेंगे। सुबह जवान वॉक और रन करेंगे। इसके अलावा सुबह फायरिंग और आर्टिलरी ट्रेनिंग होगी। भारत की 9 राजपूत इंफेंट्री सेना है। अमेरिका की सेना एयर बोर्न 1-24 आर्कटिक डिवीजन है, जिनके हथियार माइनस 50 डिग्री सेल्सियस तापमान में युद्ध कौशल दिखाने में सक्षम हैं।

पेटीज शॉप के संचालक की लाश मिलने से सनसनी फैली

भीलवाड़ा में पेटीज शॉप के संचालक का शव बरामद हुआ।

मृतक ईश्वर कुशलानी

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षेत्र स्थित मानसरोवर झील मेंसोनू पेटीज शॉप के लापता संचालक की लाश मिलने से क्षेत्र में सनसनी फेल गई। परिजनों का आरोप है कि ईश्वर उर्फ सोनू सूदखोरों से परेशान था। उसे जान से मारने की धमकियां मिल रही थी।

पुलिस के अनुसार सोमवार सुबह करीब 8 बजे लोगों ने मानसरोवर झील में एक व्यक्ति की लाश देखकर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर रेस्क्यू टीम की मदद से लाश को झील से निकलवाया। यह शव तीन दिन पुराना था। मौके पर एक स्कूटी भी तीन दिन से खड़ी मिली। शव को एमजी अस्पताल की मोर्चरी भिजवा दिया गया। उधर, कोतवाली सर्किल से लापता पेटीज शॉप संचालक ईश्वर कुशलानी उर्फ सोनू सिंधी की पत्नी सहित अन्य समाजजन मोर्चरी पहुंचे, उन्होंने शव की पहचान सोनू के रूप में की। इस बीच, मोर्चरी पर बड़ी संख्या में सिंधी समाज

■ मृतक सूदखोरों से परेशान था, उसे जान से मारने की धमकियां मिल रही थी

के लोग जुट गये। समाजसेवी हरीश मानवानी ने कहा कि सोनू शहर में ही एमएलवी कॉलेज सर्किल क्षेत्र में पेटीज शॉप चलाता था। ईश्वर शुक्रवार सुबह घर से शॉप के लिए निकला था, जो दोपहर ढाई बजे शॉप से निकल गया। इसके बाद 5.40 बजे ईश्वर को उसकी पत्नी गायत्री ने मोबाइल पर कॉल किया तो ईश्वर ने कॉल डिस्कनेक्ट कर दिया।

गायत्री ने शॉप पर पता किया तो जानकारी मिली कि वह दोपहर ढाई बजे शॉप से निकल गया था। इसके बाद ईश्वर न तो शॉप पर लौटा न ही घर। इसके चलते शनिवार को गायत्री ने गुमशुदगी की रिपोर्ट कोतवाली थाने में दर्ज करवाई थी। हरीश ने कहा कि सोनू को सूदखोर परेशान कर रहे थे। यहां तक की उसे मारने की धमकियां भी मिल रही थी। ऐसे में आशंका है कि सोनू ने इन्हीं धमकियों से परेशान होकर खुदकुशी की है। पुलिस ने बताया की एक बेटे का पिता था। उसका बेटा अभी तीन साल का है। वह, पत्नी और बेटे के साथ वैभव नगर में रह रहा था। ईश्वर की मौत को लेकर उसके मामा प्रकाश ने प्रताप नगर थाना पुलिस को रिपोर्ट दी।प्रकाश ने उक्त घटनाक्रम का हवाला देते हुये रिपोर्ट में बताया कि ईश्वर कुछ समय से काफी परेशान था। ईश्वर की पत्नी ने बताया कि उसके पति को कुछ लोग पैसे व ब्याज के कारण परेशान कर रहे थे। इसी से परेशान होकर ईश्वर ने फोन बंद कर लिया। इसके बाद आज उसकी लाश मिली। पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है।

आसाराम बापू पैरोल पूरी कर जोधपुर लौटे

जोधपुर, (कासं)। अपने ही आश्रम की नाबालिग छात्रा के साथ यौन शोषण के मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहे आसाराम बापू अपनी पैरोल खत्म कर आज वापस जोधपुर सेंट्रल जेल पहुंच गये। आसाराम बापू 11 साल में पहली बार 14 दिन जेल से बाहर रहे । उपचार के बाद सोमवार को आसाराम बापू वापस जोधपुर लौट आये है। मुंबई से जोधपुर की फ्लाइट से लौटे आसाराम बापू को कड़ी सुरक्षा के साथ वापस एयरपोर्ट से जेल ले जाया गया। आज भी आसाराम बापू को प्लेन से नीचे उतरने के बाद एक विशेष वाहन से गेट तक लाया गया और एंबुलेंस में शिफ्ट किया गया। इस दौरान उसे देखने आए उसके साधकों को एक फिर निराशा हाथ लगी।

आसाराम बापू को गत 24 अगस्त को ले जाया गया था। पांच दिन की पैरोल बढ़ाई गई थी। सोमवार को मुंबई से जोधपुर आते समय आसाराम बापू के भक्त बढ़ी संख्या में फ्लाइट में थे जो बार-बार उसके पास जाकर उसका आशीर्वाद ले रहे थे। इस दौरान जोधपुर पुलिस के जवान उनको रोकने का प्रयास करते नजर आए। बता दें कि आसाराम बापू को 13 अगस्त को राजस्थान हाईकोर्ट ने सात दिन की पैरोल दी थी और पैरोल की अवधि को हॉस्पिटल में पहुंचने के समय से गिना गया था। आसाराम बापू अपने खर्च पर अपना इलाज करवाया ।

आसाराम बापू को सितंबर 2013 में इंदौर से जोधपुर पुलिस गिरफ्तार करके लेकर आई थी। इसके बाद से जोधपुर जेल में ही है। गिरफ्तारी के बाद करीब पांच साल लंबी ट्रायल चली। इस दौरान आसाराम बापू को जेल से कोर्ट लाया जाता था। 2018 में फैसला आने के बाद कोर्ट आना भी बंद हो गया। सिर्फ इलाज के लिए अस्पताल लाया गया।

जलभराव से घरों में कैद हुए लोग

अजमेर, (कासं)। अजमेर शहर में हुई लगातार बरसात से हुए जलभराव के चलते शहर के दक्षिण व उतर विधानसभा क्षेत्र मे बने बाढ़ जैसे हालातों से कई कॉलोनियों में ऐसी स्थिति है कि लोग घरों में कैद हो गए हैं। चौथे दिन भी कुछ कॉलोनियों सहित मुख्य मार्गों पर जलभराव के कारण समस्या गंभीर बनी हुई है। कॉलोनियों में पानी का निकास नहीं होने के कारण सडकों पर पानी भर गया है, जिससे लोग अपने घरों से बाहर निकलने में असमर्थ हैं। शहर की फॉयसागर झील की पाल में रिसाव के चलते खतरा पैदा हो गया है। सेना ने फॉयसागर सहित पानी निकासी के कई इलाकों का जायजा लिया। सिविल डिफेंस और एसडीआरएफ को 24 घंटे अलर्ट पर रखा गया है। जलभराव वाली कॉलोनियों में मौसमी बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। चौथे दिन भी शहर की अधिकांश कॉलोनियों में पानी की निकासी नहीं होने के कारण बारिश के पानी ने पूरे इलाके को घेर लिया है।

यूपीआई धोखाधड़ी : तेलंगाना पुलिस ने राजस्थान से 13 लोगों को किया गिरफ्तार

हैदराबाद। तेलंगाना साइबराबाद पुलिस ने 4 करोड़ रुपये के यू.पी.आई. धोखाधड़ी में शामिल 20-25 साल की उम्र के 13 सदस्यीय गिरोह को राजस्थान से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने केपीएचबी पुलिस, माधापुर और नरसिंगी पुलिस की मदद से रविवार को राजस्थान से गिरोह के सदस्यों को पकड़ा। साइबराबाद के पुलिस उपायुक्त के नरसिम्हा ने सोमवार को यहां एक विज्ञप्ति में बताया कि यह गिरोह हाई-टेक यूपीआई धोखाधड़ी और धोखाधड़ी योजनाओं में शामिल था।

इस गिरोह के सदस्यों ने एक प्रतिष्ठित व्यापारिक प्रतिष्ठान मेसर्स बजाज इलेक्ट्रॉनिक्स को लगभग 04 करोड़ रुपये का चूना लगाया। उन्होंने बताया कि पकड़े गए आरोपियों के पास से 1.72 लाख रुपये की नकदी के अलावा 50 लाख रुपये के इलेक्ट्रॉनिक सामान भी जब्त किए गए हैं। साइबराबाद, हैदराबाद और राचकोंडा कमिश्नरेट के साथ-साथ तेलंगाना राज्य के अन्य महानगरीय शहरों के विभिन्न थानों में कई धोखाधड़ी और धोखाधड़ी के मामले दर्ज किए गए हैं, जिनमें सभी बजाज इलेक्ट्रॉनिक्स से जुड़े थे और कुल मिलाकर 04 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ। उन्होंने बताया कि बजाज इलेक्ट्रॉनिक्स से सूचना मिलने पर शमशाबाद सीसीएस पुलिस और केपीएचबी पुलिस, माधापुर और नरसिंगी पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

उन्होंने बताया कि जांच में पता चला कि राजस्थान के कुछ लोग शोरूम में गए थे और महंगे इलेक्ट्रॉनिक्स खरीदे थे। गिरोह में शामिल लोग शोरूम के यूपीआई स्कैनर को राजस्थान के एक साथी के साथ साझा करते थे, जो शोरूम में पैसे ट्रांसफर करता था। माल की डिलीवरी लेने के बाद साथी बैंक में चार्जबैक शिकायत दर्ज कराता था, जिससे लेन-देन उलट जाता था और पैसा गिरोह के खाते में वापस आ जाता था। इन मामलों में सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है और उन्हें न्यायिक हिरासत के लिए अदालत में पेश किया गया।

सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) सीसीएस शशांक रेड्डी और कलिंग राव के मार्गदर्शन और पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) अपराध के. नरसिम्हा की देखरेख में एम. पवन (पुलिस निरीक्षक), डीआई केपीएचबी, डीआई नरसिंगी और डीआई मदापुर के नेतृत्व में शमशाबाद सीसीएस टीम ने साइबराबाद के पुलिस आयुक्त अविनाश मोहंती के निर्देश पर आरोपियों को गिरफ्तार किया और चोरी की गई संपत्ति बरामद की। साइबराबाद के पुलिस आयुक्त ने टीम की सराहना की और उनके सराहनीय कार्य के लिए उन्हें उचित रूप से पुरस्कृत किया गया।

विवाहिता ने इच्छा मृत्यु की मांग की

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षेत्र में रहने वाली एक विवाहिता ने जिला पुलिस अधीक्षक को शिकायत देते हुए इच्छा मृत्यु की मांग की है। दरअसल इस महिला ने दीपक शर्मा नाम के एक युवक से प्रेम विवाह किया था। जिसका खामियाजा अब इसे प्रताड़नाओं को सह कर भुगतना पड़ रहा है।

जानकारी के अनुसार बापू नगर क्षेत्र में रहने वाली वर्षा कुमारी ने जिला पुलिस अधीक्षक को दी शिकायत में बताया की करीब 3 वर्ष पूर्व दीपक शर्मा पुत्र ओमप्रकाश शर्मा से उसने प्रेम विवाह किया था। वह दीपक की संतान को जन्म देने वाली थी तभी उसके पिता ओमप्रकाश, भाभी कमला, बहन गायत्री और उसके दोस्त सुनील पारीक ने उस पर गर्भपात करने का दावा बनाया और धमकियां दी। लेकिन वह पीछे नहीं हटी और उसने बच्चे को जन्म दिया। बच्चों का नाम रुद्राक्ष रखा गया। जन्म के बाद भी दीपक और उसके परिवार के लोगों की प्रताड़ना कम नहीं हुई। लगातार वर्षा के साथ मारपीट और नवजात शिशु को मारने की धमकियां उसे मिलती रही। वजह थी दीपक का वर्षा के गर्भवती होने के दौरान अन्य किसी महिला के संपर्क में आ जाना। अन्य किसी महिला

भीलवाड़ा की विवाहिता ने एसपी को इच्छा मृत्यु का ज्ञापन दिया।

से संबंधों के चलते दीपक प्रेम विवाह करके लाई गई वर्षा के साथ मारपीट और सौतेला व्यवहार करने लगा।

उसके परिवार के लोगों ने भी प्रातनाओं में कमी नहीं छोड़ी। इन सबसे परेशान होकर वर्षा ने दहेज प्रताड़ना का केस दर्ज करवा दिया लेकिन फिर भी उसकी तकलीफ काम नहीं हुई। वह अपने हक की लड़ाई के लिए दर-दर भटक ही रही थी कि इस दौरान दीपक ने सोची समझी साजिश के तहत खुद को चाकू से घायल कर इसका इल्जाम वर्षा पर लगा दिया। दीपक वर्षा से मकान खाली करवाना चाहता था और अपनी नशे की लत को पूरा करने के लिए उसे पैसे की मांग करता था। क्योंकि वर्षा एक वर्किंग वुमन है और इसी का फायदा उठाकर वह उससे पैसे ऐठना चाहता था। लेकिन जब उसने दीपक की मांगों को नहीं माना तो एक षड्यंत्र के तहत उसे प्रताड़ित किया गया और झूठे मुकदमे में फंसा कर परेशान किया जा रहा है। इस संबंध में वर्षा ने जिला पुलिस अधीक्षक को एक शिकायत देते हुए न्याय की गुहार लगाई है। वर्षा का कहना है कि यदि प्रशासन उसे न्याय नहीं दिला सकता तो उसे और उसे उसके बच्चे को इच्छा मृत्यु की अनुमति दे दे, क्योंकि अब वह इन प्रताड़नाओं से तंग आ चुकी है। न्याय के लिए दर दर भटक रही है लेकिन पुलिस और प्रशासनिक अमला उसकी कोई मदद नहीं कर पा रहा।

मंत्री भूपेंद्र यादव ने भर्तृहरि लक्खी मेले का उद्घाटन किया

अलवर। महाराजा भतृहरि की तपोस्थली भतृहरि धाम में हर वर्ष भरने वाले लखी मेले के उद्घाटन अवसर पर पहुंचे केंद्रीय पर्यावरण वन एवं जलवायु मंत्री भूपेंद्र यादव के सामने क्षेत्रीय विधायक व राजस्थान सरकार में प्रतिपक्ष नेता टीकाराम जूली ने सरिस्का अभ्यारण के नाम को बदलकर भतृहरि अभयारण्य कराने की बड़ी मांग रख सबको चौंका दिया।

केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा भतृहरि धाम जन-जन की आस्था का केंद्र है। महाराजा भतृहरि जी तीन अलग-अलग किताबें लिखी हैं जिसमें एक किताब में आदमी सामाजिक जीवन जीना चाहिए। दूसरी राजनीतिक आदमी कैसा हो इस पर लिखी है और तीसरी किताब जो है ईश्वर को कैसे पाया जाता है यह उन्होंने वैराग्य में लिखा है। इसलिए राजनीति से ऊपर उठकर कम करें क्योंकि सबका मालिक एक है और इसके आगे हम सब सेवक हैं। भूपेंद्र यादव ने कहा जन-जन की आस्था के केंद्र भतृहरि धाम को विकसित करने के लिए राजस्थान सरकार ने बजट में अपने

भर्तृहरि धाम पर लक्खी मेले के उद्घाटन के अवसर पर केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने सम्बोधित किया।

बजट घोषणा के अंदर भतृहरि धाम को विकसित करने का रखा है। उन्होंने कहा यह स्थान वनों के बीच है चारों ओर हरियाली हरियाली है पहाड़ है। इससे इस स्थान का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा राजनीति से ऊपर उठकर सबको साथ लेकर सबके सहयोग से भतृहरि धाम को विकसित करने का काम किया जाएगा। भूपेंद्र यादव ने कहा चुनाव प्रचार के दौरान भतृहरि धाम पर आशीर्वाद लेने के लिए आए थे और परिणाम सुखद मिले चुनाव जीत और अब मेले के अवसर पर आया हूं। उन्होंने कहा सरिस्का को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक की है जिसमें विकास के मुद्दों पर चर्चा की गई है। इस अवसर पर राजस्थान सरकार में वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने केंद्रीय मंत्री सहित अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा भतृहरि धाम जन-जन की आस्था का केंद्र है। इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता पूर्व अध्यक्ष संजय नरूका जिला प्रमुख बलबीर छिल्लर महापौर घनश्याम गुर्जर बन्ना राम मीणा जयराम जाटव सहित भाजपा नेता मौजूद रहे।

सभी आस्थाओं और विश्वासों का संगम स्थल है रामदेवरा : बिरला

जैसलमेर/पोकरण, (नि.सं.)। जिले के रामदेवरा के प्रवास पर आए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सोमवार को बाबा रामदेव की समाधि के दर्शन किए। बिरला 1.5 कि.मी. तक पदयात्रा करते हुए बाबा के धाम पहुंचे और पूजा अर्चना कर देश में खुशहाली की कामना की।

बिरला ने कहा कि राजस्थान ही नहीं बल्कि देशभर के असंख्य श्रद्धालुओं की आस्था के केंद्र रामदेवरा में बाबा के दर्शन के लिए आना मेरे लिए सुखद क्षण है। बाबा रामदेव जी की महिमा अपरंपार है, उनका जीवन हम सभी के लिए एक उज्ज्वल प्रेरणा है। उनका आशीर्वाद सदैव हम पर बना रहे और हम उनके आदर्शों पर चलते हुए एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें। सर्वधर्म सद्भाव के प्रतीक बाबा रामदेव जी ने सामाजिक भेदभाव का विरोध करते हुए असहायों को सशक्त बनाने में जीवन समर्पित किया। उनके आदर्श हमारे प्रेरक मार्गदर्शक हैं। हम सभी उनके आदर्शों का पालन करें और समाज में समरसता, एकता, और भाईचारे का संदेश फैलाएं। बाबा रामदेव जी का जीवन केवल एक संत या महापुरुष का जीवन नहीं था, बल्कि वह एक ऐसे लोकदेवता हैं जिन्होंने अपने जीवन के माध्यम से समाज में क्रांति और सुधार का संदेश दिया। बिरला के साथ ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर और ओएसडी राजीव दत्ता भी मौजूद रहे।

रामदेवरा स्थित बाबा रामदेव की समाधि के दर्शन लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने किये।

मेघवाल समाज ने किया सम्मान :- रामदेवरा में स्पीकर ओम बिरला मेघवाल समाज के सम्मान समारोह में शामिल हुए। बाबूलाल मेघवाल के नेतृत्व में उनका समाजजनों ने स्वागत किया। बिरला ने कहा कि बाबा रामदेव जी का मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है, बल्कि यह उन सभी आस्थाओं और विश्वासों का संगम स्थल है, जो एकता, प्रेम और भाईचारे का प्रतीक है। इस यात्रा के दौरान जाति, धर्म, और भेदभाव की सभी सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं। यह बाबा रामदेव जी की महानता का प्रतीक है, जो लोगों को आपस में जोड़ती है।

इसके पूर्व हैलिपेड पर पहुंचने पर जनप्रतिनिधियों व प्रबुद्धजनों द्वारा स्पीकर बिरला का भव्य स्वागत किया गया। जिला कलक्टर प्रताप सिंह व एसपी सुधीर चौधरी ने आगवानी की। बिरला को परम्परागत साफा और माल्यार्पण कर अभिनंदन किया गया। इस दौरान सांसद उम्मेदाराम बेनीवाल, विधायक महंत प्रतापपुरी महाराज, छोटू सिंह भाटी, जिला प्रमुख प्रताप सिंह, जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश शारदा, पूर्व विधायक सांग सिंह भाटी, प्रदेश मंत्री आईदान सिंह भाटी जैसलमेर पालिका चेयरमैन हरिवल्लभ कल्ला, मनीष पुरोहित, प्रधान भगवत सिंह तंवर, सरपंच समंदर सिंह तंवर सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

कार्यालय नगरपालिका नसीराबाद, जिला अजमेर (राज.)

क्रमांक :- न.पा.ना./निर्माण/2024-25/1575 दिनांक :- 05/09/2024

ई-निविदा सूचना संख्या (09/2024-25) (NIB NUMBER - DLB2425A2376)

एतद्द्वारा यह है कि राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यों के लिए राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में मोहरबन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर भी उपलब्ध हैं एवं किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय में आकर देखी जा सकती है।

निविदा के कुल कार्य – 03 (तीन)

UBN NO. :- 1. DLB2425WSRC07590, 2. DLB2425WSRC07591 3. DLB2425WSRC07592

अधिशासी अधिकारी
नगरपालिका नसीराबाद

राज.संवाद/सी/24/4923

कार्यालय नगरपालिका रामगंजमण्डी जिला-कोटा (राज0)

क्रमांक : न.पा.रा./2024/305 दिनांक 09.09.2024

ई-निविदा सूचना 05/2024-25

नगरपालिका रामगंजमंडी द्वारा कार्यो हेतु पालिका में पंजीकृत एवं विभागों में AA,A,B, Class एवं उपयुक्त श्रेणी संवेदको से लिफाफा पद्धति/ई-निविदा पद्धति से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्य की निविदा बेचे जाने की दिनांक 10.09.2024 से 23.09.2024 एवं अपलोड करने की दिनांक 10.09.2024 से 23.09.2024 सांय 6 बजे तक। ई.एम.डी./ निविदा शुल्क/प्रोसेसिंग फीस प्राप्त करने की तिथि : 24.09.2024 समय 11.00 बजे तक। तकनीकी बिड खोलने कि दिनांक 24.09.2024 को दोप. 2.00 बजे के बाद रहेगी। वित्तीय बिड तकनीकी परीक्षण उपरांत खोली जावेगी। निविदा शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण http//sppp.raj.nic.in, http//eproc.rajasthan.gov.in देखी जा सकती है।

NIB – DLB2425A2428 UBN – DLB2425WSOB07708

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका रामगंजमण्डी

राज.संवाद/सी/24/4958

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PWD DIVISION KARAULI

Address-Near old Collectorate Circle Karaull
E-Mail:-EEPWD.KARAULI@RAJASTHAN.GOV.IN

No- 2104-2117 Date: 05-09-2024

Notice Inviting Bid

Bid (E-NIT No. 04/2024-25) for Consultancy Work "Consultancy Work for Preparation of Detailed Project Report(DPR) For Construction of 4 lane High level bridge on Karauli Hindaun road SH-22 & Byepass at Karauli including Land Acquisition & Forest Clearance" are invited from Registard & Interested bidders up to 6.00 PM on 06.09.2024 to 17.09.2024 procurement portal (http://eproc. rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state departmental website may be Visited for Other Details of Bid. The approximate value of the procurement is Rs. 125.00 lacs.

NIB CODE- PWD2425A1447
UBN No. PWD2425SLOB05194

(Chandra Prakash)
Executive Engineer PWD
Division Karauli

DIPR/C/8422/2024

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता जन स्वा.अभि. विभाग, ग्रामीण खण्ड सलूम्बर

फोन नं.-02906-232823, E-Mail-eephedsalumber@gmail.com

क्रमांक : अश/सतु./लेखा/2024-25/ दिनांक :-

ई-निविदा सूचना संख्या 08-11 वर्ष 2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नहस्ताक्षरकर्ता द्वारा निम्नलिखित कार्य करने हेतु सक्षम श्रेणी में पंजिकृत अनुभवी ठेकेदारों से ओनलाइन निविदाए आमंत्रित की जाती है निविदाए इस कार्यालय समय में दिनांक 04.09.2024 से दिनांक 18.09.2024 को 6.00 बजे तक विकय की जा कर दिनांक 19.09.2024 को दोपहर 1 बजे ओनलाइन खोली जावेगी।

राजस्थान उपापन में पारदर्शिता नियम 2013 के तहत निविदा सुचना राज्य लोक उपापन पोरटल http://sppp.raj.nic.in पर देखी जा सकती है।

1-एकल न्युनतम कार्य 79.00 लाख व अधिकतम कार्य 111.00 लाख का है।

PHE2425SLOB04355, PHE2425SLOB04357, PHE2425SLOB04360, PHE2425SLOB043665

(विवेक चन्द कच्छारा)
अधिशाषी अभियन्ता
जन स्वा.अभि. विभाग, ग्रामीण खण्ड सलुम्बर
मो.न.-9414620351

DIPR/C/8414/2024

कार्यालय अधिषाषी अभियन्ता जन स्वा.अभि.विभाग खण्ड सॉचौर

एन.एच.68, Phed campus, साचौर (जालोर)

Te.Pho.No. 02979-283624 e-mail.:eephedscr@gmail.com

क्रमांक: अ:अ//जन स्वा./सां/निविदा/2024-25/1057 दिनांक:-05/09/2024

ई-निविदा सूचना संख्या -09/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से खण्ड सॉचौर के अधीन विभिन्न कार्य कराने हेतु लोक निर्माण में पजीकृत ठेकेदारों से ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया में ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती है जिसका विवरण निम्नानुसार है:-

कार्यालय का नाम व स्थान	अधिषाषी अभियन्ता, जन.स्वा.विभाग खण्ड सांचौर
निविदा का कार्य	Annual rate contact of providing laying and jointing of hdpe pipeline of various sizes at various schemes in division sanchore on turnkey basis.
निविदा की कुल लागत (राशि लाखो में)	कुल निविदा 01 रू.30.00 लाख
निविदा प्रपत्र वेबसाईड पर उपलब्ध एवं ऑन लाईन सबमिट की दिनांक	05.09.2024 से 17.09.2024 को 13.00 बजे तक
निविदाऐं खोलने की तिथी व समय	17.9.2024 को 15.00 बजे से
UBN NO	PHE2425WSRC04373

निविदा से सबधित समस्त विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in एवं http://dipr.rajasthan.gov.in http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा एवं भरा जा सकता है। शुद्धि पत्र केवल वेबसाईट पर ही अपलोड किये जायेगे।

(पृथ्वीसिंह) अधिशाषी अभियन्ता
जन स्वाथ्य अभियंत्रिक विभाग, खण्ड सॉचौर

DIPR/C/8398/2024

कार्यालय नगरपालिका, निम्बाहेड़ा जिला - चित्तौड़गढ़ (राज.)

रेल्वे स्टेशन के पास नीमच रोड़ निम्बाहेड़ा जिला चित्तौड़गढ़ (राज.)

Email :- nagarpalika_nimbahera@yahoo.com (01477) 220042, 220435, 221115 (O) 220004 (R)

क्रमांक :–नपानि/स्टोर/मेला/2024–25/35 दिनांक :– 09/09/2024

–:: ई-निविदा सूचना ::–

नगरपालिका निम्बाहेड़ा द्वारा निम्नलिखित कार्यों के लिए किसी भी विभाग में पंजीकृत, तकनीकी और आर्थिक रूप से मजबूत प्रतिष्ठान/फार्मो से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से वेब साईट https://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑन लाईन निविदाएं आमन्त्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विवरण पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है जिसका NIB Code DLB2425A2396 पर भी देख सकते है।

कार्य निविदा के कार्य	कुल 04 कार्य
निविदा की अनुमानित लागत	राशि 93.00 लाख रूपये
ऑनलाईन निविदा फार्म मिलने की दिनांक	09/09/2024 प्रातः 04.00 बजे
ऑनलाईन निविदा फार्म जमा कराने की अन्तिम दिनांक	दिनांक 19/09/2024 प्रातः 10.00 बजे तक
डी.डी./दस्तावेज जमा कराने की अन्तिम दिनांक व समय	दिनांक 19/09/2024 दोपहर 12.00 बजे तक
निविदा खोलने की दिनांक	दिनांक 20/09/2024 दोपहर 02.00 बजे

Unique Bid Number
DLB2425SLRC07630, DLB2425SLRC07632, DLB2425SLRC07631, DLB2425SLRC07629

राज.संवाद/सी/24/4971 अध्यक्ष अधिशाषी अधिकारी

रणथम्भौर में बढ़ा बाघों का कुनबा, बाघिन टी-125 सिद्धि ने तीन शावकों को जन्म दिया

सवाईमाधोपुर के रणथंभौर में वन विभाग की ओर से बाघिन टी-125 सिद्धि की फोटो ट्रेप की गई।

सवाई माधोपुर (निस)। रणथम्भौर नेशनल पार्क से एक बार फिर खुशखबरी आई है और रणथम्भौर में बाघ बाघिन के कुनबे में एक बार फिर से बढ़ोतरी हुई है।

इस बार रणथंभौर की बाघिन सिद्धि से यह खुशखबरी मिली है ,रणथंभौर में बाघिन सिद्धि टी-125 ने तीन शावकों को जन्म दिया है। जिनकी तस्वीर वन विभाग के फोटो ट्रैप कैमरे में कैद हुई है। बाघिन के शावकों को जन्म देने की खबर के बाद वन्यजीव प्रेमियों में खुशी का माहौल है। जानकारी के मुताबिक रणथंभौर की बाघिन सिद्धी टी 125 की तीन नये शावकों के साथ फोटो रणथम्भौर की कुण्डेरा रेंज में लगे वन विभाग के फोटो ट्रैप कैमरे में कैद हुई है। बाघिन व शावकों की यह तस्वीर राजस्थान के वन मंत्री संजय शर्मा ने भी अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर की है। वन विभाग के मुताबिक बाघिन सिद्धी ने रणथम्भौर के जोन नंबर पांच के अणतपुरा वन क्षेत्र में शावकों को जन्म दिया है।

फिलहाल वन विभाग की द्वारा बाघिन व शावकों की मॉनिटरिंग और ट्रेकिंग शुरु कर दी गई है। बाघिन सिद्धी की उम्र करीब साढ़े छह साल है। यह बाघिन सिद्धि टी-125 रणथम्भौर की मशहूर बाघिन एरोहेड टी-84 की बेटी है और बाघिन टी-124 रिद्धी की बहन है। बाघिन टी-125 सिद्धि के तीन शावकों को जन्म देने के बाद अब रणथम्भौर में बाघ बाघिन और शावकों की संख्या-81 पहुंच हो गई है। बाघिन के शावकों के जन्म देने की खबर को लेकर वन्यजीव प्रेमियों में खुशी की लहर है।

राज्य सरकार निवेशकों के लिये नीतियों में लगातार सुधार कर रही है : भजनलाल शर्मा

सियोल, दक्षिण कोरिया में आयोजित अंतरराष्ट्रीय इन्वेस्टर मीट में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल ने कई निवेशकों से मुलाकात की। इस दौरान अतिरिक्त मुख्य सचिव शिखर अग्रवाल मौजूद रहे।

सियोल। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने आज 'राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 के पहला अंतरराष्ट्रीय इन्वेस्टर मीट में भाग लिया, जिसे दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल में आयोजित किया गया। इस इन्वेस्टर मीट के जरिए मुख्यमंत्री शर्मा ने दक्षिण कोरिया के व्यापारिक समुदाय और निवेशकों को राजस्थान में निवेश हेतु आमंत्रित किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री शर्मा ने अगले 5 वर्षों के दौरान राज्य की अर्थव्यवस्था को मौजूदा 180 बिलियन अमेरिकी डॉलर से दोगुना करके 350 बिलियन अमेरिकी डॉलर करने के अपनी सरकार के एजेंडे को रेखांकित किया और निवेशकों को आश्वासन दिया कि राज्य में 'व्यापार करने में आसानी' हो, इसके लिए राज्य सरकार द्वारा प्रक्रियाओं और नीतियों में लगातार सुधार किया जा रहा है।

स्टार्टअप्स, इनोवेटर्स और दक्षिण कोरिया के व्यापारिक समुदाय के सदस्यों को राजस्थान में कारोबार करने के लिए आमंत्रित करते हुए, मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने कहा, राजस्थान सरकार दक्षिण कोरिया को केवल निवेश के स्त्रोत के रूप में नहीं देख रही है, बल्कि दक्षिण कोरिया के व्यापारिक समुदाय के साथ सभी क्षेत्रों में एक मजबूत और दीर्घकालिक साझेदारी बनाने की आकांक्षा रखती है। निवेशकों के अनुकूल माहौल बनाने के लिए किए जा रहे प्रयासों के तहत हमारी सरकार जल्द ही कई नई नीतियां लाने जा रही है, जो राज्य में व्यापार और कारोबार के माहौल को और बेहतर बनाएंगी। इनमें नई औद्योगिक नीति, निर्यात प्रोत्साहन नीति, एमएसएमई नीति और एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) नीति शामिल हैं।

इन्वेस्टर मीट के अलावा, मुख्यमंत्री शर्मा ने आज यहां कई बड़ी दक्षिण कोरियाई कंपनियों और एसोसिएशन, जिनमें इंफ्रास्ट्रक्चर, केमिकल्स, स्टार्टअप्स और पर्यटन जैसे क्षेत्र शामिल हैं, के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ भी मुलाकात की। इसमें पॉस्को इंटरनेशनल, एसजी कॉरपोरेशन (दक्षिण कोरिया की एक एस्फॉल्ट और कंक्रीट निर्माता कंपनी), जीएस ईएंडसी (दक्षिण कोरिया की एक अक्षय ऊर्जा और बैटरी स्टोरेज कंपनी), हनवा सॉल्यूशन (एक केमिकल कंपनी) और जियोनबुक क्रिएटिव इकोनॉमी इनोवेशन सेंटर (जेसीसीईआई), जो स्टार्टअप्स के लिए इन्क्यूबेटर का काम करती है, के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ हुई बैठक शामिल है। इसके अलावा, इन्वेस्टर मीट के दौरान मौजूद कई निवेशकों ने भी राज्य में निवेश करने में रुचि दिखाई।

इनमें, पॉस्को इंटरनेशनल और एसजी कॉरपोरेशन के अधिकारियों ने संयुक्त रूप से मुख्यमंत्री से मुलाकात की और राजस्थान में एस्फॉल्ट यूनिट लगाने में रुचि दिखाई और अपने उत्पादों के जरिए राज्य में बेहतर सड़कें बनाने की पेशकश की। इस बैठक में प्रदेश में निवेश हेतु सब्सिडी, बुनियादी ढांचा सेवाओं, कच्चे माल की खरीद और अन्य आवश्यकताओं के संबंध में अपनी अपेक्षाएं भी उन्होंने सरकार से साझा कीं।

जेसीसीईआई के अधिकारियों के साथ हुई बैठक में दोनों पक्षों द्वारा उद्यमिता के बारे में ज्ञान के आदान-प्रदान और स्टार्टअप्स को अपने व्यवसाय के विकास में मदद करने के अवसरों पर विचार किया गया। इसके अलावा, राजस्थान के पर्यटन क्षेत्र की संभावनाओं को प्रदर्शित करने के लिए एक विशेष इन्वेस्टर रोडशो का भी यहां आज आयोजन किया गया।

एस.ओ.जी. ने बाबूलाल कटारा, रामूराम राईका और उसके बेटे-बेटी को आर.पी.एस.सी. कार्यालय में ले जाकर तस्दीक करवाई

पेपर लीक के इन सभी आरोपियों को अपराधियों की तरह आर.पी.एस.सी. दफ्तर लेकर पहुंची पुलिस

- बाबूलाल कटारा जो कभी आरपीएससी में साहब हुआ करते थे, उन्हें अपराधियों की तरह पुलिस घेरे में चैंबर तक लाया गया और और उन्हीं की मौजूदगी में उनका सीज चैंबर खुलवाया गया।
- सूत्रों के अनुसार जल्द ही एस.ओ.जी. टीम राजस्थान लोक सेवा आयोग के अफसरों और बाबूलाल कटारा से आमने-सामने बैठाकर पूछताछ करेगी।

जयपुर/अजमेर। राजस्थान लोक सेवा आयोग के पेपर लीक प्रकरण में आरोपी निलंबित सदस्य बाबूलाल कटारा, रामूराम राईका, उसके बेटे देवेश राईका और बेटी शोभा राईका को सोमवार को राजस्थान लोक सेवा आयोग कार्यालय में एसओजी ने अपराधियों की तरह पुलिस घेरे में ले जाकर तस्दीक कराई।

बाबूलाल कटारा जो कभी आरपीएससी में साहब हुआ करते थे। आज अपराधियों की तरह पुलिस घेरे में अपने चैंबर तक लाए गए और उन्हीं की मौजूदगी में उनका सीज चैंबर खुलवाया गया। आरोप है कि सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा 2021 के पेपर लीक में आरोपी बाबूलाल कटारा ने ही पूर्व सदस्य रामूराम राईका को भर्ती परीक्षा का पेपर दिया था। कटारा पर सीनियर टीचर भर्ती परीक्षा का पेपर लीक करने का भी आरोप है। अब दोनो को एक ही कमरे में बैठाकर आमने सामने एसओजी पूछताछ कर रही है।

सूत्रों के अनुसार आयोग के अफसरों और कटारा से आमने- सामने बैठाकर पूछताछ होगी। इधर, जोधपुर के एक स्कूल में एसआई पेपर में नकल करवाने को लेकर भी बड़ा खुलासा हुआ है। एसओजी की पूछताछ में सामने आया है पेपर से एक दिन पहले बाकायदा आरोपी कैंडिडेट्स के साथ स्कूल संचालक ने मॉकड्रिल की थी। पूरा सौदा 12 लाख रुपए में तय हुआ था। फिलहाल बाबूलाल कटारा को लेकर आरपीएससी पहुंची एसओजी की टीम दस्तावेज खंगाल रही है। यहां कटारा से पेपर लीक को लेकर भी सवाल-जवाब किए गए हैं।

दरअसल, आरपीएससी के पूर्व सदस्य रामूराम राईका को भी पेपर लीक मामले में गिरफ्तार किया था। राईका ने पूछताछ में बताया था कि उसने पेपर कटारा से लिया था। इसके बाद कटारा को जयपुर सेंट्रल जेल से प्रोडक्शन वारंट पर फिर से गिरफ्तार किया गया। इससे पहले, एसओजी ने 31 अगस्त को राजस्थान पुलिस अकादमी (आरपीए) से 5 ट्रेनी एसआई को गिरफ्तार किया था। पकडे गए पांच आरोपियों में राईका का बेटा और बेटी भी शामिल है। एसआई परीक्षा में अब तक 70 जने गिरफ्तार हो चुके।

सूत्रों के अनुसार एसओजी एसआई परीक्षा - 2021 पेपर लीक मामले में अब तक 42 ट्रेनी सब इंस्पेक्टर सहित 70 लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है। अलग-अलग आरोपियों से पूछताछ में डेली नए खुलासे हो रहे हैं। अब जोधपुर के एक परीक्षा सेंटर को लेकर चौंकाने वाली जानकारी मिली है। दरअसल, परीक्षा से एक दिन पहले 14 सितंबर 2021 को परीक्षा केंद्र पर नकल करवाने के लिए बाकायदा मॉकड्रिल की गई थी।

इसमें पूर्व सैनिक, उसकी पत्नी, महिला मित्र और अन्य अभ्यर्थियों को परीक्षा कक्ष में बैठने और पेपर सॉल्व करके पर्ची आने तक की प्रैक्टिस की गई। परीक्षा केंद्र पर महिला मित्र की मदद से ही साठगांठ करवाई गई थी। नकल से पूर्व सैनिक बिजेंद्र कुमार की भर्ती परीक्षा में 92वीं रैंक बनी। वहीं, पेपर सॉल्वर ने अब तक 100 से अधिक अभ्यर्थियों को पेपर सॉल्व करवाकर सरकारी नौकरी दिलवाई। बिजेंद्र खुद के साथ करीब 8 लाख लेकर आया। देसूरिया गांव में अपने फौजी दोस्त के घर रुका। वहां से परीक्षा से दो दिन पहले 13 सितंबर 2021 को अपनी पत्नी और महिला मित्र रितु के साथ आया। रितु ने खुद के मित्र अर्जुन को सूचना देकर परीक्षा केंद्र पर जानकारी दिलवाई। जांच में सामने आया कि पेपर सॉल्वर ने अब तक 100 से अधिक अभ्यर्थियों को नौकरी दिलवाई है। बिजेंद्र कुमार, उसकी महिला मित्र और पत्नी 14 सितंबर 2021 को ही परीक्षा केंद्र पर पहुंच गए। वहां पर स्कूल के मालिक सोमेश ने केंद्र पर परीक्षा कक्ष में बैठने से लेकर पेपर सॉल्व होकर आने तक की मॉकड्रिल करवाई। अभ्यर्थियों को केवल परीक्षा के दौरान पेपर सॉल्व करने का नाटक कर टाइम पास करने के लिए कहा गया। पेपर सॉल्व होकर पर्ची आने के बाद में ओएमआर भरवाई जानी थी। इस दौरान स्कूल संचालक को रुपए भी दे दिए गए थे।

परीक्षा केंद्र पर महिला मित्र की मदद से ही साठगांठ करवाई गई थी। नकल से पूर्व सैनिक बिजेंद्र कुमार की भर्ती परीक्षा में 92वीं रैंक बनी। वहीं, पेपर सॉल्वर ने अब तक 100 से अधिक अभ्यर्थियों को पेपर सॉल्व करवाकर सरकारी नौकरी दिलवाई। बिजेंद्र पूर्व सैनिक कोटे से परीक्षा में शामिल हो रहा था। इस पर बिजेंद्र ने खुद की महिला मित्र ब्यूटी पार्लर संचालिका रितु शर्मा से संपर्क कर सेंटर पर साठ-गांठ की थी। रितु ने खेमे का कुआं निवासी फर्नीचर का काम करने वाले अर्जुन प्रजापत से बात की। अर्जुन ने रोहिलाकलां में स्कूल संचालक अनिल सांखला से संपर्क करवाया। अनिल ने आदर्श स्कूल के मालिक सोमेश गोदारा से बात की। इसमें 12 लाख रुपए में पेपर सॉल्व करवाने का सौदा तय हुआ। पूर्व सैनिक बिजेंद्र कुमार ने सिलेक्शन के बाद निर्धारित राशि में से करीब 3 लाख रुपए नहीं दिए थे। इसको लेकर आपस में विवाद चल रहा था। इस बीच अर्जुन और रितु ने मिलकर एक कहानी रची। जिसमें एसओजी जांच से बचाने की एवज में 10 लाख रुपए की मांग की गई।

अविचल चतुर्वेदी ने किया बच्चों से संवाद

जयपुर। राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् के राज्य परियोजना निदेशक अविचल चतुर्वेदी ने राजकीय उच्च प्रथमिक विद्यालय करतारपुरा और राजकीय उच्च प्रथमिक विद्यालय बम्बाला (सांगानेर) में पहुंचकर प्रखर राजस्थान अभियान के शुभारम्भ अवसर पर आयोजित रीड ए थॉन गतिविधि में सम्मिलित हुए। उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद किया तथा विद्यालय में अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाली बालिका से लार्ज फोंट पुस्तिका पढवाकर बालिका का उत्साहवर्द्धन किया। चतुर्वेदी ने अजमेर के राजकीय अंध विद्यालय, आदर्श नगर के बालकों से वीडियो कॉल पर जुड़कर ब्रेल पुस्तक वाचन की प्रशंसा की। कलेक्टर भी प्रखर राजस्थान अभियान में सहभागी बने। जिला कलेक्टर-बांसवाड़ा डॉ. इन्द्रजीत सिंह ने पीएमश्री महात्मा गांधी विद्यालय, खांदू कॉलोनी, कलेक्टर-बीकानेर नम्रता वृष्णि ने राजकीय अंध विद्यालय बीकानेर, कलेक्टर-भीलवाड़ा नमित मेहता, महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, पुलिस लाइन, भीलवाड़ा में पहुंचकर विद्यार्थियों से संवाद कर अभियान को उत्साहपूर्वक संचालित करने के लिए प्रेरित किया। अतिरिक्त राज्य परियोजना निदेशक सुरेश कुमार बुनकर अभियान के दौरान राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शुभरामपुरा, जयपुर में पहुंचकर विशेष आवश्यकता वाले बालक से संवाद कर उत्साहवर्द्धन किया। राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद के अधिकारियों द्वारा भी अपने-अपने प्रभार वाले जिलों में पहुंचकर कार्यक्रम में सहभागिता की।

बंधन बैंक देगा जीएसटी कलेक्शन सुविधा

जयपुर। बंधन बंक ने अब जीएसटी (वस्तु और सेवा कर) कलेक्शन की सुविधा शुरू कर दी है। अब बैंक के कस्टमर्स और नॉन-कस्टमर्स दोनों ही ऑनलाइन और ऑफलाइन तरीके से जीएसटी भर सकते हैं। इससे जीएसटी का पेमेंट करना काफी आसान हो गया है। बैंक के कस्टमर्स और अन्य लोग अब बैंक के रिटेल इंटरनेट बैंकिंग और कॉर्पोरेट इंटरनेट बैंकिंग प्लेटफॉर्म के जरिए जीएसटी पेमेंट कर सकते हैं। इसके अलावा, बैंक की किसी भी शाखा में जाकर कैश, चेक या डिमांड ड्राफ्ट से भी पेमेंट किया जा सकता है। बंधन बैंक के कार्यकारी निदेशक और मुख्य व्यवसाय अधिकारी, राजिंदर बब्बर ने कहा, "जीएसटी कलेक्शन की शुरुआत हमारे ग्राहकों के लिए सरकारी सेवाओं को और भी नजदीक लाने की दिशा में एक अहम् कदम है। सरकार जब व्यापार को आसान बनाने पर ध्यान दे रही है, बंधन बैंक अपनी बेहतरीन डिजिटल और तकनीकी क्षमताओं से सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रतिबद्ध है।"

वोकल फ़ोर लोकल की थीम पर तैयार हो राजस्थान हाउस : दिया कुमारी

दिया कुमारी ने सोमवार को दिल्ली में निर्माणाधीन राजस्थान हाउस का निरीक्षण किया।

नई दिल्ली। उपमुख्यमंत्री और सार्वजनिक निर्माण विभाग और पर्यटन मंत्री दिया कुमारी ने सोमवार को नई दिल्ली में निर्माणाधीन राजस्थान हाउस का निरीक्षण करके हाउस के निर्माण की कार्य प्रगति का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों के साथ मीटिंग भी की जिसमें इंजीनियरों ने राजस्थान हाउस को लेकर प्रेजेंटेशन दिया कि कहां तक कार्य हो चुका है और आगे क्या कुछ करना है। बैठक में उप मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से चर्चा के दौरान निर्माणाधीन हाउस के पूरे ब्लूप्रिंट को समझते हुए उन्होंने अधिकारियों से साफ तौर पर कहा कि इस निर्माणाधीन भवन के तैयार होने के बाद जब यहां पर लोग आए, इसके अंदर जब लोग पहुंचे तो आगंतुकों को लगे कि हम राजस्थान आ गए हैं। यहां की सारी व्यवस्थाएं राजस्थानी कल्चर से मेल खाते हुए डेवलप होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आप लोग एक रिव्यू मीटिंग भी बुलाए और रिव्यू मीटिंग करके हमें जरूरत पड़ेगी तो इसमें जरूरी बदलाव भी किए जाएंगे। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली में बनकर तैयार होने वाला यह भवन सिर्फ एक बिल्डिंग मात्रा नहीं बल्कि राजस्थान का दर्पण होना चाहिए।

निरीक्षण के दौरान दिया कुमारी ने अधिकारियों और इंजीनियरों को स्पष्ट निर्देश दिए की इस भवन के निर्माण कार्य में लगने वाली हर एक सामग्री में राजस्थानी निर्माण सामग्री को प्राथमिकता दी जाए, चाहे वह राजस्थानी पत्थर हो चाहे वह राजस्थानी पेंटिंग्स के साथ-साथ राजस्थान के हुनरबंद कारीगरों को भी इसके निर्माण कार्य में प्राथमिकता के साथ स्थान दिया जाना चाहिए ताकि हमारे लोगों को रोजगार के अवसर भी मिल सके और इस भवन के निर्माण में राजस्थानी कला और संस्कृति की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई दे सके। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली में बनने वाले विश्व स्तरीय भवनों में जब राजस्थानी पत्थर का उपयोग हो सकता है तो राजस्थान हाउस के निर्माण में भी राजस्थानी पत्थर का भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने राजस्थान हाउस के निर्माण के दौरान उसमें एक सूचना केंद्र और आगंतुकों और व्यवसायियों को राजस्थान से संबंधित संपूर्ण जानकारी देने के लिए एक बिजनेस सेंटर बनाने के निर्देश भी दिये।

एस.बी.आई. जयपुर मंडल ने किया पौधारोपण

जयपुर । भारतीय स्टेट बैंक (एस.बी.आई.) जयपुर मण्डल की ओर से 5 सितम्बर को अमृतादेवी पर्यावरण नागरिक (अपना) संस्थान जयपुर के माध्यम से राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, कंवर नगर, जयपुर में वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम में भारतीय स्टेट बैंक के स्वतंत्र निदेशक धर्मेंद्र सिंह शेखावत, महाप्रबंधक ऋतु गौड़, बैंक के उप महाप्रबंधक, सहायक महाप्रबंधक एवं अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

स्वतंत्र निदेशक शेखावत ने कहा कि केवल "प्लान्ट फॉर मदर" ही काफी नहीं है, बल्कि "प्लान्ट फॉर एवरी फ़ैमिली मैंबर" के ध्येय को अपनाना होगा। ज्यादा से ज्यादा ऐसे पेड़ लगाने होंगे, जिनकी चिकित्सयी उपयोगिता हो जैसे कि कदंब, पीपल, बड़, नीम इत्यादि।

उन्होने एसबीआई द्वारा बैंक के सीएसआर कार्यक्रम के अंतर्गत ग्रेटर नगर निगम एरिया में 15 हजार वृक्ष लगाने के इस प्रयास का भी विशेष उल्लेख किया। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की महाप्रबंधक गौड़ ने मानव के लिए वृक्षों का महत्व बताया।

मंगलम् ग्रुप ने 100 बीघा कृषि भूमि पर बसा दी अवैध कॉलोनी 'फोरेस्टा'

दिल्ली बाईपास रोड पर ग्राम टोडी से दौलतपुरा के बीच में काटी अवैध कॉलोनी

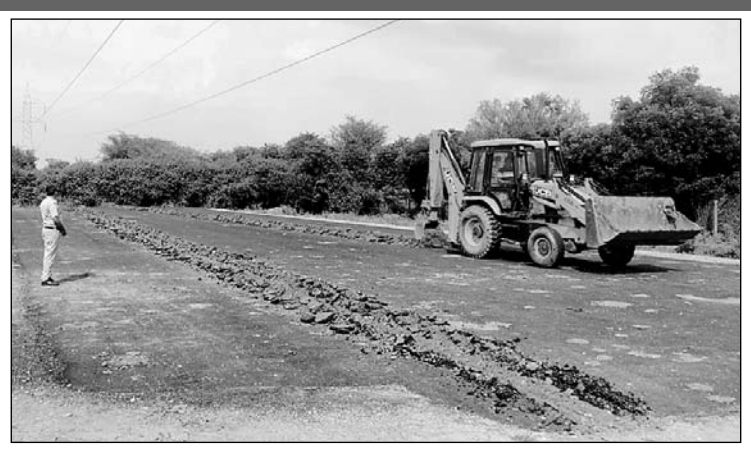

जयपुर विकास प्राधिकरण की प्रवर्तन टीम ने दिल्ली बाईपास रोड स्थित अवैध कॉलोनी फोरेस्टा में रातोंरात बनाई गई डामर सड़क व अन्य निर्माण ध्वस्त किए।

- मंगलम ग्रुप ने ना तो कृषि भूमि का कोई रूपांतरण कराया और ना ही जेडीए प्रशासन से कोई निर्माण स्वीकृति ली
- जे.डी.ए. की प्रवर्तन टीम ने रातोंरात बनाई गई मिट्टी-ग्रेवल रोड, बाउंड्रीवाल समेत अन्य अवैध निर्माण ध्वस्त किए

जयपुर (कासं)। राजधानी जयपुर में दिल्ली बाईपास रोड स्थित ग्राम टोडी से दौलतपुरा के बीच 100 बीघा कृषि भूमि पर मंगलम ग्रुप ने अवैध कॉलोनी "फोरेस्टा" बसा दी। इसके लिए जयपुर विकास प्राधिकरण से ना तो कोई परमिशन ली गई और ना ही भू-रूपांतरण कराया। भूमाफियाओं की तरह रातोंरात ही यह कॉलोनी काटकर इसमें मिट्टी-ग्रेवल व डामर की सड़कें, बाउंड्रीवाल समेत कई निर्माण कर दिए। सोमवार को जेडीए के मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन महेन्द्र कुमार शर्मा की टीम ने इस अवैध कॉलोनी पर कार्रवाई करते हुए तमाम अवैध निर्माण जेसीबी मशीनों की मदद से ध्वस्त किए।

मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन महेन्द्र कुमार शर्मा ने बताया कि जोन-13 में दिल्ली रोड बाईपास पर निजी खातेदारी की 100 बीघा कृषि भूमि पर मंगलम ग्रुप द्वारा अवैध कॉलोनी 'फोरेस्टा' बसाने की जानकारी मिली। जब संबंधित जोन उपायुक्त से इस स्कीम से जुड़ी जानकारी मांगी गई तो मालूम चला कि कृषि भूमि का ना तो आवासीय रूपांतरण (90ए) कराया गया है और ना ही कॉलोनी बसाने की कोई परमिशन जेडीए प्रशासन से ली गई है। इस पर सोमवार को जेडीए की प्रवर्तन टीम ने मौके पर कार्रवाई करते हुए तमाम अवैध निर्माणों को ध्वस्त किया। अब संबंधित जोन उपायुक्त को मंगलम ग्रुप के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए कहा गया है। इसी प्रकार जोन-13 स्थित ग्राम सेवापुरा में कचरा डिपो के पास भी करीब 27 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर इसी तरह दूसरी अवैध कॉलोनी बसाने के लिए रातोंरात कई निर्माण कर लिए गए थे। यहां पर भी ग्रेवल व डामर की रोड, बाउंड्रीवाल व प्लॉट्स के चिन्हिकरण का काम कर लिया गया था। दोनों जगहों पर ध्वस्तीकरण की खर्च राशि संबंधित लोगों से वसूली जायेगी।

सार-समाचार

ठगी पीड़ित जमाकर्ताओं का धरना जारी

झालावाड़ (निसं)। झालावाड़ जिले के लोगों का धरना प्रदर्शन लगातार 9 दिनों से चल रहा है जिसमें सभी पीड़ितों ने कहा कि निवेशकों का भुगतान बड्स एक्ट कानून 2019 के तहत हमें वापस किया जाए जिसमें शासन प्रशासन एवं अन्य अधिकारियों द्वारा विधि का पालन न करने और पीड़ितों का भुगतान न करने के कारण अनिश्चित असहयोग आंदोलन सत्याग्रह के माध्यम से किया जा रहा है जिसमें हमारी सरकार से मांग है कि सर्वसम्मति से वर्ष 2019 में अनियमित जमा योजना पाबंदी कानून 2019 बेनिंग ऑफ अनरेगुलेटेड डिपॉजिट स्कीम एक्ट 2019 बनाकर ठग कंपनी एवं सोसाइटी में डूबी हुई जमा राशि को पीड़ित आवेदक को 180 दिन में दो से तीन गुना वापस की जाए इसी के संदर्भ में सभी पीड़ितों का भुगतान हो तथा झालावाड जिले में धरना के बैनर तले जिला अध्यक्ष रतनलाल से बात हुई उन्होंने कहा कि लाखों निवेशक प्रताड़ित है एजेंट मौत के मुंह में जाने और पलायन उत्पीड़न जैसे से बचाए जा सकते हैं आम चुनाव 2024 के दौरान स्वयं प्रधानमंत्री ने अनेक जनसभा में कहा था कि पीड़ितों का धन वापस करने का वचन देश को दिया था जिसे अब भुला दिया गया है हमारे जिला तहसील नगर गांव में लाखों लोगों की परिश्रम से प्राप्त पूंजी सरकार की एजेंसियों और सस्थाओं के पास फंसी हुई है इसलिए सभी देश के 42 करोड लोगों की मांग पूरी की जाए साथी गण दुलीचंद मीना, मानक चंद, रामनारायण धाकड़, सत्यनारायण माली, बजरंगलाल, शमसुद्दीन, पीरु मोहम्मद, चंदन यादव, रामस्वरूप प्रजापति, नंदकिशोर, सोनू, श्याम सिंह राजपूत, दिलीप अमेठा आदि मौजूद रहे।

योजना का लाभ देने की मांग

नैनवां (निसं)। बंजारा उत्थान समिति के तत्वाधान में बंजारा समाज के लोगों ने विमुक्त घुमंतू एवं अर्ध घुमंतु आवास विहीन व्यक्तियों को भूखंड व पट्टा आवंटन अभियान के संदर्भ में बूंदी जिले के समस्त ग्राम पंचायतो को दिशा निर्देश देने की मांग को लेकर उपखंड अधिकारी कार्यालय पर ज्ञापन दिया। ज्ञापन के माध्यम से जानकारी देते हुए बताया कि राजस्थान सरकार द्वारा विमुक्त घुमंतू एवं अर्ध घुमंतु आवास विहीन व्यक्तियों को भूखंड पट्टा आवंटन अभियान चलाया जा रहा है। जिसका बूंदी जिले की ग्राम पंचायतो में पालन नहीं किया जा रहा है। बंजारा समाज के व्यक्तियों को ग्राम पंचायत द्वारा भ्रमित किया जा रहा है। जबकि बलदिया बंजारा एक बंजारा समाज ही है। जिसे क्षेत्रीय अंचल के अनुसार विभिन्न नाम से पुकारा जाता है।यह घुमंतू जाति में आती है।इस संबंध में ग्राम पंचायतो द्वारा कोई प्रचार प्रसार नहीं किया जा रहा है। और न हीं किसी प्रकार से कोई सर्वे किया गया है। अधिकतम ग्राम पंचायतो ने अभियान के संदर्भ में झूठी रिपोर्ट पेश की है।बलदिया बंजारा बूंदी जिले में निवास नहीं करते हैं। जबकि बूंदी जिले में 80 प्रतिशत बलदिया बंजारा निवास करते हैं। अतः समस्त ग्राम पंचायत को सूचित करें कि अभियान के तहत सही सर्वे करे,योजना का प्रचार प्रसार का कर सही रिपोर्ट संबंधित विभाग को पेश करें।जिससे कि बंजारा समाज को भी राज्य सरकार की योजना का लाभ मिल सके। ताकि बंजारा समाज राज्य सरकार की मूलभूत सुविधाओं से वंचित न हो और उन्हें उनका पूरा लाभ मिल पाए। इस अवसर पर शंकर लाल सरवन मनोहर जगदीश हजारीलाल हुकम सिंह लालाराम मंगल बंजारा सहित बंजारा समाज के लोग उपस्थित रहे।

वृद्धजनों को धार्मिक यात्रा पर रवाना किया

बूंदी (निसं)। रोहिणी कुमारी राजपूत महिला फाउंडेशन, बून्दी द्वारा वृद्ध जनों को भगवान श्री केशवराय जी एवं श्री राज राजेश्वर महादेव की यात्रा के लिए सोमवार को रवाना किया। इस यात्रा का उद्देश्य बून्दी की ऐतिहासिक विरासत का प्रचार जन जन तक पहुँचाने का है। फाउंडेशन की अध्यक्ष रानी रोहिणी कुमारी ने बताया कि बून्दी में प्रतीकात्मक रूप से वृद्ध जनों को देव दर्शन करने के उद्देश से साथ ही उनके माध्यम से बून्दी की सांस्कृतिक एतिहासिक विरासत की जानकारी को देवालयों, मंदिरों के माध्यम से हमारी अमूल्य धरोहर की जानकारी आम जन तक पहुँचा सके। इसके पूर्व में भी रानी रोहिणी ने भगवान सांवलिया सेठ की निशुल्क यात्रा वृद्ध जनों को कराई, इसी क्रम में आज सोमवार 9 सितंबर को केशवराय पाटन स्थित श्री केशावराय जी एवं श्रीराज राजेश्वर महादेव के लिए भगवान के जयकारे लगाते हुए वृद्धजनों को यात्रा के लिए रवाना किया।

प्रभारी मंत्री देवासी 11 को दौरे पर रहेंगे

झालावाड़ (निसं)। ग्रामीण विकास, पंचायतीराज, आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग के राज्य मंत्री एवं झालावाड जिले के प्रभारी मंत्री ओटाराम देवासी बुधवार, 11 सितम्बर को झालावाड जिले के दौरे पर रहेंगे। जिला कलेक्टर अजय सिंह राठौड़ ने बताया कि प्रभारी मंत्री 11 सितम्बर को प्रातः 8.30 बजे जयपुर से प्रस्थान कर दोपहर 1.30 बजे झालावाड़ पहुंचेगे। प्रभारी मंत्री दोपहर 2 बजे मिनी सचिवालय के सभागार में बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन, वर्षा व अतिवृष्टि की स्थिति की समीक्षा, रोजगार उत्सव की तैयारियों, प्रस्तावित लोकार्पण एवं शिलान्यास तथा विधानसभावार स्कूल, कॉलेज इत्यादि संबंधी घोषणाओं के एस्टीमेट के संबंध में जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक लेंगे। तत्पश्चात् सायं 5 बजे बारां के लिए प्रस्थान करेंगे।

स्व. पाटीदार को श्रद्धांजलि अर्पित की

झालावाड़, (निसं)। राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी सोमवार को झालावाड पहुँचे। देवनानी झालावाड़ में जन अभाव अभियोग निराकरण समिति के पूर्व अध्यक्ष स्व. श्रीकृष्ण पाटीदार के निवास पर पहुंचकर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। उन्होंने संवेदना व्यक्त की। देवनानी ने स्व. पाटीदार के पुत्र राम पाटी दार और श्याम पाटीदार सहित परिजन को ढांढ़स बंधाया। देवनानी ने कहा कि स्व. पाटीदार के निधन से अपूरणीय क्षित हुई है। उन्होंने कहा कि स्व. पाटीदार कुशल जनप्रतिनिधि, प्रखर वक्ता और सामाजिक कार्यों में आगे बढ़कर सक्रिय भागीदारी निभाने वाले व्यक्ति थे। देवनानी ने कहा कि स्व. पाटीदार से उनके व्यक्तिगत सम्बन्ध भी थे। देवनानी ने दिवंगत आत्मा की शांति और शोक संतप्त परिजन को इस दुःखद घड़ी में शक्ति प्रदान करने के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना भी की।

शिक्षा मंत्री झालावाड़ दौरे पर

भवानीमंडी (निसं)। केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल व राज्य के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर सोमवार को झालावाड़ दौरे पर रहे । अर्जुन राम मेघवाल केंद्रीय कानून मंत्री भारत सरकार का मेघवाल विकास समिति भवानीमंडी की और से बालमुकुंद मेघवाल आदि ने स्वागत किया। झालावाड के कनवाडी में निजी दौरे पर आए केंद्र सरकार के कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल व राज्य सरकार के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर से समाजसेवी शिक्षक कल्याणमल मेघवाल ने विशेष मुलाकात की ओर राज्य सरकार के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर से 2023 -24 की रुकी हुई प्रधानाचार्यो की पदोन्नित लागू करने की मांग की तो शिक्षा मंत्री ने इस विषय को गम्भीरता से लेते हुए इसको शीघ्र स्वीकृत करने के लिए कहा है।

अतिक्रमण हटाने की मांग

भवानीमंडी (निसं)। मिश्रोली कस्बे में कब्रिस्तान के पास मुस्लिम समाज की भूमि से अतिक्रमण हटाने की मांग को लेकर मुस्लिम समाज के लोगों ने एसडीएम कार्यालय पर ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया गया कि ग्राम पंचायत मिश्रोली में मुख्य सड़क पर कब्रिस्तान के पास समाज की एक भूमि है, जिस पर मुस्लिम समाज के ही एक परिवार ने वर्षों से कब्जा कर रखा है। उन्होंने बताया कि ग्राम पंचायत द्वारा इस भूमि पर टीन शेड डालकर सामुदायिक भवन का निर्माण कराना चाहती है ताकि समाज के कार्यक्रम वहां आयोजित हो सकें।

नदी के डूबे युवक के परिजनों से चर्चा की

बूंदी (निसं)। लालपुरा गांव में नदी पर ग्रामीणों के साथ रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान भाजपा नेता रुपेश शर्मा ने लालपुरा में पहुंचकर मौक़े पर तहसीलदार व ग्रामीणों से मामले में चर्चा की। नदी में नहाते वक्त बहाव में डूबने वाले युवक के घर पहुंचकर परिजनों से बात की। गांव के रामलाल मीणा के नदी में पांच दिन से डूबने के बाद भी अभी तक रामलाल के नहीं मिलने पर गहरी चिंता जताई और जिला प्रशासन से निरंतर रेस्क्यू ऑपरेशन चलाने को कहा। इस दौरान पंचायत समिति सदस्य सोनल मीणा,पूर्व सरपंच गिरिराज मीना,सरपंच श्याम गुर्जर,भाजपा कार्यकर्ता राजूलाल मीणा सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

उपखंड स्तरीय जनसुनवाई 12 को

बूंदी (निसं)। राज्य सरकार के निर्देशानुसार जिले में त्रिस्तरीय जनसुनवाई व्यवस्था के तहत 12 सितंबर को जिले के सभी उपखंडों पर उपखण्ड स्तरीय जनसुनवाई का आयोजन किया जाएगा।

छबड़ा में वन भूमि के बड़े हिस्से पर हो रही खेती

छबड़ा (निसं)। छबड़ा में वन क्षेत्र का दायरा सिमटता जा रहा है। वन विभाग के अधिकारियों की उदासीनता के कारण बड़े पैमाने पर वन भूमि अतिक्रमण की भेंट चढ़ रही है। माफिया वन विभाग की जमीन पर कब्जा कर खेती कर रहे हैं। ऐसे में वन भूमि कम होती जा रही है। यह जानकारी विभाग के अधिकारियों को भी है, लेकिन कब्जाधारियों पर कार्रवाई नहीं हो रही है। वहीं, जिम्मेदार अपना पल्ला झाड़ते नजर आ रहे हैं। विभाग की ही जमीन को कौन मुक्त कराएगा, यह भी एक बड़ा सवाल है।

जानकारी अनुसार छबड़ा क्षेत्र के हर वन नाका क्षेत्र के इलाके में घना जंगल हुआ करता था। लेकिन अब धीरे-धीरे जंगलों का घनत्व कम होता जा रहा है। जंगलों में वन भूमि पर अवैध तरीके से भू-माफियाओ द्वारा कृषि कब्जा कर लिया हैं, जहां बड़े पैमाने पर फसले भी हो रही हैं। इसके चलते वन भूमि के बडे हिस्से पर धीरे-धीरे जंगलों का घनत्व कम होता जा रहा है और कृषि की जमीन का रकबा बढ़ रहा है। ऐसे भू-माफियाओं के खिलाफ वन विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों की ओर से को प्रभावी कार्रवा नहीं की जा रही है। इसके चलते भू-माफियाओं के हौसले बुलंद हो रहे हैं। इससे पर्यावरण प्रेमियों में रोष बना हुआ है।

छबड़ा में वनभूमि पर अतिक्रमण हो रहा है।

विभाग के अंतर्गत आते है यह नाके- वन विभाग के अंतर्गत छबड़ा, जैपला, कडैयाहाट, पाली, रामपुरिया, दिलोद नाके आते हैं। जिनके अंतर्गत आने वाले कई गांवो में बड़ी संख्या में बेषकीमती वन भूमि पर अतिक्रमण चला आ रहा हैं। जिनमें अवैध तरीके से खेती की जा रही हैं। विभाग को सबकुछ ज्ञात होते हुए अनजान बनकर बैठा हुआ हैं।

वन भूमि खेतों में तब्दील:- वन विभाग की अनदेखी के कारण वन रेंज क्षेत्र में वनभूमि पर अतिक्रमण के मामले भी अब बढ़ने लगे है। वर्तमान में कई नाको में विभागीय कार्मिको की माफियाओं से सांठ-गांठ से वन भूमि खेतो में तब्दील हो गई है। वनों की सुरक्षा और उनका संवर्धन करने की जिम्मेदारी वन विभाग पर है। बावजूद इसके क्षेत्र के अतिक्रमियो के हौसले बढ़ने लगे है। ऐसे मामलों को गंभीरता से नही लेना विभागीय कार्यशैली पर प्रश्न खडा करता है।

कार्रवाई मात्र दिखावे की:- समय-समय पर वन विभाग कार्रवाई तो करता है लेकिन कार्रवा सिर्फ नाम मात्र के लिए होती है। तभी तो दिन-प्रतिदिन माफियाओं द्वारा वनभूमि पर कब्जा किया जा रहा है। वन विभाग की कार्रवा का भी माफियाओ पर को खास असर नजर नहीं आ रहा है, जिसके चलते वन भूमि को खेती योग्य बनाकर उस पर आराम से खेती करने में लगे है।

इस मामले में डीएफओ अनिल यादव ने बताया कि उन्होने जिले के सभी रेंजरो को वन भूमियों पर अतिक्रमण करने वाले अतिक्रमियो के खिलाफ कार्रवाई के निर्देष दे रखे हैं। लेकिन फिर भी छबड़ा क्षेत्र में अगर किसी कार्मिक की षिकायत पाई जाती है तो जांच करवाकर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

समय-समय पर कार्रवाई:- इस मामले में क्षेत्रीय वन अधिकारी तरूण रावत का कहना है कि स्थानीय वन विभाग वन क्षेत्र को बचाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। विभाग द्वारा लगातार कार्रवाईयां कर वन भूमि को अतिक्रमण मुक्त करवाया जा रहा हैं। जहां-जहां मुझे अतिक्रमणकारी का पता चला है उन्हें चिन्हित कर वनभूमि से बेदखल किया हैं। षिकायत के उपरांत त्वरित कार्रवाई की जाती हैं। वही, पुराने अतिक्रमण के मामलो में नियमानुसार जुर्माना राशि वसूली जाती हैं।

भगवान गणेश की आरती हुई

झालावाड़ (निसं)। मंगलपुरा गली स्थित वार्ड नं. 34, जैकी स्टूडियों के सामने विराजे भगवान शक्ति गणेश की गणेश महोत्सव के दौरान रविवार रात्रि को भव्य आरती का आयोजन किया गया। शक्ति गणेश समिति के संयोजक गायत्री शर्मा ने बताया कि रविवार रात्रि को शक्ति गणेशजी की आरती पर्यटन विकास समिति के संयोजक ओम पाठक, उपाध्यक्ष ललित शर्मा, भगवती प्रकाश तथा मनजीत सिंह कुशवाह ने विधि विधान से भगवान गणेशजी की पूजा अर्चना की इस दौरान मोहल्ले के निवासियों ने बुद्धि के दाता भगवान गणेशजी के जयकारों से परिसर गूंज उठा तथा भक्तों ने भगवान गणेशजी के नुक्ती का भोग लगाया तथा क्षेत्र में सुख समृद्धि, पारस्परिक सौहार्द, भाईचारा तथा अच्छे स्वास्थ की कामना की। गणेश चतुर्थी से ही परिसर में रोजाना सवेरे शाम भगवान गणेशजी की आरती की जाती है तथा रात्रि को धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान मोहल्ले के निवासी रजनीगन्धा सोनी, ममता नागर, अर्चना शर्मा, ममता मित्तल, मंजू पाठक, आशा राजावत, रूचि गुप्ता, आशा सोनी, निशी अग्रवाल, सुशील गुप्ता ने भी आरती और धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लिया।

आवश्यक सेवाओं की साप्ताहिक समीक्षा बैठक हुई

झालावाड़ (निसं)। आवश्यक सेवाओं की साप्ताहिक समीक्षा बैठक जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में सोमवार को मिनी सचिवालय के सभागार में आयोजित की गई। बैठक में उपस्थित सभी जिला स्तरीय अधिकारियों को सम्पर्क पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में जिले के राज्य में प्रथम स्थान पर आने पर जिला कलक्टर ने बधाई देते हुए कहा कि जिले की यह उपलब्धि निरन्तर आगे नियमित रहे इसके लिए सभी अधिकारी आमजन की परिवेदनाओं के निस्तारण में तत्परता से कार्य करते रहें। जिला कलक्टर ने बैठक में पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक को नियमित रूप से गौशालाओं का निरीक्षण करने के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने नगर परिषद् झालावाड़ एवं जेवीवीएनएल के अधिकारी को गांवडी तालाब के पास हाईटेंशन लाईन के नीचे बसे लोगों के अतिक्रमण को हटवाने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने जल संसाधन विभाग के अधीक्षण अभियंता से जिले के बांधों की जलभराव की स्थिति की जानकारी लेते हुए आगामी दिनों में मानसून के पुनः सक्रिय होने की स्थिति में पूर्ण सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। उन्होंने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को मौसमी बीमारियों से बचाव हेतु जिले में सभी जगह फोगिंग करवाने तथा नगर निकायों के अधिकारियों को नाले व नालियों की व्यापक साफ-सफाई के निर्देश दिए। उन्होंने शहर में चल रहे सीवरेज कार्यों की समीक्षा करते हुए झालावाड शहर में सीवरेज के कार्य में प्रगति लाने तथा कार्य के पश्चात् सड़कों की मरम्मत करवाने के निर्देश आरयूआईडीपी के अधिकारी को दिए।

जी.ए.डी. गणेश मेले में हंगामा

कोटा, (निसं)। शहर के जीएडी सर्किल पर गणेश पंडाल में मारपीट का मामला सामने आया है। घटना रविवार देर रात 11.45 बजे के आसपास की है। मौके पर पुलिस भी मौजूद थी। पुलिस के सामने ही शराब के नशे में दो युवक उत्पात मचाने लग गए। इसके बाद मेला समिति के लोगों से भी उलझ गए। इस दौरान आपस में उनके बीच हाथापाई भी हो गई। इस दौरान लोगों ने कुर्सियों को उठाकर एक-दूसरे पर फेंका। मौके पर मौजूद पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। आरकेपुरम थाना अधिकारी अजीत बागडोलिया ने बताया कि दीपक गोस्वामी और राजेंद्र महावर शराब के नशे में उत्पात मचा रहे थे। इन्हें घटनास्थल से थाने पर लेकर आए थे। बाद में शांतिभंग की धाराओं में गिरफ्तार किया।

रेलवे ट्रैक पर स्क्रैप छोड़ने का आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। कोटा-बीना रेललाईन पर बारां जिले में छबड़ा-भूलोन के बीच रेलवे ट्रैक पर 28 अगस्त की देर रात को मोटरसाईकिल का स्क्रैप कोई अज्ञात व्यक्ति छोड़ गया था। इससे एक मालगाड़ी टकरा गई थी। घटना के बाद रेलवे प्रशासन और रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स सतर्क हो गया।

इस मामले में आरपीएफ ने मुकदमा भी दर्ज किया था। पूरे प्रकरण पर कार्रवाई करते हुए आरपीएफ ने रविवार को 37 वर्षीय गजराज कंजर पुत्र पंजाब सिंह को गिरफ्तार किया है। आरपीएफ बारां पोस्ट के आईपीएफ राजेंद्र कुमार ने बताया कि घटना के बाद आरपीएफ की टीम जुटी हुई थी। इसमें लोकल पुलिस की भी मदद ली गई और आरोपी गजराज को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी चाचौड़ा के शंकर मोहल्ला का निवासी है। यह रेलवे पटरी से करीब 100 मीटर दूर ही है। आरोपी पर पहले से हत्या, चोरी, लूटपाट व मारपीट सहित अन्य कई मामले दर्ज हैं। आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया जहां से उसे जेल भेजा गया है। आरोपी गजराज कंजर ने पूछताछ में बताया है कि वह इस स्क्रैप को रेलवे ट्रैक के नजदीक से ही उठा कर ले जा रहा था। स्क्रैप वहां पर कौन लाया, इसकी जानकारी उसे नहीं है।

वह रेलवे ट्रैक क्रॉस कर रहा था तभी सामने से ट्रेन आ गई। ऐसे में वह हड़बड़ा गया और स्क्रैप रेलवे ट्रैक पर ही छोड़कर भाग गया। जब वह दोबारा मौके पर पहुंचा तब वहां पर पुलिस और अन्य लोग मौजूद थे इसलिए वह डर गया और घर चला गया। घटना 28 अगस्त की देर रात को हुई थी और इस मामले में मुकदमा 29 अगस्त को दर्ज किया गया था।

घटना के बाद से ही आरपीएफ की पूरी टीम इस मामले का खुलासा करने जुटी थी। 10 दिन टीम इस मामले की जांच करती रही जिसके बाद रविवार को आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। सब इंस्पेक्टर श्रीकृष्ण शर्मा, हेड कांस्टेबल बबली शर्मा, कांस्टेबल अरुण कौशिश, हरिओम व विकास पड़ताल में लगे हुए थे। खासी मशक्कत के बाद आरोपी गजराज हत्थे चढ़ा है।

'पेंशनर्स को आरजीएचएस दवा सुविधा बहाल की जाए'

कोटा, (निसं)। राजस्थान पेंशनर मंच संभाग कोटा एवं जिला कोटा के पदाधिकारी की संयुक्त बैठक आयोजित की गई जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया की आरजीएचएस में जो दवाई प्राइवेट केमिस्टों से मिलती थी जिसे 8 अगस्त से उनका भुगतान नहीं होने के कारण बंद कर दी गई है। उनका भुगतान करके इस सुविधा को पुनः चालू की जाऐं।

ऐसे केमिस्टों का 500 करोड़ रुपए का भुगतान राज्य सरकार पर बकाया है। बैठक में ओल्ड पेंशन को यथावत राज्य में लागू रखने कोरोना काल के दौरान 1 जनवरी 2020 से लेकर 30 जून 2021 तक 18 महीने का महंगाई भत्ते का भुगतान रुका हुआ है उसे भुगतान करने की आठवां वेतन आयोग गठित करने तथा कॉम्यूटेशन की वसूली 10 वर्ष 8 माह में करने रेल सुविधाओं में जो पुरुषों को 50.40 प्रतिशत तथा महिलाओं की मांग की गई को 50 प्रतिशत सीनियर सिटीजन होने के नाते रियायत दी जाती थी उसको पुनः बहाल करने की मांग की गई।

राजस्थान पेंशन मंच को कार्यालय आवंटित करने तथा बंद चिकित्सा सुविधाओं को पुनः चालू करने की मांग का एक ज्ञापन 16 सितंबर 2024 को जिला कलेक्टर कोटा के माध्यम से राज्य के मुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री को भेजा जाएगा।

बैठक में राजस्थान पेंशन मंच का सदस्य अभियान भी प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया सीनियर सिटीजन को बस सेवा में 50 प्रतिशत किराए की छूट पानी के लिए बस स्टैंड नयापुरा कोटा में 25 जमा कर करके तथा आधार कार्ड वह जन्म प्रमाण की प्रति उपलब्ध कराने पर उनके द्वारा 15 दिन में कार्ड बना कर दिए जाने की तथा सीनियर सिटीजंस को तीर्थ यात्रा करने संबंधी जानकारी भी उपस्थित पदाधिकारी को दी गई। बैठक की अध्यक्षता संभागीय अध्यक्ष अजय चतुर्वेदी ने की।

विशिष्ट अतिथि नमो नारायण शर्मा रहे ओके बैठक में अशोक शर्मा नगर विकास न्यास अशोक शर्मा वन विभाग सत्येंद्र त्यागी जिला अध्यक्ष कोटा गोविंद शरण शर्मा, अब्दुल मन्नान सुरेश मेहरा, कमलेश सक्सेना, दिनेश त्यागी लक्ष्मी बल्लभ शर्मा संभागीय महामंत्री नंद सिंह चंद्रावत, आरसी गुप्ता ,सुरेश शर्मा सहित कई पदाधिकारी उपस्थित रहे।

गुरु वंदन छात्र अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित

छीपाबड़ौद में गुरुवंदन एवं छात्र अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ।

छीपाबड़ौद (निसं)। भारत विकास परिषद् द्वारा संस्कार प्रकल्प के तहत गुरुवंदन एवं छात्र अभिनंदन कार्यक्रम आर्य वाटिका बस स्टेंड में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक अनुज महाराज सिंह सिंघवी विशिष्ट अतिथि नरेश मीणा प्रधान, राजवीर सिंह तहसीलदार, महेन्द्र नागर प्रांतीय उपाध्यक्ष एवं धीरज बाठला जिला प्रभारी एवं अध्यक्षता राजेंद्र योगी ने की कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा भारत माता एवं स्वामी विवेकानन्द की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया ।सचिव विकास सोनी, लक्ष्मीकांत गौत्तम, ब्रह्मप्रकाश नागर, गिरिराज बंसल, छीतरलाल नागर ने अतिथियों का अक्षत तिलक दुपट्टा पहना कर स्वागत सम्मान किया ।भारत को जानो प्रभारी नरेश मालव एवं सह-प्रभारी धनराज सुमन ने बताया कि विद्यालय स्तर पर वरिष्ठ एवं कनिष्ठ वर्ग में प्रथम एवं द्वितीय आने वाले विद्यार्थियों द्वारा पहले लिखित प्रतियोगिता कराई गई जिसमें पहले छः स्थान पर आये विद्यार्थियों की छः टीमों के बीच रेपिड राउंड,बंजर राउंड के द्वारा दूसरे चरण की भारत को जानो प्रतियोगिता में वरिष्ठ वर्ग में इशिका योगी एवं देव मालव और कनिष्ठ वर्ग में भव्य योगी एवं गुरुप्रित मालव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया सचिव विकास सोनी ने बताया कि इस प्रतियोगिता में वरिष्ठ एवं कनिष्ठ वर्ग में जो टीम प्रथम रहीउन्हे सम्मानित किया।

तहसीलदार के नाम पर रिश्वत लेते ई-मित्र संचालक गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की टीम ने सोमवार को जिले के चेचट इलाके में बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया। टीम ने मौके से तहसीलदार के नाम पर रिश्वत मांग रहे ई-मित्र संचालक को गिरफ्तार किया है। साथ ही आरोपी ई-मित्र संचालक के पास से नकद 5 हजार रुपए बरामद किए गए। एसीबी की ओर से बताया गया कि ये पूरा मामला रजिस्ट्री करवाने को लेकर था।

इस मामले में तहसीलदार की भूमिका की भी एसीबी जांच कर रही है। वर्तमान में तहसीलदार तहसील में मौजूद नहीं हैं। इस पूरे मामले की जानकारी देते हुए भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विजय स्वर्णकार ने बताया कि 4 सितंबर को एक परिवादी ने शिकायत दी थी। चेचट में गिफ्ट डील करवाने की एवज में ई मित्र संचालक हरीश मंडोत पैसा की डिमांड कर रहा था। ये पैसे तहसीलदार के नाम पर मांगे जा रहे थे। ऐसे में इस शिकायत का सत्यापन कराया गया जिसमें 5 सितंबर को ई-मित्र संचालक ने पूरा काम करवाने की एवज में 5 हजार में सौदा तय किया। इस पर सोमवार को ट्रैप की कार्रवाई को अंजाम दिया गया। साथ ही आरोपी ई मित्र संचालक को रिश्वत राशि के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। यह कार्रवाई पुलिस उपाधीक्षक अनीस अहमद के नेतृत्व में हुई। मामले के अनुसार परिवादी की बहन गिफ्ट डीड उसके नाम करवा रही थी। इस मामले में रजिस्ट्री की प्रक्रिया पूरी हो गई थी जिसका पूरा खर्चा भी परिवादी ने दे दिया था लेकिन तहसीलदार विकास वर्मा इस पर साइन नहीं कर रहे थे।

यह पूरा साइन करवाकर देने की गारंटी ईमित्र संचालक हरीश मंडोत ने दी। वो इसके लिए सात हजार रुपए की डिमांड कर रहा था लेकिन फिर 5 हजार में सौदा तय हुआ था। एसीबी के डीएसपी अनीस अहमद का कहना है कि इस पूरे मामले में तहसीलदार की भूमिका संदिग्ध है। ऐसे में वर्तमान में वे तहसील में मौजूद नहीं हैं। इस पूरे प्रकरण में तहसीलदार की संलिप्तता के संबंध में भी जांच की जाएगी।

साइकिलिंग ट्रैक प्रतियोगिता का शुभारंभ

रावतभाटा, (निसं)। 68 वीं जिला स्तरीय साइकिलिंग ट्रैक प्रतियोगिता का शुभारंभ सोमवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बोराव में हुआ। जिसके मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक डॉ. सुरेश धाकड एवं अध्यक्षता भाजपा ग्रामीण मंडल अध्यक्ष भैंसरोडगढ़ सुनील जैन और विशिष्ट अतिथि पूर्व मंडल अध्यक्ष जगदीश पुरी, पंचायत समिति सदस्य भैंसराडगढ़ नंदकिशोर मीणा, मंडल उपाध्यक्ष दिलीप वैष्णव, पूर्व मंडल महामंत्री सुरेश धाकड, मंडल मंत्री रामस्वरूप प्रजापत, मनीष गांधी, ओम प्रकाश सेन, डॉ. जयप्रकाश कुमावत, प्रधानाचार्य म.गा.रा.वि बोराव सुरेंद्र यादव एवं आयोजक विद्यालय के प्रधानाचार्य शिवचरण मीना रहे। सभी अतिथियों को माला एवं साफा पहनाकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात सभी अतिथियों द्वारा मां सरस्वती को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। विद्यालय की छात्राओं द्वारा रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं द्वारा मार्च पास्ट कर ध्वज सलामी दी गई। एवं मुख्य अतिथि द्वारा ध्वज फहराया गया। मुख्य निर्णायक मनोज सोनी द्वारा प्रतिभागियों को साइकिल रेस में होने वाले इवेंट्स के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रतियोगिता में कुल छात्र एवं छात्रा वर्ग में पांच-पांच टीमों ने भाग लिया।

बारिश के बाद शीघ्र शुरू करवाई जाए क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत : जिला कलेक्टर

बूंदी (निसं)। पानी, बिजली एवं मौसमी बीमारियों संबंधी साप्ताहिक समीक्षा बैठक सोमवार को जिला कलक्टर अक्षय गोदारा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इसमें पेयजल उपलब्धता, बिजली आपूर्ति व्यवस्था एवं मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए किए गए प्रबंधों की समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

बैठक में जिला कलेक्टर ने सार्वजनिक निर्माण एवं नगर परिषद के अधिकारियों को निर्देश दिए कि बरसात के बाद वर्षा ऋतु के दौरान क्षित ग्रस्त सड़कों की मरम्मत के लिए टेण्डर सहित अन्य सभी प्रक्रियाएं अभी पूरी कर ली जाए और बरसात का मौसम खत्म होते ही इनके कार्य यथा शीघ्र शुरू करवाए जाएं।जिला कलक्टर ने मौसमी बीमारियों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि मौसमी बीमारियों की रोकथाम के वार्ड टीम भिजवाकर लिया जाए, ताकि आमजन को चिकित्सा सुविधा मुहैया करवाई जा सके। इसके अलावा एंटी लार्वा गतिविधियां नियमित हो और फोगिंग करवाई जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि बरसा से क्षितग्रस्त हुई सड़कों की मरम्मत वर्षा ऋतु के बाद प्राथमिकता से करवाई जाए।

बूंदी जिला कलेक्टर अक्षय गोदारा ने पानी, बिजली एवं मौसमी बीमारियों संबंधी साप्ताहिक बैठक ली।

उन्होंने नगर परिषद आयुक्त को निर्देश दिए कि वर्षा होने पर जिन कॉलोनियों में पानी का जमाव ज्यादा रहता है उसकी प्रभावी मॉनिटरिंग की जावे।उन्होंने निर्देश दिए कि एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत किए गए पौधारोपण की जियो टैगिंग आवश्यक रूप से करवाई जाए। उन्होने निर्देश दिए कि भूमि आवंटन चिन्हित करने के लिए ब्लॉक सीएमएचओ संबंधित उपखंड अधिकारी से कॉर्डिनेट करें। उन्होंने निर्देश दिए कि जिले में अवैध माईनिंग करने वालों के खिलाफ कार्यवाही की संख्या बढाई जाए।

उन्होंने निर्देश दिए कि पुलिस लाईन से गणेश बाग की ओर जाने वाली सड़क पर हो रहे गढ्ढों को शीघ्र भरवाया जाए, ताकि आमजन को आगवामन में किसी तरह परेशानी नहीं हो। उन्होने निर्देश दिए कि सभी राजकीय कार्य ई फाइलिंग के जरिए ही संपादित किए जाएं। साथ ही फाइलों के निस्तारण के लिए निर्धारित औसत समय को भी कम किया जाए। उन्होंने पोषण माह अभियान के तहत विभिन्न गतिविधियों के संदर्भ में शिक्षा विभाग एवं चिकित्सा विभाग को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।उन्होंने बिजली आपूर्ति व्यवस्था की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि कृषि कनेक्शन जारी करने की गति को बढाया जाए।

साथ ही शेष आंगनबाड़ी केन्द्रों में विद्युत कनेक्शन कराएं। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना के तहत पाइपलाइन, तिरपाल, चारा काटने की मशीन उपलब्ध करवाने के लिए कृषि विभाग एवं जिला परिषद के अधिकारी आपसी समन्वय से कार्ययोजना बनाएं।

साथ ही मनरेगा के अन्तर्गत श्मशान भूमि आवंटन संबंधी प्रस्ताव भिजवाएं एवं श्मशान घाट को जोड़ने वाली सड़कों को प्राथमिकता दी जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि बिजली विभाग के लिए प्रस्तावित तीन जीएसएस के लिए भूमि का चयन कर प्रस्ताव भिजवाए जाएं। उन्होने जल संसाधन विभाग एवं विद्युत विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि परस्पर सहयोग कर लंबित सिविल कार्यो को पूर्ण करावें। बैठक के दौरान उन्होंने जल जीवन मिशन के तहत गरडदा पेयजल प्रोजेक्ट की जानकारी ली।

बैठक में अतिरिक्त जिला कलेक्टर सीलिंग नवरत्न कोली, डीएफओ वीरेन्द्र कृष्णियां, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. ओपी सामर, सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिशाषी अभियंता राजाराम मीणा, विद्युत निगम के एसई केके शुक्ला, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. महावीर शर्मा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

मैं ऋषभ पंत को भारत के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट बल्लेबाजों में से एक मानता हूं। उनकी टेस्ट क्रिकेट में वापसी से मैं हैरान नहीं हूं। वह भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में खेलते रहेंगे।

– सौरभ गांगुली

पूर्व भारतीय क्रिकेटर, ऋषभ पंत के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

जैनिक सिनर

इटली के स्टार टेनिस खिलाड़ी जैनिक सिनर ने अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज को हराकर यूएस ओपन पुरुष एकल का खिताब अपने नाम कर लिया है।रविवार रात दो घंटे 16 मिनट तक चले मुकाबले में दुनिया के नंबर वन टेनिस खिलाड़ी जैनिक सिनर ने अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज को लगातार तीन सेटों में 6-3, 6-4, 7-5 से हराकर यह खिताब जीता। इसी के साथ वह यूएस ओपन जीतने वाले इटली के पहले पुरुष खिलाड़ी बने हैं। वर्ष 2015 में इटली की फ्लाविया पैनेटा ने महिला एकल का खिताब जीता था। सिनर के कारियर का यह दूसरा ग्रैंड स्लैम खिताब है।

क्या आप जानते हैं ?... ऑस्ट्रेलिया के खब्बू स्पिनर फ्लीटवुड स्मिथ ने इंग्लैंड के विरुद्ध 1938 में 37 ओवर में 298 रन पर एक विकेट लिया था। ये आज तक एक टेस्ट पारी में किसी भी गेंदबाज द्वारा दिए गए सबसे ज्यादा रन है।

अफगानिस्तान बनाम न्यूज़ीलैंड टेस्ट मैच का पहले दिन का खेल रद्द

ग्रेटर नोएडा, 9 सितंबर। न्यूजीलैंड और अफगानिस्तान के बीच एकमात्र टेस्ट के पहले दिन सोमवार को मैदान गीली होने के कारण खेल रद्द कर दिया गया। आज यहां अधिकारियों ने दिन भर कई बार निरीक्षण करने के बाद मैदान के खिलाड़ियों के उतरने के लिए सही नहीं पाये जाने पर दिन के खेल को रद्द करने का फैसला किया। हालांकि पूरे दिन मौसम साफ रहा और धूप रही, लेकिन मैदान से पानी निकासी की सुविधाएं के अभाव के कारण दिन के खेल रद्द किया गया। उल्लेखनीय है कि अफगानिस्तान ने अबतक 10 टेस्ट मैच खेल चुका हैं। उसे बंगलादेश, श्रीलंका और आयरलैंड के खिलाफ अपनी पिछली तीन टेस्ट मैचों में हार का सामना करना पड़ा है। वहीं न्यूजीलैंड इस वर्ष मार्च के बाद पहला टेस्ट मैच है।

इंग्लैंड की महिला टीम ने आयरलैंड को एकदिवसीय मैच में 275 रनों से हराया

बेलफास्ट, 9 सितंबर। टैमी ब्यूमोंट (नाबाद 150) की बेहतरीन शतकीय और फ्रेया केम्प (65) रनों की पारियों के बाद केट क्रॉस और लॉरेन फाइलर (तीन-तीन विकेट) की घातक गेंदबाजी के दम पर इंग्लैंड की महिला टीम ने सोमवार को दूसरे एकदिवसीय मुकाबले में आयरलैंड को रिकार्ड 275 रनों से हरा दिया है। 320 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी आयरलैंड की महिला टीम की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने पहले ही ओवर में कप्तान गैबी लुईस (शून्य) का विकेट गवां दिया। इसके बाद तो आयरलैंड के विकेट एक के बाद एक ताश के पत्तों की ढह गये। टीम के लिए ऊना रेमंड-होए ने सर्वाधिक 22 रन बनाये। शेष कोई भी बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक नहीं पहुंच सका। आलम यह था कि आयरलैंड के नौ बल्लेबाज स्कोर में मात्र 23 रन का इजाफा कर पवेलियन लौट गये। आयरलैंड की पूरी टीम 16.5 ओवर में 45 रन पर सिमट गई। इंग्लैंड की ओर से केट क्रॉस और लॉरेन फाइलर ने तीन-तीन विकेट लिये। फ्रेया केम्प और जॉर्जिया डेविस को दो-दो विकेट मिले। इससे पहले आज यहां इंग्लैंड की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी इंग्लैंड की टीम ने टैमी ब्यूमोंट (नाबाद 150) की बेहतरीन शतकीय और फ्रेया केम्प (65) रनों की पारियों के दम पर दूसरे एकदिवसीय मैच में आयरलैंड को जीत के लिए 320 रनों का लक्ष्य दिया। ब्यूमोंट ने 139 गेंदों में 16 चौके और एक छक्के की मदद से नाबाद 150 रनों की पारी खेली। वहीं केम्प ने 47 गेंदों में सात चौके और दो छक्के लगाते हुये (65) रन बनाये। एम्मा लैम्ब (18), होली आर्मिटेज (19), मैडी विलियर्स (14), इस्सी वोंग (15) रनों की पारियों के योगदान से दिया। इंग्लैंड ने निर्धारित 50 ओवरों में आठ विकेट पर 319 का स्कोर खड़ा किया। आयरलैंड की ओर से अर्लीन केली और फ्रेया सार्जेंट ने दो-दो विकेट लिये। ऐलिस टेक्टर, जेन मैगुएर और एमी मैगुएर ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

प्रो. कबड्डी लीग सीजन 11 का कार्यक्रम घोषित

मुंबई, 9 सितंबर। प्रो कबड्डी लीग सीजन 11 की शुरुआत 18 अक्टूबर को हैदराबाद में तेलुगु टाइटन्स और बेंगलुरु बुल्स के बीच होने वाले मुक़ाबले के साथ होगी। लीग के आयोजक मशाल स्पोर्ट्स ने सोमवार को पीकेएल के ग्यारहवें सीजन के कार्यक्रम की घोषणा की। इस मैच में घरेलू टीम तेलुगु टाइटन्स और उनके स्टार रेडर पवन सहरावत का मुकाबला बेंगलुरु बुल्स के लिए वापसी कर रहे लीग के सबसे सफल खिलाड़ी परदीप नरवाल से होगा। पहले दिन रात के दूसरे मैच में यू मुंबा के सुनील कुमार जो की प्लेयर्स ऑक्शन में 1.015 करोड़ रुपये में खरीदे जाने के बाद पीकेएल इतिहास के सबसे महंगे भारतीय डिफेंडर बनने के बाद, नवीन कुमार की आक्रामक क्षमता से भिड़ेंगे, जो दबंग दिल्ली के.सी. के स्टार रेडर्स में से एक हैं। इस बार, पीकेएल तीन शहरों के प्रारूप में लौटेगा। 2024 के मौजूदा संस्करण का पहला चरण 18 अक्टूबर से 9 नवंबर तक हैदराबाद के गाचीबोवली इंडोर स्टेडियम में आयोजित होगा। इसके बाद यह 10 नवंबर से 1 दिसंबर तक दूसरे चरण के लिए नोएडा इंडोर स्टेडियम में स्थानांतरित हो जाएगा। तीसरे चरण की मेजबानी 3 दिसंबर से 24 दिसंबर तक पुणे के बालेवाड़ी बैडमिंटन स्टेडियम को करना है। प्लेऑफ़ के लिए शेड्यूल और आयोजन स्थान की घोषणा बाद में की जाएगी। पीकेएल सीजन 11 के कार्यक्रम पर अपने विचार रखते हुए मशाल स्पोर्ट्स में स्पोर्ट्स लीग के प्रमुख और प्रोकबड्डी लीग के लीग कमिश्नर अनुपम गोस्वामी ने कहा, प्रत्येक पीकेएल सीजन का मैच शेड्यूल लाखों कबड्डी प्रशंसकों के लिए प्रतिस्पर्धात्मक प्रासंगिकता और जुड़ाव बनाने और उसे आगे बढ़ाने का एक बहुत ही सोच-समझकर और श्रमसाध्य प्रयास है, जो अपनी-अपनी टीमों के साथ-साथ समग्र लीग के लिए उत्साहित हैं। हमें यकीन है कि पीकेएल मैच शेड्यूल भी हमारे प्रशंसकों के जुनून और उम्मीदों को जगाएगा और हमारी बारह टीमों को पीकेएल के लिए उनकी संबंधित रणनीतियों और योजनाओं के लिए मार्गदर्शन भी देगा। प्रो कबड्डी लीग सीजन 11 की नीलामी 15-16 अगस्त, 2024 को मुंबई में हुई थी, जिसमें लीग के इतिहास में एक नया रिकॉर्ड बना था। इस साल आठ खिलाड़ी 1 करोड़ रुपये से अधिक में बिके।

श्रीलंका ने तीसरे टेस्ट मैच में इंग्लैंड को 8 विकेट से हराया

ओवल, 9 सितंबर। पथुम निसंका (नाबाद 127) की शतकीय और उनकी एंजोल मैथ्यू (नाबाद 33) के साथ तीसरे विकेट के लिये करीब 111 रनों की अवजित साझेदारी के दम पर श्रीलंका ने तीसरे टेस्ट मैच के चाथे दिन सोमवार को इंग्लैंड को आठ विकेट से हरा दिया है।

श्रीलंका को जीत के लिए 219 रनों के लक्ष्य मिला था। श्रीलंका ने कल के एक विकेट पर 94 के स्कोर से आगे खेलना शुरु किया 20वें ओवर में गस ऐटकिंसन ने कुल मेंडिस (39) को आउट कर पवेलियन भेज दिया। इसके बाद पथुम निसंका ने एंजोल मैथ्यूज ने शानदार खेल का मुजाहिरा करते हुए श्रीलंका को आठ विकेट से जीत दिला दी। इससे पहले तीसरे दिन पथुम निसंका और डी करुणारत्ने ने संभल शुरुआत की लेकिन अभी टीम का स्कोर 39 रन पहुंचा था कि क्रिस वोक्स ने कुरणारत्ने को अपनी ही गेंद पर कैच आउट कर पवेलियन भेज दिया।

तीसरे दिन का खेल समाप्त होने के समय श्रीलंका का स्कोर एक विकेट पर 94 रन था। कुसल मेंडिस और निसंका के बीच दूसरे विकेट के लिए 69 रनों की साझेदारी हुई। गस ऐटकिंसन ने मैच के चौथे दिन कुसल मेंडिस को बशीर के हाथों कैच आउटकरा श्रीलंका को दूसरा झटका दिया। चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करने आये एंजोल मैथ्यू ने निसंका के साथ धैर्यपूर्ण पारी खेलते हुए अपनी टीम को जीत दिला दी। निसंका ने (नाबाद 111) और एंजोल मैथ्यू (नाबाद 32) रनों की पारी खेली। इंग्लैंड की ओर से गस ऐटकिंसन और क्रिस वोक्स ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले श्रीलंकाई गेंदबाज लाहिरु कुमारा और विश्वा फर्नांडो ने शानदार गेंदबाजी का प्रदर्शन करते हुए इंग्लैंड की दूसरी पारी को 156 के स्कोर पर समेट दिया था। इंग्लैंड की दूसरी पारी में जेम्स स्मिथ ने सर्वाधिक (67) और उसके अलावा डैन लॉरेंस ने (35) रन बनाये। इंग्लैंड के सात बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक भी नहीं पहुंच सके। श्रीलंका की ओर से लाहिरु कुमार ने चार और विश्वा फर्नांडो ने तीन विकेट लिये। असिता फर्नांडो को दो विकेट मिले। मिलन रत्नायके ने एक बल्लेबाज को आउट किया।

श्रीलंका ने अपनी पहली पारी में कप्तान धनंजय डीसिल्वा (69), पथुम निसंका (64) और कामिंडु मेंडिस (64) रनों की शानदार पारियों की बदौलत 263 का स्कोर बनाया था। इंग्लैंड ने ओली पोप (154) और बेन डकेट (86) की पारियों में की मदद से 325 रन बनाए थे। इंग्लैंड को पहली पारी के आधार पर 62 रनों की बढ़त मिली थी लेकिन वह दूसरी पारी में उसमें अधिक वृद्धि नहीं कर पाया। जिसका खामियाजा उसे टेस्ट मैच में हार के साथ चुकाना पड़ा। हालांकि इस हार के बावजूद इंग्लैंड ने 2-1 से सीरीज अपने नाम कर ली है।

एशियन चैंपियंस ट्रॉफी में भारत ने जापान को 5-1 से हराया

हुलुनरबुइर, 9 सितंबर। भारत ने सोमवार को एशियन चैंपियंस ट्रॉफी 2024 टूर्नामेंट के अपने दूसरे मैच में जापान को 5-1 से हराया। यह टूर्नामेंट में भारत की लगातार दूसरी जीत है और इसी के साथ वह तालिका में छह अंक के साथ शीर्ष पर है। आज यहां मोकी हॉकी ट्रेनिंग बेस में हुये मुकाबले के पहले क्वार्टर से भारतीय टीम ने जापान को दबाव में रखा। भारतीय टीम ने आक्रमक शुरुआत करते हुए लगातार दो गोल किए। दूसरे मिनट में सुखजीत सिंह ने फील्ड गोल करके अपनी टीम का खाता खोला। वहीं, भारतीय फॉरवर्ड खिलाड़ी अभिषेक ने फील्ड गोल करके स्कोर 2-0 कर दिया। इसके बाद जापानी खिलाड़ियों ने लगातार दो पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए, लेकिन वह एक भी गोल करने में सफल नहीं हुए। पहले क्वार्टर में 2-0 की बढ़त के साथ हरमनप्रीत सिंह की अगुवाई वाली भारतीय टीम ने आक्रामक शुरुआत को जारी रखा और 17वें मिनट में संजय ने पेनल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील कर दिया। शुरुआती झटकों के बाद जापान ने आक्रमक प्रदर्शन किया भारतीय रक्षापंक्ति ने जापानी खिलाड़ियों की कोशिशों को विफल कर दिया। पहले हाफ की समाप्ति तक भारत की बढ़त 3-0 थी। तीसरे क्वार्टर में जापान के खिलाड़ी ने लगातार आक्रामक खेल जारी रखा और 41वें मिनट में उन्हें सफलता मिली। जब कज़ुमासा मात्सुमोतो ने जापान के लिए मैदानी गोलकर स्कोर 3-1 कर दिया। चौथे क्वार्टर की शुरुआत आक्रमकता के साथ हुई और इस क्वार्टर में भारत ने दो गोल किए। मैच खत्म होने से 6 मिनट पहले भारतीय हॉकी टीम ने अपना चौथा गोल किया। उत्तम सिंह ने 54वें मिनट में मैदानी गोल दागा। भारत की ओर से सुखजीत सिंह (दूसरे, 60वें मिनट में), अभिषेक (तीसरे मिनट में), संजय (17वें मिनट में) और उत्तम सिंह (54वें मिनट में) ने गोल किए। वहीं जापान की ओर से कज़ुमासा मात्सुमोतो (41वें मिनट में) ने एकमात्र गोल किया। मैच के बाद अभिषेक ने कहा, आज यह एक संपूर्ण टीम प्रयास था और हम बुनियादी बातों पर कायम रहे। हमने अच्छा अटैक किया और सुनिश्चित किया कि हम लक्ष्य पर हैं। मैं हीरो ऑफ द मैच पुरस्कार से सम्मानित होने पर भी बहुत खुश हूं। इससे पहले दिन में हुए एक दक्षिण कोरिया बनाम पाकिस्तान मुकाबला 2-2 से ड्रॉ रहा। भारतीय पुरुष हॉकी टीम बुधवार को मलेशिया से भिड़ेगी।

दक्षिण अफ्रीका ने अफगानिस्तान और आयरलैंड के साथ होने वाली सीरीज के लिए टीम की घोषणा की

केपटाउन, 9 सितंबर। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की मेजबानी में दक्षिण अफ्रीका ने अफगानिस्तान और आयरलैंड के साथ होने वाली एकदिवसीय और टी-20 श्रृंखला के लिए टीम की घोषणा की है। दक्षिण अफ्रीका के सफेद गेंद के प्रमुख कोच रॉब वाल्टर ने टीम की घोषणा करते हुए कहा कि ऑलराउंडर एंडिले सिमेलेने को पहली बार टीम में शामिल किया गया है इसके अलावा, टी-20 खेल चुके ऑलराउंडर जेसन स्मिथ और स्पिनर नकबा पीटर एकदिवसीय टीम में पर्दापण करेंगे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की रिपोर्ट के अनुसार तेम्बा बावुमा अफगानिस्तान और आयरलैंड दोनों सीरीज के लिए एकदिवसीय टीम की कप्तानी करेंगे, जबकि एडेन मारक्रम टी-20 टीम की अगुआई करेंगे। अफगानिस्तान के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका की एकदिवसीय टीम: तेम्बा बावुमा (कप्तान), ओटनील बार्टमैन, नंद्रे बर्गर, टोनी डी जोर्जी, ब्योर्न फोर्टुइन, रीजा हेंड्रिक्स, एडेन मारक्रम, वियान मुल्डर, लुंगी एन्गिडी, एंडाइल लकी फेहलुकवेओ, नकाबा पीटर, एंडिले सिमेलेने, जेसन स्मिथ, ट्रिस्टन स्टब्स, काइल वेरिन और लिजाद विलियम्स। आयरलैंड के साथ होने वाले टी-20 मुकाबले के लिए दक्षिण अफ्रीका की टीम: एडेन मारक्रम (कप्तान), ओटनील बार्टमैन, मैथ्यू ब्रीट्जके, नांद्रे बर्गर, ब्योर्न फोर्टुइन, रीजा हेंड्रिक्स, पैट्रिक क्रूगर, वियान मुल्डर, लुंगी एनगिडी, नकाबा पीटर, रयान रिकेलटन, एंडिले सिमेलेन, जेसन स्मिथ, ट्रिस्टन स्टब्स और लिजाद विलियम्स। आयरलैंड के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका एकिदवसीय टीम में तेम्बा बावुमा (कप्तान), ओटनील बार्टमैन, नंद्रे बर्गर, टोनी डी जोर्जी, ब्योर्न फोर्टुइन, वियान मुल्डर, लुंगी एनगिडी, एंडाइल लकी फेहलुकवेओ, नकाबा पीटर, रयान रिकेलटन, जेसन स्मिथ, ट्रिस्टन स्टब्स, रासी वैन डेर डुसेन, काइल वेरिन और लिजाद विलियम्स शामिल हैं।

जैनिक सिनर ने टेलर फ्रिट्ज को हराकर जीता यूएस ओपन का खिताब

न्यूयॉर्क, 9 सितंबर। इटली के स्टार टेनिस खिलाड़ी जैनिक सिनर ने अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज को हराकर यूएस ओपन पुरुष एकल का खिताब अपने नाम कर लिया है। रविवार रात दो घंटे 16 मिनट तक चले मुकाबले में दुनिया के नंबर वन टेनिस खिलाड़ी जैनिक सिनर ने अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज को लगातार तीन सेटों में 6-3, 6-4, 7-5 से हराकर यह खिताब जीता। इसी के साथ वह यूएस ओपन जीतने वाले इटली के पहले पुरुष खिलाड़ी बने हैं। वर्ष 2015 में इटली की फ्लाविया पैनेटा ने महिला एकल का खिताब जीता था। सिनर के कारियर का यह दूसरा ग्रैंड स्लैम खिताब है। उन्होंने इस वर्ष की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया ओपन भी जीता था। जीत के बाद सिनर ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, शुक्रिया न्यूयॉर्क, दो सप्ताह के शानदार प्रदर्शन के बाद यहां अपना दूसरा ग्रैंड स्लैम जीतना विशेष रहा। समर्थन के लिए आप सभी का धन्यवाद।

पेरिस पैरालिंपिक 2024 : हरविंदर सिंह-प्रीतिपाल रहे भारत के ध्वजवाहक

बेहत रोमांचक रही पैरालंपिक की क्लोजिंग सेरेमनी

नई दिल्ली, 9 सितंबर। पेरिस पैरालंपिक 2024 अब समाप्त हो चुका है। भारत ने इस पैरालंपिक में कुल 29 मेडल जीते। भारत ने 7 गोल्ड, 9 सिल्वर और 13 ब्रॉन्ज अपने नाम किए हैं। इससे पहले किसी भी पैरालंपिक में भारत ने इतने मेडल नहीं जीते। भारत ने पहली बार पैरालंपिक में इतने मेडल जीते हैं। वहीं पेरिस पैरालंपिक 2024 की क्लोजिंग सेरेमनी में भारत के ध्वजवाहक हरविंदर सिंह और प्रीति पाल रहे।

पेरिस पैरालंपिक 2024 क्लोजिंग सेरेमनी की आधिकारिक तौर पर शुरुआत फ्रेंच सिंगर सैंटा के साथ हुई। उन्होंने शानदार अंदाज में सेरेमनी का आगाज किया। पेरिस पैरालंपिक की क्लोजिंग सेरेमनी का नाम पेरिस इज ए पार्टी रखा गया था। भारत के लिए हरविंदर सिंह और प्रीति पाल क्लोजिंग सेरेमनी में ध्वजवाहक बने।

हरविंदर सिंह ने तीरंदाजी में गोल्ड मेडल जीता था। वहीं प्रीति ने महिलाओं की 100 और 200 मीटर रेस में दो ब्रॉन्ज मेडल जीते। वहीं फ्रांस के राष्ट्रपति इम्मेनुएल मैक्रों भी पेरिस पैरालंपिक 2024 की क्लोजिंग सेरेमनी का हिस्सा बने। बता दें कि, अब 4 साल बाद अमेरिका पैरालंपिक की मेजबानी करेगा। लॉस एंजिलिस में पैरालंपिक खेलों का आयोजन किया जाएगा। ऐसे में पेरिस पैरालंपिक में क्लोजिंग समारोह में हेंडओवर करने के लिए अमेरिका का नेशनल एंथम भी बजाया गया।

कप्तानों को जल्दबाजी में बर्खास्त न करें : गिलेस्पी

कराची, 9 सितंबर। पाकिस्तान के सीमित ओवरों और टेस्ट टीम के मुख्य कोच गैरी कर्स्टन और जेसन गिलेस्पी ने देश के क्रिकेट बोर्ड को सभी प्रारूपों में हालिया खराब प्रदर्शन के बाद जल्दबाजी में कप्तान नहीं बदलने की सलाह दी है। भारत में 2023 में खेले गए एकदिवसीय विश्व कप के राउंड रॉबिन दौर से बाहर होने के बाद बाबर आजम को सीमित ओवरों की कप्तानी से बर्खास्त कर दिया गया था। उनकी जगह लेने वाले शाहीन शाह अफरीदी को एक खराब श्रृंखला के बाद हटा दिया गया था। इसी तरह टेस्ट में बाबर के इस्तीफा देने के बाद, शान मसूद को कप्तान बनाया गया था, लेकिन बांग्लादेश से टेस्ट श्रृंखला में 0-2 से हार के बाद उन्हें तुरंत बाहर करने की मांग उठ रही है। पीसीबी के एक सूत्र ने हालांकि 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि मसूद और बाबर की बर्खास्तगी के बारे में हालिया मीडिया अटकलें कयास से ज्यादा कुछ नहीं हैं। उन्होंने कहा, "कप्तानों को बदलने पर कोई चर्चा नहीं हुई है क्योंकि पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने यह फैसला दोनों कोच और चयनकर्ताओं पर छोड़ दिया है।" सूत्र ने कहा, "कर्स्टन और गिलेस्पी बहुत स्पष्ट है कि शान और बाबर दोनों को उनकी नेतृत्व क्षमता का आकलन करने से पहले उचित समय दिए जाने की जरूरत है।"

आईएएस डॉ. नीरज के. पवन ने संभाला खेल सचिव तथा राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के अध्यक्ष का पदभार

जयपुर, 9 सितम्बर। सोमवार को आईएएस डा. नीरज के. पवन ने शासन सचिव, युवा मामले एवं खेल विभाग, राजस्थान सरकार तथा अध्यक्ष, राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद का पदभार सम्भाल लिया है। सवाई मान सिंह स्टेडियम आने पर सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने समस्त अधिकारियों से परिचय प्राप्त करने के साथ ही राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा संचालित विभिन्न कार्यों की जानकारी ली। इस अवसर पर डा. नीरज के. पवन ने कहा कि युवा मामले एवं खेल विभाग की कुल 28 बजट घोषणायें है। इन घोषणओ की क्रियान्विति माननीय मुख्यमंत्री जी की मंशानुसार तय समय पर पूरी की जायेगी। खिलाड़ियों के लिये प्रशिक्षकों के लिए अच्छी व्यवस्था की जायेगी, जिससे ज़्यादा से ज़्यादा पदक जीत सके। उन्होंने कहा कि हम एक टीम के रूप में कार्य करते हुए खेलों का विकास करने के साथ साथ राजस्थान के खेलों को बुलन्दी पर लेकर जायेंगे। हमारे खेलमंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ स्वयं बहुत ख्यातिनाम खिलाड़ी रहे है। उनके नेतृत्व व मार्गदर्शन में हम प्रदेशभर में खेलों का माहौल बनाकर भविष्य के लिए पदक विजेता खिलाड़ी तैयार करेंगे। डा. नीरज के. पवन ने कहा कि राज्य सरकार की स्पष्ट मंशा है कि जितने भी निर्माण कार्य चल रहे है, वे जल्दी से जल्दी पूरे हो, जिससे प्रदेश के खिलाड़ियों को इसका लाभ मिल सके। उन्होंने बैठक के बाद सवाई मान सिंह स्टेडियम के मुख्य क्रिकेट मैदान, निर्माणाधीन खेल भवन, क्रिकेट एरिना, बैडमिंटन हॉल तथा रीहेब सेंटर का दौरा किया।

पंत टेस्ट में सर्वकालिक महान खिलाड़ी बनने की राह पर, छोटे प्रारूपों में सुधार की जरूरत : गांगुली

कोलकाता, 9 सितंबर। भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली का मानना है कि ऋषभ पंत टेस्ट क्रिकेट में सर्वकालिक महान खिलाड़ी बनने की राह पर है, लेकिन साथ ही उन्हें छोटे प्रारूपों में अपने प्रदर्शन में सुधार करने की जरूरत है। दिसंबर 2022 में कार दुर्घटना में चोटिल होने के बाद पंत को रविवार को पहली बार भारतीय टेस्ट टीम में शामिल किया गया है और पूरी उम्मीद है कि बांग्लादेश के खिलाफ 19 सितंबर से चेन्नई में शुरू होने वाले पहले टेस्ट मैच के लिए उन्हें अंतिम एकादश में शामिल किया जाएगा। पंत ने इस साल के शुरू में सीमित ओवरों के प्रारूप में वापसी की थी और इनमें अच्छा प्रदर्शन किया था। गांगुली ने यहां एक प्रचार कार्यक्रम के दौरान कहा, "मैं ऋषभ पंत को भारत के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट बल्लेबाजों में से एक मानता हूं। उनकी टेस्ट क्रिकेट में वापसी से मैं हैरान नहीं हूं। वह भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में खेलते रहेंगे।" उन्होंने कहा, "अगर वह इसी तरह प्रदर्शन करता रहा तो टेस्ट क्रिकेट के सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में शामिल हो जाएगा। मेरा मानना है कि उसे छोटे प्रारूपों में बेहतर प्रदर्शन करने की जरूरत है। वह प्रतिभाशाली है और मुझे यकीन है कि वह जल्द ही ऐसा करने में सफल रहेगा।" मोहम्मद शमी को टखने के ऑपरेशन के कारण टीम में शामिल नहीं किया गया लेकिन गांगुली को विश्वास है कि यह तेज गेंदबाज इस साल के आखिर में होने वाले ऑस्ट्रेलियाई दौरे से पहले पूरी तरह फिट हो जाएगा। उन्होंने कहा, "मैं जानता हूं कि मोहम्मद शमी चोटिल होने के कारण टीम में शामिल नहीं है लेकिन वह जल्द ही वापसी करेगा क्योंकि भारत को ऑस्ट्रेलिया का दौरा करना है। भारत का आक्रमण अभी बहुत अच्छा है।

भारत के पिछले दो टेस्ट दौरों में ऑस्ट्रेलिया को उसकी मांद में हराने से प्रतिद्वंद्विता बढ़ी : ख्वाजा

नयी दिल्ली, 9 सितंबर। आस्ट्रेलिया के सीनियर बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा को लगता है कि भारत ने पिछली दो टेस्ट श्रृंखलाओं में उनकी टीम को उसकी मांद में हराकर दोनों टीमों के बीच प्रतिद्वंद्विता बढ़ा दी है। दोनों टीमें 22 नवंबर से शुरू होने वाली पांच मैचों की श्रृंखला में आमने सामने होंगी। भारत ने ऑस्ट्रेलिया को उसके पिछले दो दौरों (2018-19 और 2020-21) में 2-1 के समान अंतर से हराया था। बल्कि भारत ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी की पिछली सभी चार श्रृंखलायें जीती हैं जिसमें 2016-17 और 2022-23 में अपनी सरजमीं पर मिली जीत भी शामिल हैं जिसमें भी नतीजा 2-1 का रहा था।

ख्वाजा ने कहा, "भारतीयों के लिए हमेशा ऑस्ट्रेलिया को हराना अहम रहा है। और हाल में भारत और आईपीएल के उदय के बाद से ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच भी प्रतिद्वंद्विता बढ़ी है।" उन्होंने 'स्टार स्पोर्ट्स' से कहा, "और विशेषकर तब जब भारत ने पिछली दो बार ऑस्ट्रेलिया को उसके ही मैदानों पर बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में हराया है।" बाएं हाथ के इस 37 वर्षीय सलामी बल्लेबाज ने कहा कि दोनों टीमों के बीच प्रतिद्वंद्विता बहुत बढ़ गई है। 2011 में पदार्पण करने के बाद 71 टेस्ट मैचों में 5451 रन बनाने वाले ख्वाजा ने कहा, "हम पिछले दो साल से दुनिया की नंबर एक और दुनिया की नंबर दो टीमें हैं। हम पिछली विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में खेले थे। प्रतिद्वंद्विता हमेशा बहुत बड़ी रही है।" उन्होंने कहा, "मैं इसे सम्मान के संकेत के रूप में लेता हूं और मुझे पता है कि भारतीयों को क्रिकेट के किसी भी प्रारूप में ऑस्ट्रेलिया को हराना पसंद है। और इतने सालों से ऑस्ट्रेलिया की जो परंपरा रही है कि वह विश्व क्रिकेट में सबसे प्रभावशाली टीमों में से एक है, उसने उस प्रतिष्ठा को दांव पर लगा दिया है।"

दोनों टीमों के बीच पहला टेस्ट 22 नवंबर से पर्थ में शुरू होगा जबकि पांचवां और आखिरी टेस्ट तीन जनवरी से सिडनी में खेला जाएगा। एक अन्य वरिष्ठ खिलाड़ी मिशेल मार्श ने भारतीय खिलाड़ियों के साथ दोस्ती के साथ कड़ी प्रतिद्वंद्विता के बारे में बात की।

उन्होंने कहा, "अगर आप हाल के इतिहास को देखें, तो हमने कुछ जीता है, उन्होंने कुछ जीता है। और मुझे लगता है कि जब यह इस तरह आगे-पीछे होता है तो आपके अंदर प्रतिद्वंद्विता बढ़ती है। भारतीय टीम और हमारी टीम में बहुत अच्छी दोस्ती है इसलिए कोई नफरत नहीं है। लेकिन यह मैदान पर एक शानदार प्रतिद्वंद्विता है, दोनों टीमें जीतना चाहती हैं।" तेज गेंदबाज जोश हेज़लवुड ने स्वीकार किया कि भारत के खिलाफ खेलना हमेशा एक बड़ी चुनौती होती है क्योंकि वे ऑस्ट्रेलिया की परिस्थितियों में खेलने के आदी हो चुके हैं। उन्होंने कहा, "उनका शीर्ष क्रम शानदार है, चाहे कोई भी खेल रहा हो। उनके शीर्ष क्रम के छह या सात खिलाड़ी शानदार हैं। मैं अपनी पहली श्रृंखला में उनके साथ खेला था। हमने जीत हासिल की थी। बहुत से वही खिलाड़ी अब भी खेल रहे हैं, मुझे लगता है कि मैंने उस मैच में विराट कोहली का विकेट लिया था।

तीन दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ

शिमला, 9 सितंबर। शिमला खंड दो की चौथी वार्षिक अंडर-19 खंड स्तरीय तीन दिवसीय खेल कूद प्रतियोगिता का शुभारंभ रविवार को राजकीय उच्च पाठशाला मूलबरी (देवनगर) में किया गया। इस मौके पर लोक निर्माण एवं शहरी विकास मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके बाद तीन दिवसीय खेल कूद प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे 15 स्कूलों के खिलाड़ियों ने मार्च पास्ट किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि विद्यार्थियों को खेलों को प्रोफेशन के तौर लेना चाहिए। इसके लिए बचपन से ही खेलों के प्रति बच्चों का जागरूक करें और उन्हें खेल गतिविधियों में शामिल करने का प्रयास करें। खेलों से टीम भावना विकसित होती है। उन्होंने खिलाड़ियों से आ ान किया कि खेलों में अपने साथी खिलाड़ी की चिंता पहले करनी होती है। इसी तरह समाज में दूसरे व्यक्ति की मदद करने के लिए प्रयास करना जरूरी होता है, तभी प्रदेश-देश के विकास में सामूहिकता की भावना विकसित होगी। उन्होंने कहा कि आज युवा पीढ़ी नशे की आगोश में जा रही है। ऐसे में खेलों के साथ जुड़े युवा नशे से दूर रहते हैं। खेल जीवन में अनुशासन सिखाता है। उन्होंने सभी खिलाड़ियों को खेल भावना के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम के दौरान स्कूली छात्र-छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी पेश किए। मुख्य अतिथि ने 21 हजार रुपए सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली छात्राओं को देने और खो-खो मैट उपलब्ध करवाने की घोषणा की। राजकीय उच्च विद्यालय बनुटी देवी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बायचढ़ी, एस. बी. एस. एम. पब्लिक स्कूल घणाहट्टी, राजकीय माध्यमिक पाठशाला घणाहट्टी, राजकीय माध्यमिक स्कूल हलोग धामी, राजकीय माध्यमिक पाठशाला खलग, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोटगेहा, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय क्याना, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कोह गांव, राजकीय उच्च विद्यालय नेहरा, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रामपुरी क्योंथल, राजकीय माध्यमिक विद्यालय शकराह, राजकीय उच्च विद्यालय मूलबरी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पाहल और राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ओखरू के टीमें हिस्सा ले रही हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने बंगाल के जूनियर डॉक्टर्स को अल्टीमेटम दिया

सुप्रीम कोर्ट ने कहा, मंगलवार शाम 5 बजे तक काम पर लौटें वरना राज्य सरकार दंडात्मक कार्यवाही करने के लिए स्वतंत्र है

- सुप्रीम कोर्ट में पश्चिम बंगाल सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने कहा, जूनियर डॉक्टर्स ''हैल्थ केयर सिस्टम की बैक बोन'' हैं। इनके काम पर नहीं आने से अनेकों लोगों को इलाज नहीं मिल रहा और 23 लोग मर चुके हैं।
- सुप्रीम कोर्ट ने जूनियर डॉक्टर्स को काम पर लौटने का निर्देश देते हुए जिला कलैक्टर व पुलिस अधीक्षक को डॉक्टर्स की सुरक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।
- सुप्रीम कोर्ट ने सी.बी.आई. द्वारा प्रस्तुत स्टेटस रिपोर्ट को पढ़ा और उसमें दर्ज सबूत के आधार पर 16 सितम्बर को नई स्टेटस रिपोर्ट देने को कहा। मामले की सुनवाई 17 सितम्बर को होगी।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को पश्चिम बंगाल के सरकारी अस्पतालों और सम्बंधित मैडिकल कॉलेजो के जूनियर डॉक्टर्स को दो दिन अर्थात मंगलवार शाम पांच बजे तक का टाइम दिया है और कहा है कि इसके बाद राज्य सरकार ड्यूटी पर नहीं आने वाले डॉक्टर्स के खिलाफ कार्यवाही के लिए स्वतंत्र होगी।

चीफ जस्टिस डी.वाय. चंद्रचूड की अध्यक्षता वाली बैंच जिसमें जस्टिस जे.बी. पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा शामिल थे, ने कहा कि अगर हड़ताली डॉक्टर 10 सितम्बर की शाम 5 बजे तक या उससे पहले काम पर लौटते हैं तो उनके खिलाफ कोई अनुशासनात्मक कार्यवाही नहीं की जाएगी। अगर डॉक्टर्स काम पर नहीं लौटते हैं तो हम राज्य सरकार को उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही करने से नहीं रोक सकते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने डॉक्टर्स को याद दिलाया कि वे चिकित्सा के क्षेत्र में हैं उनका काम लोगों की सेवा करना है। बैंच ने कहा कि काम पर लौटने वाले डॉक्टर्स के खिलाफ कोई दंडात्मक कार्यवाही नहीं होगी जिसमें ट्रांसफर करना भी शामिल है।

पश्चिम बंगाल सरकार की तरफ से कपिल सिब्बल कोर्ट में पेश हुए थे उन्होंने बताया कि जूनियर डॉक्टर्स, जो स्वास्थ्य सेवा की बैक बोन हैं, के काम पर नहीं लौटने से जनता को भारी परेशानी हो रही है। जूनियर डॉक्टर्स 28 दिन से हड़ताल पर हैं। लाखों लोगों को इलाज नहीं मिल पा रहा है इसलिए 23 लोग मारे जा चुके हैं।

कोर्ट ने कहा कि राज्य सरकार को डॉक्टर्स का भरोसा बढ़ाने के कदम उठाने चाहिए और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए। राज्य पुलिस सभी डॉक्टर्स की सुरक्षा सुनिश्चित करे। कोर्ट ने कहा, ''सरकारी मैडिकल कॉलेजों में डॉक्टर्स की सुरक्षा सुनिश्चित करने के आवश्यक उपाय करे। महिला व पुरुष डॉक्टर्स के पृथक रैस्ट रुम व शौचालय बनाए जाएं, सी.सी.टी.वी. कैमरा लगाए जाएं। राज्य पुलिस ने अपने शपथ पत्र में कहा कि राज्य सरकार ने अतिरिक्त सी.सी.टी.वी. कैमरा लगाने के लिए फंड जारी कर दिया है।

कोर्ट ने सी.बी.आई. की स्टेट्स रिपोर्ट को देखने के बाद कहा कि सी.बी.आई. को मामले में कुछ सबूत मिले हैं। कोर्ट ने 16 सितम्बर तक एक और स्टेटस रिपोर्ट देने को कहा। अगली सुनवाई 17 सितम्बर को होगी।

कोर्ट ने कहा, एक बात तो साफ है कि रेप- मर्डर की घटना में कोलकाता पुलिस ने एफ.आई.आर. दर्ज करने में 14 घंटे की देरी की। दो बातें सर्वज्ञात हैं एक तो यह कि पीड़िता सैमीनार हॉल में आराम करने कब गई थी और दूसरी बात है कि उसके बाद उस कमरे के आसपास की सक्रियता।

सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि सभी सोशल मीडिया व इलैक्ट्रॉनिक मीडिया से पीड़िता की फोटो तुरंत हटा दी जो पीड़िता की निजता व गरिमा की सुरक्षा की जानी चाहिए।

देश के सबसे ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लीज़ पर दी गई थी। रेस क्लब के एक कर्मचारी ने कहा, प्रशासन की इस प्रक्रिया के कारण करीब 500 घोड़े अस्तबलों में बंद हैं। उन्हें तुरंत ही भोजन, चारा और मैडिकल सुविधा की आवश्यकता है। प्रिंसिपल सैक्रेटरी, रैवेन्यु एण्ड डिज़ास्टर मैनेजमैंट डिपार्टमैंट, पी. अनुदा ने शुक्रवार 6 सितंबर को आदेश जारी किया था कि ''जिला कलैक्टर की रिपोर्ट पर सावधानी से विचार करने के बाद तथा सार्वजनिक उद्देश्य के लिए भूमि की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सरकार ने मद्रास रेस क्लब को दी गई लीज़ समाप्त करने तथा पूरी जमीन को वापस लेने का निर्णय लिया है।'' चेन्नई कलैक्टर से तुरंत ही निर्दिष्ट जमीन का कब्जा लेने के लिए कहा गया। आदेश में कहा गया कि लीज़धारक, मद्रास रेस क्लब, 14 दिन के अंदर जमीन पर मौजूद अपनी अचल संपत्ति वहाँ से हटाने के लिए जिला कलैक्टर को आवेदन कर सकता है।

'लोकसभा चुनाव के बाद ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अन्य लोगों ने किया। युनिवर्सिटी ऑफ टैक्सस में भारतीय समुदाय के लोगों को संबोधित करते हुए कई विषयों पर वार्ता की।

छात्रों ने राहुल से पूछा, भारत में महिला श्रमिकों की सहभागिता बहुत कम है इस पर राहुल ने कहा कि भारतीय पुरुषों का नजरिया औरतों के प्रति काफी बुरा और हास्यास्पद है, इस सोच को बदलने की जरुरत है। गांधी ने कहा महिलाओं के प्रति यह नजरिया भाजपा और विपक्ष के बीच वैचारिक ''भाजपा/आर.एस.एस. को लगता है कि महिलाओं को घर पर रहकर खाना बनाना चाहिए। उन्हें ज्यादा बोलना नहीं चाहिए।''

गांधी ने बेरोजगारी पर भी बोला। उन्होंने कहा कि पश्चिम में बेरोजगारी की समस्या है और भारत में भी है पर कई देशों में ऐसा नहीं है। चीन में बेरोजगारी की समस्या है, पर ताईवान में नहीं है।

इसका कारण है अगर आप 40,50 और 60 के दशक के अमेरिका को देखे तो यह वैश्विक उत्पादन का केन्द्र था। सब कुछ यहीं बनता था। उत्पादन अमेरिका से कोरिया और जापान गया। बाद में यह चीन चला गया आप अगर आज देखें तो अन्तर्राष्ट्रीय उत्पादन पर चीन का कब्जा है।

पश्चिमी देशों, अमेरिका, यूरोप, भारत सभी ने उत्पादन त्याग कर चीन को सौंप दिया। उत्पादन से ही रोजगार पैदा होता है।

गांधी की टिप्पणियों पर भाजपा ने तीखी प्रतिक्रिया दी। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कहा कि राहुल पूरी तरह से चीन का समर्थन कर रहे हैं।

भंडारी ने कहा क्या उनका चीन की कम्युनिस्ट पार्टी से एम.ओ.यू. है जो वे हमेशा चीन की तारीफ करते हैं, भारत के लिए नहीं बोलते। ''उन्होंने भारत के लीगल सिस्टम की बुराई की जबकि इसी वजह से वे जमानत पर बाहर हैं। वे सामाजिक तनाव की बात करते हैं क्योंकि उनकी यही नीति है ''फूट डालो राज करो।''

भंडारी ने कहा, ''सैम पित्रोदा कहते हैं अब राहुल पप्पू नहीं रहे, हां अब वे बहुत शातिर हो गए हैं। उनके बयानों में भारत के खिलाफ बोला जाने वाला झूठ दिखता है वे समाज को बांटना चाहते हैं, वे चीन के समर्थक हैं। वे हिंदू भगवानों का अपमान करते हैं।''

उन्होंने कहा राहुल के भाषण का सार यह है कि यह भारत विरोधी है भारत की महिलाओं का विरोधी है। इसीलिए भारत की जनता ने 2014, 2019 और 2024 में कांग्रेस को ठुकरा कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को चुना है।

मेयर मुनेश गुर्जर का चालान दो...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

को बताया कि गत 6 सितंबर को मेयर मुनेश गुर्जर के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति जारी कर दी गई है। वहीं याचिकाकर्ता के अधिवक्ता अनुराग शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार ने चार महीने से मामले में कोई भी कार्रवाई नहीं की है। जिस पर अदालत ने कहा कि दो सप्ताह का समय इसलिए ही दिया जा रहा है कि मामले में चालान पेश किया जा सके। इसके साथ ही अदालत ने स्वायत्त शासन विभाग के निदेशक को व्यक्तिगत तौर पर पेशी से भी छूट दे दी।

पिछली सुनवाई पर अदालत ने कहा था कि जब मुनेश के खिलाफ जुर्म प्रमाणित मान लिया गया है तो अभियोजन स्वीकृति पर निर्णय क्यों नहीं किया गया। याचिका में कहा गया है कि पीसी एक्ट की धारा 19 के तहत यह प्रावधान है कि अभियोजन मंजूरी से जुड़े मामलों में तीन माह में निर्णय किया जाएगा और यदि इसमें कानूनी राय लेनी तो एक माह का अतिरिक्त समय लिया जा सकता है। इसके बावजूद चार माह बीतने के बाद भी अब तक मुनेश की अभियोजन स्वीकृति पर कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। गौरतलब है कि मुनेश के पति सुशील गुर्जर की ओर से नगर निगम के पट्टे जारी करने की एवज में रिश्वत मांगने से जुडे मामले में ए.सी.बी. ने सुशील गुर्जर को गिरफ्तार किया था। वहीं मुनेश को मेयर पद से निलंबित कर दिया गया था, हालांकि बाद में हाईकोर्ट ने निलंबन रद्द कर दिया था।

नाहरगढ़ से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ने यह आदेश लापता युवक के पिता सुरेश चंद्र शर्मा की बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका पर दिए। याचिका में अधिवक्ता गिर्राज प्रसाद शर्मा ने कहा कि याचिकाकर्ता के दो बेटे राहुल और आशीष गत 1 सितंबर को नाहरगढ़ के चरण मंदिर में घूमने का कहकर निकले थे, लेकिन वापस नहीं लौटे। अगले दिन पुलिस को पहाड़ी पर आशीष का शव बरामद हुआ, जिसके सिर पर चोट लगी हुई थी, जबकि अभी तक राहुल का पता नहीं चला है। पुलिस पर आरोप लगाते हुए कहा गया कि युवकों के लापता होने के पहले दिन पुलिस ने कोई मदद नहीं की।

हरियाणा में कांग्रेस और आप की चुनावी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गठबन्धन की बात विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने चलाई थी। वे इस बात को लेकर सतर्क थे कि भाजपा को हराने के लिये खासतौर से उस हिन्दी भाषी राज्य में एक बार पुन: संगठित होना जरूरी है, जहाँ भगवा पार्टी 2014 से दबदबा बनाये हुए हैं।

लेकिन लोकसभा चुनाव में आप के खराब प्रदर्शन के कारण सीट शेयरिंग वार्ता में कांग्रेस का पलड़ा भारी था। राज्य के कई नेता, जिन्होंने चिन्ता जताई है, ने इस स्थिति को रेखांकित भी किया था।

पहलवान विनेश फोगाट तथा बजरंग पूनिया के कांग्रेस में शामिल होने से कांग्रेस की स्थिति मजबूत भी हुई है। ज्ञातव्य है कि ये दोनों ही पहलवान यौन-शोषण के आरोपी कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरणसिंह के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे थे। फोगाट कांग्रेस के टिकट पर जुलाना सीट से चुनाव लड़ेंगी।

इसके अलावा, आप कार्यकर्ता और नेताओं के अन्दरूनी रूप से असन्तुष्ट होने की चर्चाएं भी हैं। मालवीय नगर से तीन बार विधायक रहे सोमनाथ भारती ने कहा कि कांग्रेस-आप गठबन्धन राष्ट्रीय राजधानी में लोकसभा चुनावों में ही असफल हो गया था। भारती ने कहा कि आप को हरियाणा में वैसे ही गठबन्धन की ''प्रभावोत्पादकता'' का आकलन करना ही चाहिए। भारती ने कहा कि प्रचार के दौरान कांग्रेस की ओर से सहयोग की कमी रही थी।

आप की पहली सूची में 20 उम्मीदवार हैं। इस सूची की घोषणा से कांग्रेस के साथ समझौता वार्ता की समाप्ति के संकेत मिल गए हैं।

इस सूची में वरिष्ठ नेता शामिल हैं, जैसे अनुराग ढांडा, जो कैथल जिले की कालायत सीट से लड़ेंगे, तथा कुलदीप गदराना, जो डबवाली सीट पर जननायक जनता पार्टी (जे.जे.पी.) के दिग्विजय चौटाला, कांग्रेस के अमित सिहाग तथा ''इंडियन नैशनल लोक दल के आदित्य देवीलाल का सामना करेंगे। आप को 2024 के लोकसभा चुनावों में सबसे बड़ी, 14,437 वोटों की लीड कालायत विधानसभा क्षेत्र में ही मिली थी।

आप ने ऐसी सीटों पर भी अपने प्रत्याशी खड़े कर दिए हैं, जो सीटें इस समय कांग्रेस विधायकों के पास हैं। ये सीटें हैं-नारायणगढ़, आसन्ध, समालखा, रोहतक, बहादुरगढ़, बादली, बेरी, महेन्द्रगढ़ तथा डबवाली। पार्टी ने अभी तक पेहोवा, शाहबाद (एस.सी.) तथा गुहला (एस.सी.) सीटों के लिए अपने उम्मीदवार घोषित नहीं किए हैं, जहाँ उसे लोकसभा चुनावों में लीड मिली थी।

उचाना कलाँ सीट पर पवन फौजी को खड़ा किया गया है, जिनका मुकाबला जे.जे.पी. के दुष्यन्त चौटाला तथा कांग्रेस के बृजेन्द्र सिंह से होगा। सोहना तथा बल्लभगढ़ सीट से क्रमश: धमेन्द्र खटाणा एवं रवीन्द्र फौजदार को टिकट दिया गया है। हरियाणा विधानसभा चुनाव पहले 1 अक्टूबर को होना था, लेकिन बिश्नोई समुदाय के ज्ञापन के बाद, इसे आगे खिसका दिया था क्योंकि पूर्व तिथि के अगले दिन बिश्नोई समाज का बड़ा एवं प्राचीन त्योहार है।

चुनाव की संशोधित तिथि 5 अक्टूबर है तथा मतगणना 8 अक्टूबर को होगी।

'डॉक्टर हड़ताल की मन:स्थिति ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गया था। इस घटना ने मुख्यमंत्री के आव्हान को घृणा से खारिज करने के लिए लोगों को उकसाया है तथा आन्दोलनकारी जूनियर डॉक्टरों ने सर्वोच्च न्यायालय के उन आदेशों की अवज्ञा कर दी है, जिनमें जूनियर डॉक्टरों से काम पर लौटने का आव्हान किया गया था। आन्दोलनकारी डॉक्टरों ने मुख्यमंत्री के उपदेशों के खिलाफ अपने आन्दोलन को जारी रखने का पक्का इरादा कर लिया है।

इस बीच, मुख्यमंत्री पद से ममता बनर्जी को हटाकर, इस पद पर किसी अन्य व्यक्ति को लाने की माँग उठ रही है तथा तृणमूल कांग्रेस के कुछ ग्रुप भी शीर्ष पर बदलाव के लिये कह रहे हैं।

राज्य सरकार ने कहा है कि जूनियर डॉक्टरों के आंदोलन के फलस्वरूप अब तक 23 लोगों की मृत्यु हो चुकी है। आंदोलनकारी डॉक्टरों ने सरकार के इस दावे का खंडन करते हुए कहा है कि अधिकारी झूठे आँकड़े प्रस्तुत कर रहे हैं।

डॉक्टरों ने कहा है कि यह आंदोलन लोगों की बड़ी संख्या तक तथा बहुत बड़े रूप में फैलेगा। उन्होंने लोगों से आग्रह किया है कि वे सड़कों पर आएं तथा विरोध-प्रदर्शनों में शामिल हों। कुछ शिक्षक तो अब खुलकर सामने आ गए हैं तथा उन्होंने इस आन्दोलन को जारी रखने की अपील की है। उनके कॉल वायरल हो गए हैं तथा लोग मुख्यमंत्री तथा उनके आचरण की निन्दा कर रहे हैं। इस बीच, बीसियों अभिनेताओं और अभिनेत्रियों, जिन्हें राज्य सरकार से अवार्ड मिले थे, ने अपने अवार्ड लौटा दिए हैं।

पत्नी की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करता था। इसके चलते दोनों में आए दिन झगड़ा होता था। इसके चलते अभियुक्त ने सरिये से वार कर सोनिया की हत्या कर दी और अपने आप को बचाने के लिए सुपरवाइज़र के पास जाकर झूठी कहानी बताई। वहीं अभियुक्त की ओर से कहा गया कि उसने अपनी पत्नी की हत्या नहीं की है और घटना को कोई चश्मदीद गवाह भी नहीं है।

सलेक्टिव मीडिया, कोटा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी रोड, कोटा से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा आर.एन.आई. नं. 28446/75, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908